



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तस्मात्

संयुक्तांक
141-142



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

हिन्दी

भारतीय संस्कृति की आत्मा है



तरंग संयुक्तांक
141-142

(केवल विभागीय वितरण के लिए)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका

तरंग

(संयुक्तांक : 141-142)

सितम्बर, 2021-अगस्त, 2022

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

- ▶ टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- ▶ मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- ▶ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ▶ अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- ▶ अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।

सम्पादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं।

मूल्य: “वृजभाषा के प्रति निष्ठा”

आवरण पृष्ठ : भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा
लखनऊ कार्यालय का भ्रमण

अन्तिम आवरण पृष्ठ : प्रकाशमान कार्यालय का मनोरम दृश्य

तरंग परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री बी.के. मोहन्ती

प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रधान एवं कार्यकारी संपादक

श्री संजीव कुमार

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

सुश्री धनलक्ष्मी चौरसिया

वरिष्ठ उप महालेखाकार/ए.एम.जी. - V

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संपादक

श्री अंजनी कुमार चौबे

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कल्याण/हिन्दी

सह-संपादक मण्डल

श्री अजय कुमार भट्ट

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री के.एन. आर्य

कल्याण सहायक

श्री अशोक कुमार सिंह

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अम्बरीष श्रीवास्तव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री अर्चना प्रसाद

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजेश सिंह 'पंकज'

पर्यवेक्षक

सुश्री अल्का कमल

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री सुनीता देवी

कनिष्ठ अनुवादक

श्री सिद्धार्थ शंकर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री उमाशंकर दूबे 'अनुज'

लेखापरीक्षक



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' का 141-142वां संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालयीन पत्रिकाएं कार्मिकों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ कार्यालय में हो रहे सकारात्मक परिवर्तनों को भी उद्घाटित करती हैं। तरंग पत्रिका का यह अंक राजभाषा की समृद्ध विरासत को निरंतरता प्रदान करते हुए निश्चित रूप से कार्मिकों में राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी भरेगा।

राष्ट्र के एकीकरण तथा समृद्धि में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी ने एक धागे की भांति, विविधताओं से भरे इस राष्ट्र को पुष्पमाला का स्वरूप प्रदान किया है। अतः यह हमारा दायित्व है कि हम राष्ट्र के एक महत्वपूर्ण अंग होने के नाते राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति में अपना योगदान देते रहें। इस दिशा में हमारे सूक्ष्म प्रयास भी राजभाषा की प्रगति में सहायक सिद्ध होंगे।

राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के इस नवीनतम अंक के प्रकाशन में योगदान देने हेतु मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को धन्यवाद देता हूं। मैं आशा करता हूं कि कार्यालय की पत्रिका का यह अंक अपनी लोकप्रियता के शिखर पर होगा तथा भविष्य में और भी सकारात्मक परिवर्तनों के साथ हम राजभाषा की उन्नति में अपना योगदान देते रहेंगे।

पत्रिका की प्रगति एवं उद्देश्यपूर्ति हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

बि. ई. मशरू

(बिजय कुमार मोहन्ती)

प्रधान महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका 'तरंग' का 141-142वां संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य को बहुत ही रुचिकर ढंग से पूरा करती हैं। किसी देश की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को भाषा के माध्यम से ही संजोया जा सकता है। समाज का स्वरूप व आइना वह भाषा होती है जो देश को एकता अखंडता के धागे में बांध कर रखती है।

'तरंग' पत्रिका ने हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यालय में कार्यरत समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रदत्त रचनाएँ उनकी उत्सुकता, रचनात्मक कला एवं हिंदी के प्रति उनके रुझान का प्रतिफल है।

मैं तरंग पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल व सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ जिनके प्रयास से इस पत्रिका को मूर्त रूप प्रदान किया जा सका है। साथ ही पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest


(संजय कुमार)

प्रधान निदेशक

कार्यालय प्रधान निदेशक (केन्द्रीय)

उत्तर प्रदेश, लखनऊ



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तरंग' के 141-142वें संयुक्तांक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विभागीय कार्यालयों में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक हिन्दी पत्रिका उस कार्यालय की रचनात्मक व सांस्कृतिक गतिविधियों का परिचायक होती है। यह न केवल कार्यालय में हिन्दी के कार्यान्वयन को प्रतिबिम्बित करती है, बल्कि उन प्रतिभाओं को भी अभिव्यक्ति का सार्थक मंच प्रदान करती है जो राजभाषा हिन्दी के उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति की मंगल कामना करता हूँ।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

(राम हित)

प्रधान महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-1)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा पत्रिका 'तरंग' अपने 141-142वें अंक में प्रवेश कर चुकी है। अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राजभाषा हिन्दी को सम्मान एवं गौरव प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। तरंग के वर्तमान अंक का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रति आपके सम्मान को उजागर करता है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिये किये जा रहे प्रयासों में गृह पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। कार्यालयीन राजभाषा पत्रिकायें हिन्दी भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती हैं, साथ ही कार्यालय के दिन-प्रतिदिन के कार्यों को हिन्दी में करने की भावना को दृढ़ता प्रदान करती हैं।

कामना करता हूँ कि पत्रिका भविष्य में नये-नये उत्कर्ष के आयामों को प्राप्त करे एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार का यह क्रम भविष्य में भी यूँ ही जारी रहे। पत्रिका के सफल सम्पादन पर मैं सम्पादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

आर.के. शोलंकी
(आर.के. शोलंकी)

महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-द्वितीय)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय के विभागीय राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के नवीनतम अंक (141-142वें संयुक्तांक) का प्रकाशन होने जा रहा है। इस सम्बन्ध में मेरी ओर से ढेरों शुभकामनायें। कार्यालय द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका से हिंदी के वृहद प्रसार के साथ हिंदी को मजबूत बनाने की दिशा में सराहनीय कदम है। साथ ही कार्यालय में होने वाली सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों से अवगत कराती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह नवीनतम अंक, सभी को सृजनात्मक अभिव्यक्ति विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाये एवं इसके संपादक मंडल तथा रचनाकारों को बधाई।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

तान्या सिंह

तान्या सिंह

महालेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

विभागीय गृह पत्रिका 'तरंग' के 141-142वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु राजभाषा के कार्य से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा सम्बंधित रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा हिंदी हमारी भाषाई अभिव्यक्ति के साथ-साथ वृहद् सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। इसने विविधता से भरे राष्ट्र को आपस में संगठित एवं एकीकृत रखने में अपनी महती भूमिका निभाई है। पत्रिका का यह नूतन अंक भी विविधता में एकता के सूत्र को स्थापित करते हुए विविध विषयक आलेख, कवितायें, कहानियां एवं कार्यालय की गतिविधियों को समाहित किये हुए है। पत्रिका के प्रथम खंड में कार्यालय का विहंगावलोकन तथा द्वितीय खंड में राज्य विषयक आलेख अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

(शंजीव कुमार)

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' अपने 141-142वें अंक तक की समृद्ध यात्रा पूर्ण कर चुकी है। इस अवसर पर मैं संपादक मंडल एवं समस्त रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा तय करने में विभागीय पत्रिकाओं का योगदान हमेशा से सराहनीय रहा है। ये पत्रिकायें कार्मिकों के बीच राजभाषा की लोकप्रियता को समृद्ध करने तथा उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम रही हैं। राजभाषा पत्रिका ने कार्मिकों को अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित किया है। पत्रिका के वर्तमान अंक में राज्य विषयगत आलेख तथा विगत वर्ष के दौरान कार्यालय में स्थापित नवीन आयामों का सचित्र विवरण अत्यंत प्रशंसनीय है।

आशा करती हूँ कि राजभाषा पत्रिका निरंतर अपने प्रगति पथ पर गतिमान रहेगी। पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धनलक्ष्मी

(धनलक्ष्मी चौदृशिया)

वरिष्ठ उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-V

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के 141-142वें संयुक्तांक का प्रकाशन रचनाकारों एवं कार्मिकों के लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति सुनिश्चित करने में विभागीय पत्र-पत्रिकाओं का सदैव से महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी कड़ी में गृह कार्यालय की तरंग पत्रिका भी हिंदी को व्यवहारिक रूप में स्थापित करने का कार्य करती आ रही है।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे आम जनमानस की भाषा कहा जाना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कार्यालय में पत्राचार तथा टिप्पण को अधिकाधिक हिंदी में प्रस्तुत कर हम इसके व्यापक स्वरूप को मूर्त रूप देते हैं। राजभाषा की प्रगति निश्चित रूप से हमारे राष्ट्र की प्रगति को सुनिश्चित करती है।

पत्रिका में प्रकाशित होने वाले विविध आलेखों तथा रचनाओं के रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई। आप सभी ने गृह पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने में अपना स्वर्णिम योगदान दिया है। पत्रिका की उद्देश्य पूर्ति हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

अवनींद्र

(अवनींद्र शर्मा)

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-IV

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और इस दायित्व को पूरा करने में गृह पत्रिका 'तरंग' का प्रकाशन अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को इस हेतु बहुत-बहुत बधाई।

वर्तमान समय में हिंदी पूरे देश में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है तथा यह अत्यंत खुशी की बात है कि आज न केवल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हुई है, बल्कि सार्वजनिक जीवन एवं अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी हिंदी का कद बढ़ा है।

मैं तरंग पत्रिका के नवीनतम संयुक्तांक के सफल प्रदर्शन के लिए बधाई देता हूं तथा इसकी प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

श्रेयांश

(श्रेयांश सिंह)

उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-I

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संपादक की कलम से....



राजभाषा की प्रगति में अनवरत् क्रियाशील गृह पत्रिका 'तरंग' के 141-142वें संयुक्तांक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। पत्रिका अपने साज-सज्जा एवं ज्ञानवर्धक सामाग्री के साथ आप सभी सुधी पाठकों के हाथों में है, जिस हेतु राजभाषा का कार्य देख रहे समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ न केवल कार्मिकों की साहित्यिक अभिव्यक्ति हैं बल्कि उनके कार्यालयी निष्ठा की भी द्योतक हैं।

प्रधान महालेखाकार महोदय के संरक्षण में प्रकाशित पत्रिका का वर्तमान अंक मुख्यतः तीन खंडों में विभाजित है। पत्रिका के प्रथम खंड में प्रगति प्रतिवेदन को स्थान दिया गया है जिसके अंतर्गत कार्यालय का संक्षिप्त परिचय, शासन को प्रेषित प्रतिवेदन का संक्षिप्त विवरण, निष्पादन/विषयगत लेखापरीक्षा से संबन्धित विषय एवं कार्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी की प्रगति को शामिल किया गया है।

पत्रिका का द्वितीय खंड कार्मिकों की विविधतापूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहा है। राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थल, वनस्पति एवं स्थानीय संस्कृति पर विषयगत आलेख आदि को सँजोये हुये यह खंड साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामयिक दृष्टि से अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कार्मिकों की मौलिक रचनाएँ उनके सकारात्मक विचारों की अभिव्यक्ति हैं।

तृतीय खंड के अंतर्गत कार्यालय की आंतरिक एवं बाह्य गतिविधियों को प्रमुखता से शामिल करते हुये कार्यालय के नवीन सुविधाओं का भी सचित्र विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो अत्यंत आकर्षक एवं प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त कार्यालय से सेवानिवृत्त हुये कार्मिकों की खट्टी-मीठी यादें तथा दिवंगत आत्माओं के स्मृति शेष उनके प्रति हमारी गहरी संवेदनाओं को बयां करते हैं।

गृह पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करते हुये मैं इसके स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

Dedicated to Truth in Public Interest

अंजनी

(अंजनी कुमावट चौबे)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
➔	खण्ड-1 : प्रगति प्रतिवेदन		16-27
1.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का संक्षिप्त परिचय		17-18
2.	सामान्य और सामाजिक क्षेत्र पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन		19-25
3.	प्रक्रियाधीन निष्पादन/विषयगत लेखापरीक्षा का विवरण		26
4.	हिन्दी की वार्षिक प्रगति		27
➔	खण्ड-2 : कार्मिकों की अभिव्यक्ति		28-65
1.	उत्तर प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल	कमलाकांत	29-33
2.	मैं क्या करूँ?	जाह्नवी वर्मा - भांजी छाया रानी श्रीवास्तव	33
3.	वाराणसी : एक ऐतिहासिक विरासत	कौशलेंद्र नाथ आर्य	34-35
4.	एक नदी थी	विवेक कुमार सिन्हा	35
5.	चलो न !	विवेक कुमार सिन्हा	35
6.	मेरी स्वर्णिम चतुर्भुज राष्ट्रीय राजमार्ग की साइकिल यात्रा	मनीष मिश्रा	36-37
7.	करेंगे या मरेंगे	ललित कुमार सेन	37
8.	माता वैष्णो देवी यात्रा	दक्ष चतुर्वेदी - पुत्र श्री अनुज कुमार चतुर्वेदी	38-39
9.	कौड़ी	सुश्री सुमन केशरी	39
10.	प्रयागराज का सांस्कृतिक महत्व	ब्रजेन्द्र बाजपेयी	40-42
11.	राष्ट्रहित	शाहिल पथिक	42
12.	उत्तर प्रदेश की वनस्पति एवं आम की प्रमुख प्रजातियाँ	महेंद्र कुमार गुप्ता	43-44
13.	माँ का दिल	सुश्री पूर्णिमा टण्डन	44
14.	संघर्ष	अजय भट्ट	45
15.	बुजुर्गों के प्रति	अशोक कुमार सिंह	46-47
16.	बस तुम सुन्दर ही रहना	अंबरीष श्रीवास्तव	48
17.	चलना ही जिन्दगी है	अंबरीष श्रीवास्तव	48
18.	हमारा हस्पताल	अंबरीष श्रीवास्तव	48
19.	जिंदगी की ऑडिट	उमाशंकर दूबे 'अनुज'	49
20.	संतोष ही सबसे बड़ा सुख है	उमाशंकर दूबे 'अनुज'	50
21.	ग्रामीण समस्याएं एवं समाधान	ब्रजेन्द्र बाजपेयी	51-52
22.	महंगाई-सत्यता	ब्रजेन्द्र बाजपेयी	52
23.	काकोरी काण्ड	सदानन्द कुमार चटर्जी	53-54
24.	माँ का भाग्य	सुष्मिता चटर्जी	54

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
25.	क्या 'गांधी जी' भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में एक अतिशयोक्तिपूर्ण विषय हैं ?	यशांश कृष्णा - पुत्र स्वदेश शुक्ला	55-56
26.	प्रतीक्षा	दीपिका पाण्डे	56
27.	भू-सुर	विनय कपूर	57
28.	कागज	विनय कपूर	57
29.	धू-धू कर देखो रेल जली	अखिलेश कुमार धुरिया	58
30.	घनघोर घटा	चन्द्रशेखर यादव	59
31.	कुम्भ दुर्घटना	विजय श्रीवास्तव (चिरागे बिस्मिल)	60
32.	श्मशान घाट में शादी	उमेश कुमार पटेल	61-62
33.	सबसे अच्छा पुत्र	कमला शंकर मिश्रा	63
34.	देवी वन्दना	कमला शंकर मिश्रा	63
35.	विज्ञापन की दुनिया	मनोज कुमार सोनकर	64
36.	देखा था उस दिन	राजेश सिंह पंकज	65
➔ खण्ड-3 : कार्यालय की गतिविधियां			66-84
(क) आंतरिक गतिविधियां			67-75
1.	स्वास्थ्य शिविर		67
2.	सरस्वती सभागार का उद्घाटन		68
3.	तरंग का विमोचन		69
4.	सेवानिवृत्ति कार्यक्रम		70
5.	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस		71
6.	गणतंत्र दिवस समारोह		72
7.	पर्यावरण दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता		73
8.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस		74
9.	स्वतंत्रता दिवस समारोह		75
(ख) बाह्य गतिविधियां			76-84
1.	भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के लखनऊ कार्यालय भ्रमण की कुछ प्रमुख झलकियां		76
2.	कुम्भ मेला शिविर		76
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज की 71वीं बैठक		77
4.	उत्तरी क्षेत्र फुटबाल प्रतियोगिता		78-80
(ग) कार्यालयी सुविधाओं में नवीन आयाम			81-84
➔ सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची			85
➔ स्मृतिशेष			86
➔ पाठकों के पत्र			87-88



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 1

प्रगति प्रतिवेदन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का संक्षिप्त परिचय

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के कार्यालयों को 01 मार्च 1984 से लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी कार्यालयों के रूप में अलग-अलग पुनर्गठित किया गया था। इस प्रकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश और महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश उस तिथि से अस्तित्व में आए। कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश को माह अगस्त 2002 में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश के रूप में उच्चीकृत किया गया था और माह सितंबर 2004 से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश के रूप में नामित किया गया।

कार्यालय आदेश सं. 109-एसएमयू/पीपी/पुनर्गठन/5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012 के माध्यम से मुख्यालय द्वारा निर्देशित किया गया कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश अब उत्तर प्रदेश सरकार के सामाजिक एवं सामान्य सेवा विभागों के प्रधान लेखापरीक्षक होंगे और इस कार्यालय को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश नामित किया गया।

तत्पश्चात् मुख्यालय द्वारा अधिसूचना संख्या-110/09-एसएमयू/2020 दिनांक 15 मई 2020 द्वारा कार्यालय के पुनर्गठन के अनुक्रम में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश के रूप में नामित किया गया।

मुख्यालय द्वारा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), उत्तर प्रदेश और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), उत्तर प्रदेश, लखनऊ के मध्य लेखापरीक्षा के संदर्भ में निम्नानुसार क्लस्टर आवंटित किया गया :

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) उत्तर प्रदेश, प्रयागराज	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ
<ol style="list-style-type: none"> 1. स्वास्थ्य एवं कल्याण 2. शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार 3. ग्रामीण विकास 4. कृषि, खाद्य एवं सम्बद्ध उद्योग 5. जल संसाधन 6. शहरी विकास 7. कानून एवं व्यवस्था 8. सामान्य प्रशासन 	<ol style="list-style-type: none"> 1. ऊर्जा एवं शक्ति 2. उद्योग एवं वाणिज्य 3. परिवहन 4. पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 5. लोक निर्माण 6. वित्त 7. आई. टी. एवं संचार 8. संस्कृति एवं पर्यटन

कार्यालय के विभिन्न लेखापरीक्षा प्रबंधन समूहों (ए. एम. जी.) के अंतर्गत प्रमुख विभाग :

ए. एम. जी.-I	ग्रामीण विकास विभाग एवं पंचायती राज संस्थाएं
ए. एम. जी.-II	शिक्षा, खेलकूद एवं श्रमिक कल्याण
ए. एम. जी.-III	कृषि, पशुपालन, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण
ए. एम. जी.-IV	चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सीय शिक्षा, समाज कल्याण
ए. एम. जी.-V	शहरी विकास, शहरी स्थानीय निकाय, राजस्व, गृह एवं न्यायपालिका

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) हेतु स्वीकृत पद एवं उसके सापेक्ष कार्यरत कार्मिकः
(केवल प्रमुख संवर्ग)

समन्वय/अनुभाग	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी		सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/पर्यवेक्षक		सहायक पर्यवेक्षक/वरिष्ठ लेखापरीक्षक/लेखापरीक्षक		कुल	
	स्वीकृत	कार्यरत	स्वीकृत	कार्यरत	स्वीकृत	कार्यरत	स्वीकृत	कार्यरत
प्रशासन एवं सम्बद्ध	13	9	45	38	69	90	127	137
ए. एम. जी.-I	16	16	31	31	31	27	78	74
ए. एम. जी.-II	15	14	29	29	29	27	73	73
ए. एम. जी.-III	24	24	46	46	46	42	116	112
ए. एम. जी.-IV	14	14	27	34	27	22	68	70
ए. एम. जी.-V	19	20	37	38	38	30	94	88
कुल	101	97	215	219	240	238	556	554

Dedicated to Truth in Public Interest

“हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।”

— मैथिलीशरण गुप्त।

सामान्य और सामाजिक क्षेत्र पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन

31 मार्च 2019 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए सामान्य और सामाजिक क्षेत्र पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के इस प्रतिवेदन में 'इण्डो-नेपाल बॉर्डर रोड परियोजना' पर एक निष्पादन लेखापरीक्षा और 'पशुपालन के लिए आधारभूत संरचना की पर्याप्तता और विकास', 'राज्य सड़क निधि से वित्तपोषित सड़क मार्ग निर्माण कार्य', 'कुंभ मेला 2019', 'उत्तर प्रदेश में शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का उन्नयन' पर अनुपालन लेखापरीक्षा और सरकारी विभागों पर 17 लेखापरीक्षा प्रस्तर सम्मिलित थे जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है:-

इण्डो-नेपाल बॉर्डर रोड परियोजना की निष्पादन लेखापरीक्षा (प्रस्तर सं. 2)

इण्डो-नेपाल बॉर्डर रोड परियोजना को भारत सरकार एवं सम्बन्धित राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से क्रियान्वित किया जाना था। उत्तर प्रदेश में 574.59 कि.मी. इण्डो-नेपाल बॉर्डर रोड की परियोजना का क्रियान्वयन लोक निर्माण विभाग कर रहा था। अवधि 2012 से 2020 (दिसंबर 2019 तक) के दौरान विभाग ने परियोजना के क्रियान्वयन पर ₹834.50 करोड़ व्यय किए।

निष्पादन लेखापरीक्षा के निष्कर्ष निम्नवत् थे:-

- उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रस्तुत किए गए दोषपूर्ण/अपूर्ण प्रस्तावों और वन विभाग के साथ समन्वय की कमी के कारण वन और वन्यजीव स्वीकृति इण्डो-नेपाल बॉर्डर रोड परियोजना के लिये दिसंबर 2019 तक प्राप्त नहीं हुयी थी। उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग द्वारा की जा रही भूमि अधिग्रहण की गति धीमी थी। उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग द्वारा मार्ग निर्माण के लिए बाधामुक्त स्थल की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं की गई।
- उत्तर प्रदेश लोक निर्माण विभाग द्वारा सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की दरों से विचलन करके एवं एक ही प्रकार की मशीनों की अलग-अलग दरें लगाए जाने से परियोजना लागत में ₹11.93 करोड़ की वृद्धि हुयी।
- 13 अनुबंधों में से 11 में सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्राविधिक स्वीकृति दिये जाने के 34 से 162 दिन पूर्व ही इण्डो-नेपाल बॉर्डर वृत्तों द्वारा निविदा सूचना आमंत्रित की गई थी और स्वीकृति की तिथि से 59 दिन पूर्व वित्तीय बिड भी खोली गई थीं। अग्रेतर, 11 में से 8 निविदाओं में, निर्धारित 52 दिनों की अवधि से 18 से 146 दिनों के विलंब से अनुबंधों का गठन किया गया। चूंकि, सफल निविदादाताओं के बिड अनुमानित लागत से 12.15 प्रतिशत से 49.20 प्रतिशत के मध्य अधिक थे, इसलिए इण्डो-नेपाल बॉर्डर वृत्तों ने अनुबंधों को अनुमोदित अनुमानित लागत के भीतर लाने के लिए बिल ऑफ क्वांटिटी को अनियमित रूप से कम कर दिया।
- मई 2013 और फरवरी 2018 के मध्य 12 कार्यों के निष्पादन के लिए इण्डो-नेपाल बॉर्डर वृत्तों ने अनुबंध गठित किये, जबकि 11 कार्यों में भूमि का अधिग्रहण नहीं किया गया था। जिससे ठेकेदारों को ₹84.85 करोड़ ब्याज रहित अग्रिमों के भुगतान के रूप में अनुचित लाभ पहुँचा क्योंकि वसूली निर्माण की प्रगति से जुड़ी थी। जो कार्य पूर्ण होने की निर्धारित तिथि के बाद भी असमायोजित थे।
- मानदंडों के अनुसार सामग्री को अनिवार्य परीक्षण नहीं किया जाना कार्यों के अधोमानक होने की सम्भावना से भरा हुआ था। कन्साइनी रसीद प्रमाण-पत्र प्राप्त किये बिना या इसका सत्यापन किये बिना सड़क निर्माण कार्य में प्रयुक्त बिटुमिन के लिये ठेकेदारों को ₹38.44 करोड़ का भुगतान किया गया, जो न केवल शासकीय आदेश का उल्लंघन था, बल्कि बिटुमिन की गुणवत्ता और मात्रा के साथ समझौता किये जाने की सम्भावना से भरा था।

परियोजना के क्रियान्वयन में अप्रत्याशित विलम्ब होने से 12 स्वीकृत परियोजनाओं में से नौ परियोजनाओं की लागत को संशोधित करके ₹550.12 करोड़ से ₹779.20 करोड़ किया गया। इसी प्रकार भूमि अधिग्रहण में विलम्ब होने से भूमि अधिग्रहण की लागत मूल लागत ₹173.53 करोड़ से ₹284.80 करोड़ (164 प्रतिशत) बढ़कर ₹458.33 करोड़ हो गई। बॉर्डर आउट पोस्ट को जोड़ने हेतु सम्पर्क मार्गों के निर्माण के लिये विस्तृत परियोजना प्रतिवेदनों में सम्पर्क मार्गों के लिये प्रावधान नहीं किये जाने से पाँच सड़कों के पूर्ण होने के बावजूद इन सड़कों से दूर अवस्थित पाँच बॉर्डर आउट पोस्ट, सम्पर्क मार्ग के माध्यम से जोड़े नहीं गए थे।

पशुपालन के लिये आधारभूत संरचना की पर्याप्तता एवं विकास की लेखापरीक्षा (प्रस्तर सं. 3.1)

पशुपालन विभाग विभिन्न पशु चिकित्सा अवसंरचनाओं की वर्ष 2014-19 की अवधि की लेखापरीक्षा के प्रमुख निष्कर्ष निम्नानुसार हैं:

- विभाग के पास राज्य की पशुपालन गतिविधियों के सम्बन्ध में चारा और चारागाह विकास, पशु जैव-विविधता और आधारभूत संरचना के विकास जैसे मुद्दों हेतु व्यापक पशुधन नीति नहीं थी तथा पशु चिकित्सालयों को सुसज्जित करने हेतु कोई मानदंड/मानक नहीं थे। विभाग ने राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम) के अंतर्गत पशु चिकित्सा अवसंरचनाओं को सुदृढ़ करने और निर्माण करने के लिए वांछनीय रणनीतिक एवं वार्षिक कार्य योजनाएं तैयार नहीं की थीं। विभाग एनएलएम के अंतर्गत पशुपालन की आधारभूत संरचनाओं की वृद्धि करने में विफल रहा और भारत सरकार को ₹5.43 करोड़ की धनराशि समर्पित कर दिया।
- चक गंजरिया पशुधन फार्म की 526.49 हेक्टेयर भूमि की विक्रय आय ₹679.91 करोड़ अभी तक प्राप्त नहीं हुई थी। राज्य सरकार ने चक गंजरिया से पशुपालन विभाग के मौजूदा क्रियाकलाप को दो साल के भीतर अन्य पशुधन फार्मों में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया था (अप्रैल 2013), चक गंजरिया फार्म में क्रियान्वित अश्व प्रजनन केन्द्र एवं चारा बीज उत्पादन इकाई अस्तित्व विहीन हो गयी क्योंकि ये दूसरे पशुधन फार्म में स्थानांतरित नहीं की गयी थी।
- राज्य सरकार द्वारा सितंबर 2005 में निर्धारित 15,000 पशुधन के लिए एक पशु चिकित्सालय के लक्ष्य के विपरीत पशु जनगणना 2012 के अनुसार 22,758 गोवंशीय एवं महिषवंशीय तथा पशु जनगणना 2019 के अनुसार 23,577 गोवंशीय एवं महिषवंशीय पशुओं के लिये एक पशु चिकित्सालय की उपलब्धता से स्थिति और बदतर हो गयी थी। 2014-15 के लिये निर्धारित 45 पशु चिकित्सालयों की पुनर्निर्माण परियोजना (₹14.94 करोड़) मार्च 2019 तक निर्माणाधीन थी। पशु चिकित्सा विशेषज्ञ समिति द्वारा संस्तुत 177 औषधियों एवं 80 उपकरणों में से, 103 औषधियाँ एवं 35 उपकरण नमूना परीक्षित किए गए। 107 पशु चिकित्सालयों में से 50 प्रतिशत उपलब्ध नहीं थे।
- राष्ट्रीय पशु रोग सूचना प्रणाली राज्य में लगभग अक्रियाशील था, क्योंकि 822 नोड्स में से कोई भी नोड्स 2017-18 तक सक्रिय नहीं था। 2018-19 में, 822 नोड्स में से केवल 244 सक्रिय थे लेकिन डेटा अभी भी दैनिक आधार पर प्रविष्ट नहीं किया जा रहा था।
- विभाग ने परियोजना की व्यवहार्यता का परीक्षण किए बिना मेरठ और अलीगढ़ में मांस की गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए कार्य आरम्भ कर दिया। तत्पश्चात, इस परियोजना को आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं पाया गया और इसलिए, भवनों के निर्माण पर ₹79.56 लाख के अलाभकारी व्यय के पश्चात परियोजना निरस्त कर दी गयी।

- मरम्मत एवं रखरखाव पर धनराशि के अपर्याप्त आवंटन एवं उपयोग के परिणामस्वरूप पशु चिकित्सा के अवसंरचनाओं की स्थिति कमजोर हुई। नमूना परीक्षण हेतु चयनित 100 पशु चिकित्सालय भवनों में से केवल 17 की मरम्मत/अनुरक्षण 2014-19 की अवधि में की गई थी।

राज्य सड़क निधि से वित्त पोषित सड़क कार्यों की लेखापरीक्षा (प्रस्तर 3.2)

राज्य सरकार ने डीजल और मोटर स्प्रिट (पेट्रोल) पर बिक्री कर के एक निर्धारित अंश से वर्ष 1998 में राज्य सड़क निधि की स्थापना की थी। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क निधि नियमावली, 2013 के अन्तर्गत राज्य सड़क निधि से वित्त पोषित वर्ष 2014-19 की अवधि के सड़क कार्यों की लेखापरीक्षा के मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं:

- उत्तर प्रदेश मार्ग विकास नीति (1998) में परिकल्पित किया गया है कि प्रत्येक सड़क की चैड़ाई, सड़क के क्रस्ट की मोटाई एवं संघटन, सबग्रेड में मिट्टी की गुणवत्ता, पुलियों, पुलों, यातायात घनत्व एवं सड़क दुर्घटनाओं की संख्या इत्यादि सड़क डेटा के डिजिटलीकरण के लिए विकसित की गयी वेब-आधारित प्रणाली 'सृष्टि' में कुछ महत्वपूर्ण विवरण जैसे मिट्टी की कैलिफोर्निया बियरिंग रेशियो (सीबीआर), यातायात घनत्व, पुलिया, पुल और सड़क दुर्घटनाओं इत्यादि का रखरखाव अगस्त 2019 तक नहीं किया गया था।
- राज्य सड़क निधि के अन्तर्गत चैड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण, निर्माण, पुनर्निर्माण, मरम्मत/नवीनीकरण/रखरखाव हेतु सड़कों के चयन के विशिष्ट मानदंड निर्धारित नहीं थे। विभाग ने राज्य सड़क निधि के अन्तर्गत निष्पादित किये जाने वाले कार्यों आदि के आकलन करने के लिए युक्तिपूर्ण योजना तैयार नहीं की थी।
- राज्य सड़क निधि से वर्ष 2014-15 से 2018-19 के दौरान ₹17,128 करोड़ संवितरित किए गए थे। लेखापरीक्षा में पाया गया कि 212 नमूना चयनित कार्यों में से 106 कार्यों, जिनकी कार्य पूर्ण करने की अवधि एक से 24 माह निर्धारित थी, के निष्पादन के लिए धनराशि उनकी स्वीकृति से दो से सात वर्ष की अवधि में अवमुक्त की गयी थी।
- त्रुटिपूर्ण तकनीकी मापदंडों के उपयोग और मौजूदा निर्देशों का पालन न करने के कारण दोषपूर्ण आगणनों के आधार पर सड़क कार्यों को निष्पादित किया गया, जिसके कारण सड़कों के चैड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण पर ₹16.32 करोड़ का परिहार्य/अधिक व्यय हुआ। नमूना जाँच किये गये 212 कार्यों में से ₹681.11 करोड़ के 61 कार्यों की तकनीकी स्वीकृतियाँ 17 से 594 दिनों के विलम्ब से प्रदान की गयी थीं।
- 212 नमूना जाँच किये गये कार्यों में से ₹1,213.34 करोड़ लागत के 169 कार्यों की निविदाएं, विस्तृत आगणन की सक्षम प्राधिकारियों द्वारा तकनीकी स्वीकृति प्रदान करने के 280 दिन पूर्व, इनमें से ₹520.46 करोड़ लागत के 81 कार्यों की निविदाएं, कार्यों के प्रशासनिक अनुमोदन से 278 दिन पूर्व तक भी आमंत्रित की गयी थीं। प्रमुख अभियन्ता के निर्देशों और केंद्रीय सतर्कता आयोग के दिशा-निर्देशों के विपरीत, ₹115.73 करोड़ लागत के 15 कार्यों की आमंत्रित निविदा सूचना में प्रतिबंधात्मक शर्तों को जोड़ने और ₹17.09 करोड़ लागत के 10 कार्यों की बिल आफ क्वांटिटी में संशोधन किये जाने के कारण योग्य ठेकेदारों को निविदा प्रक्रिया में भागीदारी करने से वंचित किया गया। अगस्त 2014 से मार्च 2019 की अवधि में से ₹593.54 करोड़ लागत के 130 अनुबन्धों हेतु ई-टेंडर के माध्यम निविदाएं आमंत्रित की गयीं थीं जिसमें 78 प्रतिशत से अधिक अनुबन्धों में सुरक्षित जमा, हैसियत प्रमाणपत्र, शपथपत्र आदि दस्तावेजों को भौतिक रूप से स्वीकार किया गया। इस प्रकार, ई-निविदा के माध्यम से कार्यों में पारदर्शिता सुनिश्चित करने का निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सका।
- लोक निर्माण विभाग के खण्ड अनुबन्धों के नियमों एवं शर्तों का पालन करने में विफल रहे। यह सुनिश्चित करने के लिये कि उपकरण अग्रिम का उपयोग उपकरणों की खरीद के लिये ही किया गया, ₹20.76 करोड़ के अग्रिम के सापेक्ष

बीजक ठेकेदारों से प्राप्त नहीं किये गये थे। कार्यस्थल पर लायी गयी सामग्री के सापेक्ष छः ठेकेदारों को ₹14.54 करोड़ के ब्याजमुक्त सुरक्षित अग्रिम का भुगतान वर्ष 2014-19 के दौरान किया गया था, जो अनुबन्ध के नियम एवं शर्तों के तहत अनुमन्य नहीं था। अग्रेतर, ठेकेदारों के बिलों से रिटेंशन मनी (₹1.33 करोड़) एवं लेबर सेस (₹24.44 लाख) की कटौती न किये जाने से ठेकेदारों को अनुचित लाभ पहुँचाया गया। इसके अतिरिक्त 1 जुलाई 2017 के पूर्व गठित 31 अनुबन्धों के सापेक्ष ₹13.40 करोड़ का भुगतान करते समय वस्तु एवं सेवाकर का समायोजन सुनिश्चित नहीं किया गया।

- निर्धारित तंत्र के माध्यम से गुणवत्ता परीक्षण का अनुश्रवण असंतोषजनक था क्योंकि गुणवत्ता परीक्षाओं का विवरण एवं उनकी संख्या का उल्लेख किसी भी नमूना जाँच किये गये आगणनों में नहीं किया गया था और ठेकेदारों से सी.आर.सी. प्राप्त किये बिना 19 खण्डों द्वारा 111 अनुबन्धों के सापेक्ष बिटुमिनस मर्दों के लिये ₹309.67 करोड़ के भुगतान किये गये थे।

कुम्भ मेला 2019 की लेखापरीक्षा (प्रस्तर 3.3)

प्रयागराज में 15 जनवरी 2019 से 4 मार्च 2019 तक कुम्भ मेले का आयोजन किया गया था। कुम्भ मेले के आयोजन हेतु राज्य सरकार द्वारा संगम एवं उसके आस-पास के लगभग 3200 हेक्टेयर रेतीले क्षेत्र को 20 सेक्टरों में विभाजित कर विकसित किया गया था। नगर विकास विभाग कुम्भ मेले के आयोजन हेतु नोडल विभाग था साथ ही प्रयागराज मेला प्राधिकरण का प्रशासनिक विभाग भी था। अनुपालन लेखापरीक्षा में निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आये:-

- राज्य आपदा राहत कोष के उपयोग हेतु भारत सरकार के दिशानिर्देशों का उल्लंघन करते हुए राज्य सरकार ने कुम्भ मेले के लिए बचाव उपकरणों के क्रय हेतु राज्य आपदा राहत कोष से ₹65.87 करोड़ का व्यावर्तन किया, जो राज्य सरकार के बजट प्रावधान से प्राप्त होना चाहिए था।
- कुम्भ मेला अधिकारी, विभिन्न संस्थाओं को टेन्टेज सामग्रियों के निर्गम एवं उनकी वापसी पर प्रभावपूर्ण निगरानी रखने में विफल रहे, जिसके कारण वेण्डर ने वापस न हुए टिन, तम्बू एवं फर्नीचर के एवज में ₹21.75 करोड़ के मुआवजे का दावा प्रस्तुत किया। यद्यपि, कुम्भ मेला अधिकारी द्वारा खोये हुए वस्तुओं के एवज में वास्तविक देय राशि सुनिश्चित नहीं की गयी थी।
- विभागों ने निर्धारित समय सीमा का पालन नहीं किया, जिसके कारण 58 स्थायी एवं 11 अस्थायी प्रकृति के कार्य (15 प्रतिशत कार्य) कुम्भ मेला प्रारंभ होने तक पूर्ण नहीं हुए थे। इसके अतिरिक्त, कुम्भ मेले हेतु क्रय किये गए अग्निशमन वाहनों, सामग्री जांच यन्त्रों, टायर किलरों, डिजिटल रेडियो एचएफ सेटों एवं ड्रोन कैमरों (लागत: ₹7.83 करोड़) को कुम्भ मेले के दौरान या तो प्राप्त नहीं किया गया या उनका उपयोग नहीं किया गया।
- लेखापरीक्षा में सड़क के कार्यों में अधिक अनुमान (₹3.11 करोड़); नौ सड़क के कार्यों के निर्माण में अतिरिक्त ऑफसेट बिछाने के कारण अतिरिक्त व्यय (₹95.75 लाख); ठेकेदारों द्वारा कम निष्पादन प्रतिभूति जमा किये जाने (₹6.33 करोड़); कम क्षमता वाले ठेकेदारों को अनियमित रूप से कार्यों के ठेके दिए जाने; बैरिकेडिंग कार्यों (₹3.24 करोड़); तथा फाइबर प्रबलित प्लास्टिक शौचालय के कार्यों (₹8.75 करोड़) पर परिहार्य व्यय एवं ठेकेदारों को अतिरिक्त भुगतान (₹1.27 करोड़) के प्रकरण प्रकाश में आये।
- नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्र, बांसवार के निष्क्रिय रहने के कारण, संयंत्र-स्थल पर कुम्भ मेला प्रारम्भ होने से पूर्व ही 3,61,136 मीट्रिक टन नगरीय ठोस अपशिष्ट का ढेर बन गया था, जो बाद में जनवरी 2019 से मार्च 2019 की अवधि में 52,727 मीट्रिक टन और बढ़ गया।

- निर्माण कार्यों में गुणवत्ता की जाँच के लिए निर्धारित अधिकांश परीक्षण नहीं किए गए थे।
- क्रय किये गए सामानों एवं सामग्रियों के पश्च-मेला उपयोग सहित बुनियादी ढांचों और सुविधाओं के सृजन हेतु, मानक/मानदंड आधारित कोई दीर्घकालिक भावी योजना तैयार नहीं की गयी थी।

उत्तर प्रदेश में राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के उन्नयन की लेखापरीक्षा (प्रस्तर: 3.4)

भारत सरकार ने 2007-08 एवं 2014-15 में क्रमशः दो योजनायें-सार्वजनिक निजी भागीदारी (पी.पी.पी. योजना) के माध्यम से 1396 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का उन्नयन एवं मौजूदा राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का मॉडल औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में उन्नयन प्रारम्भ किया। अनुपालन लेखापरीक्षा में निम्नलिखित उद्घाटित हुआ:

- पी.पी.पी. योजना के अन्तर्गत, 26 (22 प्रतिशत) राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों ने राष्ट्रीय व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद से सम्बद्धता सहित एक या एक से अधिक मापदण्ड पूरे नहीं किए और इस लिये वे योजना के लिये पात्र नहीं थे। मॉडल राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान योजना के अन्तर्गत दोनों ही राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा एक व्यवसाय (इलेक्ट्रीशियन) का चयन किया जाना अनियमित था क्योंकि इलेक्ट्रीशियन व्यवसायों के उन्नयन हेतु भारत सरकार की अन्य योजनाओं के अन्तर्गत पहले ही वित्तीय सहायता प्रदान की जा चुकी थी।
- पी.पी.पी. योजना के अन्तर्गत 2007-11 के मध्य चयनित 80 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए उद्योग समूहों की पहचान किसी मापदण्ड के बिना तथा दिशा निर्देशों में उल्लिखित उद्योग संगठनों के परामर्श/सहमति के बिना की गयी थी। अप्रैल 2011 में भारत सरकार ने उद्योग भागीदारों के चयन हेतु अधिक विशिष्ट मापदण्ड निर्धारित किए। तथापि, 2011-12 की अवधि में चयनित 35 में से 21 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के उद्योग भागीदारों ने भारत सरकार द्वारा निर्धारित अनिवार्य मापदण्डों को पूरा नहीं किया।
- उद्योग भागीदारों ने योजना में सक्रिय भागीदारी नहीं की और परिणामस्वरूप प्रशिक्षकों/प्रशिक्षणार्थियों को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के उन्नयन की योजना में परिकल्पित उद्योग भागीदारों की सम्बद्धता का लाभ प्राप्त नहीं हो सका। नमूना जाँच हेतु चयनित किसी भी राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में उद्योग भागीदारों ने पी.पी.पी. योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षकों हेतु प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षुओं हेतु ऑन द जॉब प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं की थी। मॉडल राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान योजना के सम्बन्ध में प्रशिक्षुओं का औद्योगिक सम्बद्धता अत्यन्त न्यून था।
- पी.पी.पी. योजना के अन्तर्गत चयनित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भारत सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए ऋण का उपभोग निर्धारित पाँच वर्ष की समयावधि में नहीं कर सके। 10 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में निधियों का उपभोग 70 प्रतिशत से कम रहा। मॉडल राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान योजना के अन्तर्गत दोनों राजकीय संस्थान, उपभोग प्रमाण-पत्रों के प्रस्तुतीकरण में विलम्ब एवं निधियों के उपभोग की धीमी गति के कारण, उनके लिए निर्धारित आवंटन (₹19.00 करोड़) का केवल 49 प्रतिशत ही प्राप्त (₹9.35 करोड़) कर सके।
- नमूना जाँच हेतु चयनित 19 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में से 14 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों ने संस्थान विकास योजना के अन्य घटकों हेतु प्रावधानित धनराशियों से व्यावर्तन करके प्रत्येक घटक हेतु प्रावधानित निधियों से परे ₹3.36 करोड़ का अनधिकृत रूप से अधिक व्यय सम्पादित किया। दो राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों ने सिविल कार्यों एवं उपकरणों तथा भण्डार के क्रय में ₹1.81 करोड़ का अलाभकारी व्यय किया।
- नये व्यवसायों को खोलने के लिए मानव संसाधनों की उपलब्धता में अपेक्षित विलम्ब के परिप्रेक्ष्य में एक को छोड़कर, नमूना जाँच हेतु चयनित किसी भी राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान ने अपने सम्बन्धित आई.डी.पी. में नए व्यवसाय प्रारम्भ किए जाने का प्रस्ताव नहीं किया। इस प्रकार, उद्योगों की आवश्यकताओं एवं कुशल व्यक्तियों की

उपलब्धता के मध्य असन्तुलन की समस्या का समाधान नहीं किया जा सका। उत्तीर्ण हुए प्रशिक्षुओं को रोजगार प्राप्त करने के लिए दी गयी सहायता अपर्याप्त थी, क्योंकि पी.पी.पी. योजना के अन्तर्गत नमूना जाँच हेतु चयनित 19 में से छः राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में प्लेसमेंट सेल का गठन नहीं किया गया था। शेष 13 संस्थानों में प्रशिक्षुओं के प्लेसमेंट सम्बन्धी अभिलेख या तो उपलब्ध नहीं थे या केवल कुछ प्रशिक्षुओं के उपलब्ध थे।

- चयनित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थिरता एवं आत्मनिर्भरता का लक्षित उद्देश्य पी.पी.पी. योजना के क्रियान्वयन द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सका, क्योंकि किसी भी नमूना जाँच हेतु चयनित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान ने राजस्व सृजन के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया तथा अधिकांश सुझाए गए उपायों को लागू न करने के कारण 2014-19 की अवधि में राजस्व सृजन के लक्ष्य प्राप्ति में 86 से लेकर 100 प्रतिशत तक कमी रही। पी.पी.पी. योजना के अन्तर्गत चयनित 115 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में से 25 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, जिन्हें मार्च 2019 से ऋण की पहली किश्त चुकाना अपेक्षित था, इस सम्बन्ध में अपनी प्रतिबद्धता पूर्ण करने में विफल रहे।
- पी.पी.पी. योजना का अनुश्रवण अपर्याप्त था।

लेखापरीक्षा प्रस्तर

- बेसिक शिक्षा निदेशालय द्वारा स्कूल के बच्चों के लिए क्रय किये गये स्कूल बैग की निविदा प्रक्रिया विसंगति पूर्ण थी, स्कूल बैग की आपूर्ति एवं वितरण में विलम्ब ने 1.15 करोड़ विद्यार्थियों को वर्ष 2016-17 में स्कूल बैग प्राप्त करने से वंचित कर दिया, साथ ही तीन वर्षों से अधिक समय से ₹9.46 करोड़ मूल्य के 6.55 लाख स्कूल बैग अवितरित पड़े थे। (प्रस्तर: 3.5)
- दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के छात्रावासों में वाईफाई नेटवर्किंग प्रणाली के कार्यशील नहीं होने के कारण छात्र इच्छित लाभों से वंचित रहे और परिणामस्वरूप उक्त की स्थापना पर किया गया ₹2.14 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर: 3.6)
- 10,73,639 घनमीटर उत्खनित चट्टानों को तदर्थ दरों पर ठेकेदारों को विक्रय किये जाने एवं अपारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से 90,054 घनमीटर चट्टानों को अनुपयोगी घोषित किये जाने से शासन को ₹28.44 करोड़ की हानि हुई। अग्रेतर, सिंचाई कार्यों के दौरान उत्खनित उपखनिजों के निस्तारण हेतु कोई विशिष्ट दिशानिर्देश निर्गत नहीं किये गये थे। (प्रस्तर: 3.7)
- खनन अनुमति प्राप्त किए बिना कार्य में प्रयुक्त किये गये उपखनिजों की लागत की वसूली न करके विभाग ने ठेकेदार को ₹96.98 करोड़ का अनुचित लाभ पहुंचाया। (प्रस्तर: 3.8)
- औषधियों/ड्रग्स की आपूर्ति नहीं किये जाने की स्थिति में ₹6.17 करोड़ का अर्थदण्ड आरोपित करने में विभाग विफल रहा जिसके परिणामस्वरूप आपूर्तिकर्ताओं को अनुचित लाभ पहुंचा और साथ ही रोगियों के अपर्याप्त उपचार का जोखिम भी बना रहा। (प्रस्तर: 3.9)
- विभाग के ढुलमुल रवैये के परिणामस्वरूप सेंट्रल आक्सीजन सिस्टम के क्रय पर ₹1.88 करोड़ का अलाभकारी व्यय हुआ, जिसे आठ से दस वर्ष से अधिक की समयावधि व्यतीत हो जाने के उपरान्त भी क्रियाशील नहीं किया जा सका। (प्रस्तर: 3.10)

- आगरा और गोंडा की जिला पंचायतों के क्षेत्राधिकार में चल रही मदिरा की दुकानों के अनुज्ञप्तिधारियों को अनुज्ञप्ति शुल्क के भुगतान हेतु समय पर देयक एवं मांग-पत्र जारी करने में विफलता के परिणामस्वरूप ₹1.09 करोड़ के राजस्व की वसूली नहीं की गयी। (प्रस्तर: 3.11)
- सेतु के निर्माण से पूर्व अपर्याप्त विस्तृत सर्वेक्षण एवं नदी की धारा में परिवर्तन के बाद सुधारात्मक कार्रवाई करने में अत्यधिक विलम्ब के परिणामस्वरूप जनपद आगरा में मेहरा-नाहरगंज-टूंडला मार्ग पर यमुना नदी के ऊपर बने अपूर्ण सेतु पर ₹16.17 करोड़ का व्यय निष्फल रहा। (प्रस्तर: 3.12)
- आगरा में एक सेतु का निर्माण कार्य उसके सम्पर्क मार्ग के निर्माण हेतु आवश्यक भूमि के अधिग्रहण के बिना आरम्भ किये जाने के फलस्वरूप ₹1.90 करोड़ का व्यय निष्फल रह गया। (प्रस्तर: 3.13)
- बिन्दकी कस्बा, जनपद फतेहपुर के पास बाईपास मार्ग के निर्माण हेतु कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भूमि की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने में विभाग की असफलता के परिणामस्वरूप नौ वर्षों के व्यतीत हो जाने एवं निर्माण कार्य प्रारम्भ होने के उपरान्त ₹7.88 करोड़ का व्यय किये जाने के पश्चात भी बाईपास मार्ग अपूर्ण रहा। (प्रस्तर: 3.14)
- अनुबन्ध विलेख की शर्तों के अनुपालन में विफलता के परिणामस्वरूप ठेकेदारों को ₹19.79 करोड़ की अनाधिकृत सहायता एवं शासन को ₹2.80 करोड़ के ब्याज की हानि हुयी। (प्रस्तर: 3.15)
- स्वीकृति के 11 वर्षों के पश्चात ₹80.90 लाख व्यय करने के उपरान्त भी विभाग, जिला सिद्धार्थनगर में अनुसूचित जाति की बालिकाओं हेतु बालिका छात्रावास का निर्माण पूर्ण करने में विफल रहा। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जाति की बालिकाओं हेतु निर्मित तीन छात्रावासों को क्रियाशील करने हेतु, उनके निर्माण के सात से नौ वर्षों के पश्चात् भी कर्मचारियों एवं धनराशि की अनुपलब्धता के परिणामस्वरूप उनके निर्माण पर किया गया ₹3.64 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर: 3.16)
- आवासीय विद्यालय-परिसर के निर्माण हेतु त्रुटिपूर्ण आगणन, पुनरीक्षित आगणन की स्वीकृति के पश्चात् धनराशि अवमुक्त नहीं किये जाने एवं शिक्षण/शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के पदों की स्वीकृति हेतु विलम्ब से माँग प्रस्तुत किये जाने के कारण सोनभद्र एवं बहराइच में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों अपूर्ण/असंचालित रहे तथा ₹25.39 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर: 3.17)
- राजकीय पॉलीटेक्निक, उतरौला, बलरामपुर के निर्माण कार्य में अनुपयुक्त भूमि का चयन किये जाने एवं व्यावहारिकता रिपोर्ट तैयार नहीं किये जाने से, 10 वर्ष की अवधि व्यतीत होने के उपरान्त भी उनके निर्माण पर किया गया ₹16.44 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर: 3.18)
- दुकानों में प्रवेश की व्यवस्था उपलब्ध न होने के कारण 61 दुकानों के निर्माण पर किया गया ₹1.32 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर: 3.19)
- बचत खाते में निधियों को रखने के लिये शासन द्वारा निर्गत निर्देशों का उल्लंघन कर नगर निगम, फिरोजाबाद ने अपनी निधियों को चालू खाते में रखा जिसके परिणामस्वरूप ₹2.49 करोड़ के ब्याज की हानि हुई। (प्रस्तर: 3.20)
- आसरा योजनान्तर्गत 96 आवासों का निर्माण कार्य एक केन्द्र-संरक्षित स्मारक के निकट प्रारम्भ किए जाने से पूर्व जिला नगरीय विकास अभिकरण, कासगंज द्वारा पुरातत्व विभाग से अनुमोदन प्राप्त करने में विफल रहने के कारण निर्माण कार्य, जिसे बाद में रोक दिया गया, पर ₹1.50 करोड़ का अलाभकारी व्यय रहा। (प्रस्तर: 3.21)

प्रक्रियाधीन निष्पादन/विषयगत लेखापरीक्षा का विवरण

वर्ष	निष्पादन/ विषयगत लेखापरीक्षा	निष्पादन/विषयगत लेखापरीक्षा के शीर्षक
2021-22	निष्पादन लेखापरीक्षा	1. ग्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के संबंध में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण का मूल्यांकन
		2. 74वें संविधान संशोधन अधिनियम का क्रियान्वयन
		3. उच्च शिक्षा में परिणामों की लेखापरीक्षा
		4. सतह सिंचाई में परिणामों की लेखापरीक्षा
		5. आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना पर निष्पादन लेखापरीक्षा
		6. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना पर निष्पादन लेखापरीक्षा
	विषयगत लेखापरीक्षा	1. महिलाओं के खिलाफ जघन्य अपराध की रिपोर्टिंग, जांच और निस्तारण की लेखापरीक्षा
		2. प्रयागराज विकास प्राधिकरण पर विषयगत लेखापरीक्षा
2022-23	निष्पादन लेखापरीक्षा	1. गाजियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा सम्पत्तियों के वितरण और आवंटन
		2. सरयू नहर परियोजना
		3. प्राप्तियों एवं उनके उपयोग के सम्बन्ध में मंडी परिषद की कार्यप्रणाली
		4. खेलकूद विभाग की गतिविधियां
		5. शहरी स्थानीय निकायों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन
		6. श्रम उपकर
		7. दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना का कार्यान्वयन
		8. लखनऊ मेट्रो परियोजना के निर्माण एवं परिचालन
		9. उत्तर प्रदेश बीज विकास निगम की कार्यप्रणाली
		10. चिकित्सा क्षेत्र में नियामक तंत्र
		11. आयुष की निष्पादन लेखापरीक्षा
	विषयगत लेखापरीक्षा	1. विद्यालयों में निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण

- ➔ उक्त सूचना में वर्ष 2021-22 में क्रमांक 2, 3 एवं 4 पर अंकित निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट 'स्टैंड अलोन' हैं तथा क्रमांक 1,5 एवं 6 पर अंकित निष्पादन लेखापरीक्षा संघ के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन से सम्बन्धित हैं।

“राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गुंगा है।”

- महात्मा गाँधी

हिन्दी की वार्षिक प्रगति

राजभाषा विभाग द्वारा जारी हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यालय निरंतर प्रयासरत है। हम हिन्दी पत्राचार, हिन्दी टिप्पणी एवं हिन्दी में किए जाने वाले अन्य कार्यों में राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त लक्ष्यों की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। वर्ष 2021-22 की समयावधि के दौरान कार्यालय द्वारा किए गए पत्राचार में हिन्दी की भागीदारी करीब 97% रही तथा कार्यालय में हिन्दी टिप्पण की प्रतिशतता करीब 94% आकी गई है।

इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार कार्यालय प्रमुख द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप हिन्दी अनुभाग द्वारा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों का निरीक्षण भी पूरा किया गया जिसमें अनुभाग स्तर पर हिन्दी में कार्यों की समीक्षा करते हुये कमियों को इंगित किया गया। साथ ही विभिन्न अनुभागों के अभिलेखों का सूक्ष्म अवलोकन कर हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सुझाव भी प्रेषित किए गए। विभिन्न अनुभागों द्वारा अपने अधिकतम कार्य राजभाषा में किए जाने पर निरीक्षण दल द्वारा संतुष्टि भी व्यक्त की गयी।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का भी नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठकों में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए तथा उनका अनुभाग स्तर से अनुपालन भी सुनिश्चित किया गया। विगत त्रैमासिक बैठक के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा हिन्दी कार्यशालाओं के विषय निर्धारण हेतु अनुभागों से सुझाव आमंत्रित किए जाने का निर्णय स्वागत योग्य एवं दूरदर्शी रहा।

राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा पत्र लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान संबंधी प्रतियोगिता एवं क्विज प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। हिन्दी पखवाड़े को कार्यालय में उत्सव का स्वरूप प्रदान करते हुये कार्यालय के कार्मिकों की सहभागिता ऊर्जा प्रदान करने वाली होती है। पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किया जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त, कार्यालय में हिन्दी की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु मुख्यालय स्तर से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुरूप कार्यवाई सुनिश्चित की जा रही है। 'क' क्षेत्र से संबन्धित होने के कारण हिन्दी की प्रगति में इस कार्यालय का उत्तरदायित्व और भी वृहद है तथा इसके निर्वहन हेतु हम सभी निरंतर प्रयासरत हैं।

Dedicated to Truth in Public Interest

“मैं मानती हूँ कि
हिन्दी प्रचार से राष्ट्र का ऐक्य जितना बढ़ सकता है
वैसा बहुत कम चीजों से बढ़ सकेगा।”

- लीलावती मुंशी



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 2

कार्मिकों की अभिव्यक्ति

उत्तर प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल

कमलाकांत

(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



प्राचीन काल से ही विश्व पटल पर हिन्दुस्तान तथा उसमें भी विशेषतः उत्तर प्रदेश का पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उत्तर प्रदेश के पर्यटन स्थल सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में सुविख्यात हैं। उत्तर प्रदेश विदेशी पर्यटकों के लिए भी सदैव से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। भौगोलिक रूप से भी प्रदेश अपने आंचल में विविधता को समेटे हुए है। समय-समय पर विभिन्न कारणों से प्रदेश में पर्यटन के क्षेत्र में उतार चढ़ाव आते रहे हैं। पर्यटन केन्द्रों को पुनर्विकसित करने के लिए वर्ष 1956 में पर्यटन विभाग तथा 1972 में पर्यटन निदेशालय की स्थापना किया जाना इस क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ है। इसी क्रम में वर्ष 1974 में पर्यटन विकास निगम की भी स्थापना की गयी। वर्ष 1991 में पर्यटन सम्बन्धी शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए मा. काशीराम पर्यटन प्रबन्ध संस्थान, लखनऊ की स्थापना की गयी। वर्ष 1998 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान किया गया। जून 2015 में ग्रामीण पर्यटन नीति की घोषणा की गयी। 2016 में आयी नई पर्यटन नीति के अन्तर्गत पर्यटन क्षेत्रों के विकास के लिए सात नए परिपथ चयनित किये गये हैं। उत्तर प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में देश में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कुछ पर्यटन क्षेत्रों का विवरण निम्नवत है-

अयोध्या - जनपद अयोध्या (पूर्व नाम फैजाबाद) में सरयू नदी के दायें तट पर स्थित इस नगर को प्राचीन काल में अयाज्सा नाम से जाना जाता था। यह हिन्दुओं का लोकप्रिय धार्मिक स्थल है। इस नगर की मुख्य पहचान आराध्य देव भगवान श्री राम जी की जन्म स्थली होने के कारण है। जिनके बारे मान्यता है कि वह भगवान विष्णु के सातवें अवतार थे। महाकाव्य रामायण के अनुसार प्राचीन नगर अयोध्या सूर्यवंश की राजधानी थी। इसके अतिरिक्त यह जैन धर्म के पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, चौदहवें तथा पन्द्रहवें तीर्थकरों की भी जन्मस्थली रही है। महाजनपद काल में यह कौशल जनपद की प्रमुख नगरी थी तथा उत्तरी भाग की राजधानी भी थी। महान सम्राट अशोक ने यहां एक स्तूप का निर्माण करवाया था। यहां से पुष्यमित्र शुंग के एक लेख का भी प्रमाण मिलता है। भारत का स्वर्णकाल अर्थात् गुप्त काल में भी अयोध्या एक महत्वपूर्ण नगर था। प्रमुख चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपनी पुस्तक में यहां बौद्ध मन्दिर होने का उल्लेख किया है। वर्तमान में यहां भगवान श्री राम जी के भव्य मन्दिर का निर्माण हो रहा है जिससे पर्यटन के क्षेत्र में इस नगर की महत्ता को नई ऊंचाईयां मिली हैं। इस नगरी में सीता, राम तथा हनुमान के अनेक भव्य एवं जीवन्त मन्दिर हैं। राम जन्मभूमि, कनक भवन, प्रसिद्ध हनुमानगढ़ी, मणिपर्वत, सीताकुण्ड, राम की पैड़ी, दशरथ भवन, लक्ष्मण किला, गुलाब बाड़ी तथा बीकापुर मार्ग पर स्थित भरतकुण्ड आदि यहां के प्रमुख एवं विश्वविख्यात स्थल हैं।

प्रयागराज - प्रयागराज (पूर्व नाम इलाहाबाद) गंगा तथा यमुना नदियों के मध्य तथा गंगा-यमुना-सरस्वती (अदृश्य) के संगम पर अवस्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार कहा जाता है कि यह महाभारत काल से ही अस्तित्व में है। प्रयाग को सभी हिन्दू तीर्थों का राजा अर्थात् तीर्थराज होने का सम्मान एवं गौरव प्राप्त है। अधिकांश धार्मिक ग्रन्थों में प्रयाग का उल्लेख मिलता है। यहां प्रत्येक बारहवें वर्ष विश्वविख्यात महाकुम्भ, छठवें वर्ष कुम्भ एवं प्रत्येक वर्ष माघ मेला लगता है। गुप्तकाल में प्रयाग उनकी धार्मिक-सांस्कृतिक राजधानी थी। गुप्त शासन के पतन के बाद प्रयाग पर हर्षवर्धन तथा चन्देलों

आदि का आधिपत्य था। हर्षवर्धन द्वारा प्रत्येक पांचवें वर्ष प्रयाग में एक धार्मिक समारोह (महामोक्ष परिषद) का आयोजन किया जाता था। 1583 ई. में अकबर ने इस नगर का नाम बदल कर इलाहाबाद रख दिया था। वर्तमान में इस नगर का नाम प्रयागराज कर दिया गया है। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी प्रयागराज की अहम भूमिका थी। भारद्वाज मुनि का आश्रम, प्राचीन अक्षय वट, ललिता देवी मन्दिर, अलोपशंकरी मन्दिर, कल्याणी देवी मन्दिर, वेणीमाधव मन्दिर, नाग बासुकी मन्दिर, श्रृंगवेरपुर, आनन्द भवन, खुसरो बाग, चन्द्रशेखर आजाद पार्क, संगम, रसूलाबाद घाट तथा शंकरघाट आदि यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। रसूलाबाद घाट पर ही अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की अन्त्येष्टि स्थल भी है जो बरबस मानव मन को राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत तथा रोमांचित कर देता है। संगम पर एक किला स्थित है जिसे अकबर ने 1583 ई. में अपने शासन काल के दौरान बनवाया था। किले में ही पौराणिक अक्षयवट है।

प्रयागराज से लगभग 60 कि.मी. दूर यमुना नदी के तट पर कौशाम्बी स्थित है। यह भी एक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है। महाजनपद युग में यह वत्स जनपद की राजधानी थी। यहां के राजा उदयन थे। यहां से कुषाण शासकों के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। सम्राट अशोक व समुद्र गुप्त का प्रयाग स्तम्भ अभिलेख भी यहीं था जिसे कालान्तर में अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित करवा दिया था। राजा उदयन का किला अवशेष, घोषिताराम विहार अवशेष, दिगम्बर जैन मन्दिर आदि यहां के दर्शनीय पर्यटन स्थल हैं।

काशी (वाराणसी) - काशी संसार के प्राचीनतम नगरों में से एक है। यह मन्दिरों की नगरी रही है। इसे गलियों का शहर भी कहा जाता है। यह शैव धर्म तथा हिन्दू धार्मिक नगरी के रूप में प्राचीनकाल से ही विख्यात रहा है। इसे वरुणा तथा अस्सी नदियों के मध्य स्थित होने के कारण वाराणसी भी कहा जाता है। अथर्ववेद में इसका प्रथम उल्लेख प्राप्त होता है। महाभारत तथा रामायण जैसे महाग्रन्थों में भी काशी का उल्लेख मिलता है। छठी शताब्दी ई.पू. के षोडश महाजनपदों में काशी महत्वपूर्ण महाजनपद था। प्राचीनकाल में यह शिक्षा के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था। यह जैनियों तथा बौद्धों का भी तीर्थ स्थल रहा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसका उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है। प्राचीन काल से ही यहां की शिल्प कला काफी उन्नत थी। प्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर, अन्नपूर्णा मन्दिर, संकटमोचन मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, तुलसी मानस मन्दिर, आदि विश्वेश्वर, साक्षी विनायक तथा सारनाथ आदि विश्व स्तरीय दार्शनिक एवं पर्यटक स्थल रहे हैं। हाल ही में निर्मित काशी विश्वनाथ कोरीडोर ने पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित किया है। यदि घाटों की चर्चा न की जाये तो शायद काशी पर कोई भी चर्चा अधूरी ही कही जायेगी। यहां पवित्र गंगा नदी पर कुल 84 घाट हैं। जिसमें मणिकर्णिका घाट, हरिश्चन्द्र घाट, दशाश्वमेध घाट तथा अस्सी घाट आदि प्रमुख घाट हैं। काशी में बड़ी संख्या में विदेशी यात्री भी आते रहते हैं।

झांसी - झांसी की स्थापना 1631 ई. में ओरछा शासक वीर सिंह बुन्देला ने की थी। 1732 ई. में ओरछा शासक छत्रसाल द्वारा झांसी पेशवा बाजीराव प्रथम को सौंप दी गयी थी। इसके बाद झांसी पर मराठों का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। झांसी राज्य के शासक गंगाधर राव की पत्नी वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई थीं। रानी लक्ष्मीबाई 1857 के गदर की द्वितीय शहीद वीरांगना (प्रथम शहीद वीरांगना रानी अवन्ति बाई, मार्च 1858 हैं) थीं। जिन्होंने 1857 के महान गदर में अपनी अद्वितीय वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए फिरंगियों को लोहा मानने के लिए बाध्य किया था। अन्ततः वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई वीरता तथा साहस के साथ युद्ध करते हुए सिर्फ 29 वर्ष की उम्र में कालपी में वीरगति को प्राप्त होकर सदैव-सदैव के लिए अमर हो गयीं। झांसी में लक्ष्मीबाई का किला (जो स्वयं में हिन्दुस्तानी क्रान्तिकारियों की वीरगाथा की इबारत है), रानी महल, बरूआ सागर, चतुर्भुज मन्दिर, ओरछा, परिच्छा बांध, तथा मेंहदी बाग आदि दर्शनीय एवं पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हैं।

आगरा - आगरा एक ऐतिहासिक शहर है। 1504 ई. में सुल्तान सिकन्दर लोदी ने यमुना नदी के दायें तट पर इस शहर की स्थापना की थी। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने आगरा को सन् 1526 ई. में अपनी राजधानी बनायी। यहां पर अकबर द्वारा किला का निर्माण कराया गया था। शाहजहां द्वारा यहां पर अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में ताजमहल का निर्माण कराया गया जोकि 1630 ई. में शुरू होकर लगभग बाईस वर्षों में बनकर तैयार हुआ था। यह स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। ताजमहल को दुनिया के सात अजूबों में गिना जाता है। इसकी वास्तु शैली फारसी, तुर्क, भारतीय तथा इस्लामी के वास्तुकला के घटकों का अनोखा सम्मिलन है। वर्ष 1983 में ताजमहल को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, आगरा का किला, इत्माद-उद-दौला का मकबरा, अकबर का मकबरा, अंगूरी बाग, जामा मस्जिद तथा सिकन्दरा आदि यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल हैं।

जौनपुर - जौनपुर की स्थापना 1358 ई. में सुल्तान फिरोजशाह तुगलक द्वारा गोमती नदी के तट पर किया गया था। तुगलक वंश के पतन के बाद जौनपुर में शर्की सल्तनत की स्थापना हुई। जौनपुर की स्थापत्य कला पर्यटन के दृष्टिकोण से आकर्षण का केन्द्र रहा है। जौनपुर को शिराज-ए-हिन्द भी कहा जाता है। जौनपुर इस्लामी अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। यह आज भी अपनी स्थापत्य विरासत के लिए जाना जाता है। जौनपुर का किला यहां का एक मुख्य पर्यटन स्थल है। यह गोमती नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित है। इसका मुख्य प्रवेश द्वार काफी सुन्दर है। जौनपुर के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल शाही पुल, यमदग्नि आश्रम, लाल दरवाजा मस्जिद, त्रिलोचन महादेव मन्दिर, अटाला मस्जिद, जामा मस्जिद आदि हैं।

मथुरा - भगवान कृष्ण की जन्मभूमि तथा बाल लीलाओं के लिए प्रसिद्ध मथुरा प्रत्येक वर्ष तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। यहां कई मन्दिर और तीर्थस्थल हैं। कहा जाता है कि यहां पर कृष्ण के मामा कंस का राजपाट भी था। महाजनपद युग में यह शूरसेन महाजनपद की राजधानी थी। प्राचीन काल में यह वस्त्र निर्माण का प्रमुख केन्द्र था। मथुरा वर्षों तक मथुरा कला शैली का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहां वीर सिंह बुन्देला द्वारा निर्मित प्रसिद्ध कृष्ण मन्दिर था। ऐसा कहा जाता है कि इसे औरंगजेब ने 1670 ई. में ध्वस्त करवा दिया था। जाटों के नेता सूरजमल ने अपने राज्य की राजधानी मथुरा को ही बनाया था। मथुरा उत्तर प्रदेश का प्रमुख पर्यटन एवं धार्मिक स्थल है। जन्माष्टमी तथा होली के अवसर पर यहां बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते रहे हैं। कृष्ण जन्मभूमि मन्दिर, द्वारिकाधीश मन्दिर, विश्राम घाट, कंस किला, वृन्दावन में बिहारी जी का मन्दिर, राधा बल्लभ जी का मन्दिर, राधा रमण जी का मन्दिर, श्री गोपी नाथ जी का मन्दिर, निधिवन, गिरिकुंज, नन्द गांव, गोवर्धन, दाऊजी का मन्दिर तथा बरसाना आदि यहां के ऐतिहासिक एवं विश्व विख्यात पर्यटन एवं दर्शनीय स्थल हैं। जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं।

लुम्बिनी - यह भारत-नेपाल सीमान्त क्षेत्र में स्थित है। लुम्बिनी को बौद्ध धर्म के संस्थापक भगवान गौतम बुद्ध का जन्म स्थल होने का गौरव प्राप्त है। गौतम बुद्ध के जन्म के कारण ही यह बौद्ध धर्मावलंबियों का महत्वपूर्ण तीर्थस्थान माना जाता है। बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के बाद सम्राट अशोक ने इस स्थल की यात्रा की थी। अशोक ने यहां चार स्तूप और एक स्तम्भ का निर्माण करवाया था। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का पर्यटन स्थल है। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा फाह्यान ने भी इस स्थल की यात्रा की थी। कालान्तर से ही यहां पर बौद्ध भिक्षुओं तथा अन्य विदेशी पर्यटकों का आवागमन बना हुआ है। अशोक स्तम्भ, माया देवी का मन्दिर, स्तूप एवं विहार के भग्नावशेष, प्राचीन कूप तथा लुम्बिनी तालाब आदि यहां के मुख्य पर्यटन स्थल हैं।

कुशीनगर - कुशीनगर गोरखपुर जनपद से लगभग 45 कि.मी. पूर्व में स्थित है। यह गंडक नदी के तट पर बसा है। कुशीनगर का पूर्व नाम बसेया था। ऐसी मान्यता है कि कुशीनगर भगवान राम के पुत्र कुश की राजधानी हुआ करती थी। कुशीनगर का नाम कुश के नाम पर ही रखा गया है। महाजनपद काल में यह मल्ल गणराज्य की राजधानी भी थी। प्राचीन काल में यह आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु था। भगवान बुद्ध ने यहीं पर अपना अन्तिम उपदेश देने के बाद महापरिनिर्वाण को प्राप्त किया था। सम्राट अशोक ने यहां कई स्तूपों व विहारों का निर्माण करवाया था। यहां का सबसे प्रसिद्ध मन्दिर महापरिनिर्वाण मन्दिर है जिसमें पांचवी शताब्दी की लगभग छः मीटर लम्बी भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा शयन मुद्रा में है। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने पावानगर में ही परिनिर्वाण प्राप्त किया था। कुशीनगर में म्यांमार बुद्ध विहार, थाईलैण्ड बुद्ध विहार, कोरिया बुद्ध विहार, चीनी बुद्ध विहार, जापानी बुद्ध विहार, श्रीलंका बुद्ध विहार आदि भिक्षु संघ सेवारत हैं। यहां पर महापरिनिर्वाण मन्दिर, चाइनीज मन्दिर, कुशीनगर संग्रहालय, वाट थाई मन्दिर, इंडो-जापान-श्रीलंका मन्दिर, कुबेर अष्टम, रामभर स्तूप, सूर्य मन्दिर तथा निर्वाण स्तूप आदि मुख्य दर्शनीय स्थल हैं।

भीतरी - यह पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित गाजीपुर जनपद के सैदपुर तहसील में स्थित है। यहां कई पुरातात्विक महत्व के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहां एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिस पर स्कंद गुप्त के शासनकाल और कुमार गुप्त के उत्तराधिकार का उल्लेख है।

श्रावस्ती - बौद्ध धर्म के महातीर्थों में श्रावस्ती भी एक प्रसिद्ध तीर्थ है। ऐसा माना जाता है कि श्रावस्ती को सूर्यवंशी राजा श्रावस्त ने बसाया था किन्तु रामायण में भगवान श्री रामचन्द्र के पुत्र लव द्वारा श्रावस्ती को बसाये जाने की चर्चा की गयी है। यह लम्बी अवधि तक शक्तिशाली कौशल देश की राजधानी थी। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार भगवान बुद्ध ने यहां 24 बार वर्षा वास करके जनता को सद्धर्म का उपदेश दिया था। परन्तु समय के प्रभाव से श्रावस्ती का प्राचीन गौरव अतीत की कहानी बनकर रह गया है। श्रावस्ती बौद्धों के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल रहा है और यह न केवल भारत बल्कि श्रीलंका, जापान, चीन, थाईलैंड सहित बौद्ध दुनिया के अन्य भागों से भी श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। जेतवन विहार, पूर्वराम विहार के खण्डहर, आनंद बोधि वृक्ष, राजकाराम, गंधकुटी, गंधकुटी परिवेष, उपस्थान शाला, स्नान कोठक, जनताघर, आसनशाला, तीर्थकाराम तथा अंगुलिमाल गुफा आदि श्रावस्ती के प्रमुख पर्यटन एवं दर्शनीय स्थल हैं।

हस्तिनापुर - हस्तिनापुर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित मेरठ जनपद में गंगा नदी के तट पर बसा हुआ है। हस्तिनापुर के इतिहास की जड़ें महाभारत काल से जुड़ी हैं। यह कौरवों की राजधानी हुआ करती थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार यहां पांडवों और कौरवों के मध्य महान महाभारत का युद्ध हुआ था। इस युद्ध में पांडवों की जीत हुयी थी और उन्होंने 36 साल तक हस्तिनापुर पर राज किया था। हस्तिनापुर जैन समुदाय के लोगों के लिए भी एक पवित्र स्थल है। जैन धर्म के चौबीसवें, सोलहवें, सत्रहवें तथा अठारहवें तीर्थंकर का जन्म यहीं हुआ था। पांडेश्वर मन्दिर, करण मन्दिर, कमल मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन जम्बूद्वीप मन्दिर, श्री श्वेताम्बर जैन मन्दिर, कैलाश पर्वत, अष्टपद तथा हस्तिनापुर वन्यजीव अभ्यारण्य आदि यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

चित्रकूट - चित्रकूट पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थ स्थलों में से एक है। यह न सिर्फ आस्था का केन्द्र है बल्कि पौराणिक काल से ही इसका बहुत ही विशेष महत्व बताया गया है। यह प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है। चित्रकूट वह स्थान है जहां वनवास के समय भगवान श्री राम जी ने अधिकांश समय निवास किया था। यह भगवान श्रीराम जी की नित्य क्रीड़ा भूमि रही है। यह सदैव से ही तपोभूमि रही है। चित्रकूट में ही महर्षि अत्रि का आश्रम भी है। चित्रकूट में सबसे महत्वपूर्ण कामदगिरि की परिक्रमा तथा देव दर्शन ही माना जाता है। यहां स्फटिक शिला है जहां राम, सीता तथा लक्ष्मण विश्राम किया करते थे। सीतापुर कस्बा, गोस्वामी तुलसीदास का निवास स्थान, कामदगिरि, जानकी कुण्ड, हनुमान धारा, सीता रसोई, गुप्त गोदावरी, स्फटिक शिला, भरत कूप, राघवप्रयाग, कैलाश घाट, रामघाट तथा घृतकल्प घाट आदि दर्शनीय स्थल हैं।

कालिंजर - यह प्रदेश के बांदा जनपद में स्थित है। कालिंजर दुर्ग भारत के सबसे विशाल और अपराजेय किलों में से एक माना जाता है। एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित इस किले में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। चंदेलों द्वारा बनवाया गया यह किला चंदेल वंश के शासन काल की भव्य वास्तुकला का उदाहरण है। किले के अन्दर कई भवन, महल, मन्दिर तथा छतरियां हैं। इसका सामरिक महत्व सदैव रहा है।

यदि उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों की चर्चा की जाये और कुछ अन्य पर्यटन स्थलों जैसे-सिद्धार्थनगर स्थित कपिलवस्तु, जालौन स्थित कालपी, कन्नौज स्थित चन्दावर, ललितपुर स्थित देवगढ़, कानपुर देहात स्थित भीतरगांव, सीतापुर स्थित नैमिषारण्य, लखीमपुर स्थित गोला-गोकर्णनाथ, सहारनपुर स्थित देवबन्द, गोरखपुर स्थित बाबा गोरखनाथ मन्दिर, बलरामपुर स्थित देवीपाटन, बहराइच स्थित सैयद सालार व मसूद गाजी की दरगाह, बाराबंकी स्थित हाजी वारिस अली शाह की मजार आदि की चर्चा न की जाये तो शायद इस विषय पर चर्चा अधूरी ही रह जायेगी।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तान में पर्यटन के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश का प्राचीनकाल से ही एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जो सदैव से ही देश तथा विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है।

मैं क्या करूं?

एक ने धैर्य रखने को कहा तो,

दूजे ने शब्द नाद करने को।

(एक नौका बन मैं निर्झरणी में बहे हुए, अकस्मात ही मदद मांगते हुए।)

एक ने मन पखेरु बन उड़ने को कहा,

तो दूजे ने गौ बन धरा से जुड़ने को।

(बहते प्रवाह से लड़, ढूँढती हूँ मैं अपना लक्ष्य।)

एक ने गतिमय होने को कहा तो,

दूजे ने समय से बांध कर।

(आह ! मेरी नौका न पहुँच पाए, अपने साहिल को।)

खुद को समाने के लिए,

ऐ बता ... मैं क्या करूं?

खुद को यूँ ढालने के लिए,

ऐ बता ... मैं क्या करूं?

यह जगत मांगे है,

ज्ञान त्याग निर्वाण का?

ऐ बता, जगत में आकर,

स्वीकार इसे मैं कैसे करूं?



जाह्वी वर्मा

भांजी - छाया रानी श्रीवास्तव

वाराणसी : एक ऐतिहासिक विरासत

कौशलेंद्र नाथ आर्य

कल्याण सहायक



बनारस यानी वाराणसी शहर हमारे देश के उत्तर प्रदेश राज्य का एक सुप्रसिद्ध शहर है। हमारे देश का सबसे पवित्र शहर कहा जाने वाला बनारस ना केवल मंदिर और अपने धार्मिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है बल्कि अपनी गलियों और घाटों के लिए भी प्रसिद्ध है। बनारस के तटों पर सूर्य की किरणें जब पड़ती हैं तो वहां का दृश्य और भी मनोरम हो जाता है। तभी तो कहा जाता है : 'बनारस की सुबह और अवध की शाम जैसा रमणीय कुछ भी नहीं।'

पद्म पुराण के एक उल्लेख के अनुसार दक्षिण-उत्तर में वरुणा और पूर्व में असी की सीमा से घिरे होने के कारण इस शहर का नाम वाराणसी पड़ा। अथर्व वेद, अग्नि पुराण, महाभारत आदि ग्रंथों में भी वाराणसी का उल्लेख मिलता है। अथर्व वेद में जहां इसे आधुनिक वरुणा के समानार्थक माना गया है, वही अग्नि पुराण में असी नदी का उल्लेख मिलता है, और महाभारत में काशी का नाम वाराणसी मिलता है। ये वहीं शहर है जहां तुलसीदास जी ने मानवीय आदर्श संहिता के रूप में श्री रामचरितमानस की रचना कर विश्व को एक विरासत भेंट की। वाराणसी बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वाराणसी के निकट अवस्थित सारनाथ में महात्मा बुद्ध ने अपना पहला धर्मोपदेश दिया था जिसे बौद्धग्रंथों में 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहा गया है। यहां के महानिर्वाण घाट पर महात्मा बुद्ध ने स्नान भी किया था। आधुनिक काल में वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय एक्ट-1915 के अधीन महामना मदन मोहन मालवीय जी द्वारा सन् 1916 में बसंत पंचमी के पुनीत अवसर पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बी. एच. यू.) की स्थापना की गई थी। यह विश्वविद्यालय अपने चिकित्सीय एवं शैक्षणिक महत्व के कारण 'पूर्वांचल की जीवन रेखा' की उपाधि से विभूषित है।

वैसे तो बनारस की बहुत सी चीजें अपने आप में गौरवशाली इतिहास से जुड़ी हुई हैं परंतु यहां के मनोरम दृश्य, घाट-स्थल, इमारतें, मंदिर, यहां के स्वादिष्ट व्यंजन एवं गंगा-जमुना तहजीब यहां की शान है। यह जनमानस के लिए मोक्ष-द्वार भी है क्योंकि मृत्यु होने पर मनुष्य को सीधे मोक्ष बनारस में ही प्राप्त होता है। वाराणसी में कई प्रमुख मंदिर स्थित हैं। हर एक चौराहे पर एक मंदिर है जो अपने समय के इतिहास पर आधारित है। वाराणसी के मंदिर में काशी विश्वनाथ मंदिर, काल भैरव मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर, ढूंढीराज गणेश, तुलसी मानस मंदिर आदि विश्वप्रसिद्ध एवं आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

वाराणसी (काशी) में गंगा तट पर अनेक सुंदर घाट बने हैं। सभी घाट किसी ना किसी पौराणिक या धार्मिक कथा से संबंधित हैं। बनारस के घाटों की आकृति धनुष की तरह होने की वजह से ये बहुत ही मनोहारी लगते हैं। सभी घाटों के पूर्वाभिमुख होने से सूर्योदय के समय घाटों पर सूर्य की पहली किरण दस्तक देती है। उत्तर दिशा में राजघाट से प्रारंभ होकर दक्षिण में असी घाट तक सौ से भी अधिक घाट हैं। मणिकर्णिका घाट पर चिता की अग्नि कभी शांत नहीं होती क्योंकि बनारस के बाहर मरने वालों की अंत्येष्टि भी पुण्य प्राप्ति के लिए यहीं लाई जाती है। हिन्दू धर्मावलंबियों का मानना है कि यहां मरने वालों को सीधे मोक्ष प्राप्त होता है। हर घाट की अपनी अलग पहचान है। वाराणसी के कई घाट मराठा साम्राज्य के अधीनस्थ बनवाए गए थे। जिनमें सिंधिया, होल्कर, भोसले और पेशवा परिवार शामिल थे। वाराणसी के कुछ घाट स्नान के लिए हैं तो कुछ घाट अंत्येष्टि के लिए प्रसिद्ध हैं।

कहा जाता है कि बनारस में जितनी सड़के हैं, उससे सौ गुनी अधिक गलियां हैं। यहां का असली जीवन तो गलियों में ही है। इसी कारण बनारस को दो नामों से पुकारा जाता है : पहला पक्का महाल और दूसरा भीतरी महाल। पक्की सड़कें तो वहां अभी ही निर्मित हुई हैं परंतु वहां की कच्ची गलियां अतिप्राचीन हैं। गलियों का जाल इतना पेचीदा है कि यहां की गलियों की जानकारी यहां के रहने वाले लोगों को भी कभी-कभी असमंजस में डाल देती है।

वर्तमान में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर पर्यटकों के आस्था का केंद्र है। इसके निर्मित होने से बनारस के पर्यटन उद्योग में काफी उछाल देखा गया है। न केवल धार्मिक पर्यटन, बल्कि कॉर्पोरेट टूरिज्म में भी इजाफा हुआ है। कॉरिडोर के उद्घाटन के बाद से ही काशी में धार्मिक पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है। बाबा विश्वनाथ की नगरी में सालाना एक से डेढ़ करोड़ पर्यटक आ रहे हैं और अपनी आस्था को प्रकट कर रहे हैं। आशा करते हैं कि भारत का यह अद्वितीय शहर आगामी पीढ़ियों को भी अपने सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित कराता रहेगा।

एक नदी थी

एक नदी थी,
दोनों किनारे थाम के बहती थी
एक नदी थी,
न जाने क्यों,
एक दिन दोनों किनारों ने दामन नदी का छोड़ दिया,
नदी न जाने कहाँ गुम गई
किनारे अभी भी वहीं थे
कुछ रूखे रूखे से
कुछ उखड़े उखड़े से
अब ना वो नदी है
ना वो आबाद किनारे
हैं तो बस रेत ही रेत
और रेत तो बस उड़ती रहती है
ढूँढ़ती फिरती है उस नदी को
उस आस को
कि शायद दोनों किनारे फिर से ज़िन्दा हो जायें...

विवेक कुमार सिन्हा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



चलो न !

चलो
बन्द मुहानों को खोल दो
सूनी पड़ी गलियों को गुलजार करो
सर्द हो चुके
रिश्तों में गर्माहट भर दो
उदास चेहरों पर आओ मुस्कान बन जाओ
आओ ना
कांधे पर कचरे का ढेर लादे
कचरों में अपना आज ढूँढ़ते
नन्हें बच्चों सा होकर देखो
चलो ना
करो ना
देखो ना....

मेरी स्वर्णिम चतुर्भुज राष्ट्रीय राजमार्ग की साइकिल यात्रा

मनीष मिश्रा
सहायक पर्यवेक्षक



दिनांक 5 दिसंबर 2021 को मैंने अपने जीवन की सबसे बड़ी साइकिल यात्रा की शुरुआत की। 6200 किलोमीटर की ये यात्रा मैंने 33 दिनों में पूर्ण की। इस यात्रा का प्रारम्भ मैंने अपने निवास स्थान से दाईं ओर (यानी पश्चिम) से शुरू की और पहला पड़ाव कानपुर में किया। फिर 14 राज्य और 30 प्रमुख शहरों से होते हुए अपने घर दिनांक 09 जनवरी 2022 को बाईं ओर (पूरब) से वाराणसी होते हुए प्रवेश किया। जब हम भारत के नक्शे को देखेंगे तो ये चतुर्भुज जैसा दिखेगा।

इस यात्रा में मैं प्रति दिन 200 कि.मी साइकिल चलाता था। मैं अपनी यात्रा सुबह 5 बजे से प्रारम्भ करता था और शाम को अंधेरा होने से पहले किसी ढाबे, होटल या किसी परिचित के घर रुकता था और तड़के सुबह अपने अगले गंतव्य की ओर चल पड़ता था। रास्ते में मेरा खाना-पीना हाइवे के ढाबों में होता था, जहां मैंने हर प्रांत के स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया और वहाँ के लोगों से वार्तालाप भी किया और अनुभव किया कि मेरा देश कितना विशाल और विविध है, जो हम सिर्फ किताबों में ही पढ़ते हैं। पर सही भारत हाइवे पर मुझे मिला क्योंकि मेरी यात्रा साइकिल से थी जिसके कारण मैंने अपनी यात्रा को काफी करीब से अनुभव किया जो मोटर गाड़ी से मुमकिन नहीं होता। भाषा, व्यंजन के साथ मैंने मौसम को भी बदलते देखा। उत्तर भारत की सर्दी और दक्षिण भारत की उमस भरी गर्मी और बारिश भी देखी। समुद्र तट से सटे विशाखापट्टनम के हाइवे पर साइकिल चलाई। ओडिसा की प्रसिद्ध चिल्का झील के तरफ भी चलाई और खंडाला की ऊँची पहाड़ी पर भी चलाई। इस यात्रा के दौरान कई लोगों से मेरी मुलाकात हुई जिन्होंने मेरी हर सम्भव मदद की। चेन्नई के साइक्लिंग क्लब (जो भारत का सबसे बड़ा साइक्लिंग क्लब है) ने मेरा सम्मान समारोह भी रखा और मैंने उनके साथ अपनी यात्रा का अनुभव भी साझा किया। इस यात्रा का सबसे मीठा पल भुवनेश्वर के हाइवे के किनारे वहाँ के प्रसिद्ध रसगुल्लों की दुकानों का था जहां मैंने जम के रसगुल्ले खाये। इतनी मेहनत के बाद रसगुल्ले खाने का आनंद एक साइक्लिस्ट ही बता सकता है, जिसे कैलरीज़ की कोई चिंता नहीं होती क्योंकि वहीं उसका ईंधन होता है। इस पूरी यात्रा को मैंने सिर्फ दो जोड़ी कपड़ों (साइक्लिंग किट) में ही पूरा किया। एक जोड़ी पहनता, फिर अगले दिन उसे धो कर साइकिल की हैंडल पर सुखाता था। साइकिल चलाते हुए कपड़े अपने आप सूख जाते थे।

इस पूरी यात्रा का अनुभव चंद शब्दों में करना सम्भव नहीं है। इन 33 दिनों में हर दिन कुछ नया होता था। कोई यात्रा की योजना नहीं होती थी, सिवाय इसके कि कल अगला शहर पहुँचना है और रुकने एवं खाने की जगह ढूँढनी है। इन 33 दिनों में मैंने पूरा खानाबदोश सा जीवन गुज़ारा। भरी दोपहर में जब कभी थकान लगती तो किसी पेड़ के छाँव में सुस्ता लेता और फिर निकल पड़ता। कई जगह हाइवे पर चौड़ीकरण के कारण कोई पेड़ नहीं थे तो दोपहर की तड़कती धूप में साइकिल चलाना बहुत कष्टकारी होता था। पर कहीं पेड़ दिख जाते तो सुकून भी मिलता था।

मेरी इस साइकिल यात्रा का उद्देश्य था लोगों को प्रेरित करना कि वो साइकिल को अपनी जीवन शैली में शामिल करें, जिससे तमाम बीमारियों से छुटकारा तो मिलेगा ही साथ ही हम पर्यावरण के संरक्षण के लिए भी अपना योगदान कर सकेंगे। अंग्रेज़ी में कहावत है की (pay five minutes silence to those who ride gym cycle and go nowhere) जिम जाकर, महंगी फ़ीस देकर वहाँ खड़ी साइकिल चलाना, जो कही नहीं जा रही है ये कोई समझदारी नहीं है। यदि हम अपने कार्यालय साइकिल से आएँ तो हमारा कीमती समय तो बचेगा ही, स्वास्थ्य भी बेहतर होगा।

**“आइए मिलकर इस पर्यावरण को बचाएं।
स्वस्थ रहने के लिए साइकिल चलाएं।”**

करेंगे या मरेंगे

आजाद वतन को करना है।
अब करना है या मरना है।
अंग्रेज हमारे दुश्मन हैं।
ये चोर लुटेरे राह जन हैं।
इन डाकुओं के सर करना है।
अब करना है या मरना है।

इन खून के प्यासे गोरों को।
इन हत्यारों को, चोरों को।
इस देश से बाहर करना है।
अब करना है या मरना है।

क्या रोज का जीना मर-मर कर।
इस जीने से मरना बेहतर।
फिर मरने से क्या डरना है।
अब करना है या मरना है।

दुश्मनों पर बढ़ के झपटना है।
बढ़कर पीछे नहीं हटना है।
हर पग आगे ही रहना है।
अब करना है या मरना है।

हम जन सेना है करोड़ों की।
मुट्ठी भर टोली गोरों की।
मुट्ठी भर से क्या डरना है।
अब करना है या मरना है।

हम चालीस करोड़ दबेंगे नहीं।
वो चालीस करोड़ दबे हैं कही।
पूरी ताकत से उभरना है।
अब करना है या मरना है।

सौगंध शहीदों के खून की।
सीने पे जिनके चली गोली।
इस अहद से अब न मुकरना है।
अब करना है या मरना है।

भारत माँ की औलाद हैं हम।
दिखला देंगे आजाद हैं हम।
दम आजादी का भरना है।
अब करना है या मरना है।



ललित कुमार शेट
लेखापरीक्षक

माता वैष्णो देवी यात्रा

दृक्ष चतुर्वेदी

पुत्र श्री अनुज कुमार चतुर्वेदी

व. ले. प. अधिकारी



मुझे याद है यह जुलाई 2019 का उत्तरार्ध था जब मुझे पता चला कि हम सितम्बर के महीने में माता वैष्णो देवी की यात्रा पर जायेंगे। पापा ने बताया कि हमारे मूल निवास अर्थात हमारे गाँव की यात्रा पर मिलने वाली सुविधा के स्थान पर हम जम्मू कश्मीर या अंदमान निकोबार की यात्रा कर सकते हैं। बाकी की तकनीकी बातें मुझे नहीं पता। फिर सितम्बर की तारीख भी आ गई जब हमने बस द्वारा लखनऊ के लिए प्रस्थान किया, जहाँ से हमने जम्मू की यात्रा विमान से पूरी की। विमान में बैठते ही मुझे थोड़ी घबराहट हुई लेकिन थोड़ी देर बाद मुझे अच्छा लगने लगा जब आकाश से मैंने हिमालय की चोटियों को देखा। यह दृश्य अद्भुत था! बर्फ की चादर से ढकी हुई ये चोटियाँ मेरे मन में समा गयीं। करीब ढाई घंटे बाद विमान जम्मू में लैंड हुआ। मुझे एहसास हुआ कि यहाँ का वातावरण कितना अलग है। ठंडी हवा का चलना महसूस कर और हरियाली को देख कर मेरा थका हुआ शरीर एक बार फिर से ऊर्जावान हो गया क्योंकि फ्लाइट लेने के लिए हमें तडके ही उठना पड़ा था एवं रात में नींद पूरी नहीं हुई थी। हवाई अड्डे से बाहर निकल कर हम एक कैब में बैठे जिसने हमें सीधा कटरा में पहले से बुक किये होटल तक पहुंचा दिया। कटरा जहाँ से माता वैष्णो देवी की यात्रा आरम्भ होती है। होटल के कमरे की खिड़की से माता वैष्णो देवी जी मंदिर जाने वाला रास्ता दिखाई पड़ रहा था। यह देख के अगले दिन के लिए मैं और भी उत्साहित हो गया। माता वैष्णो देवी का मंदिर एक अत्यंत प्रसिद्ध एवं दर्शनीय धार्मिक स्थल है तथा यह मंदिर सबसे अधिक दर्शन किये जाने वाले मंदिरों में से एक है। त्रिकुटा पहाड़ियों पर स्थित यह तीर्थ प्राकृतिक एवं शांत वातावरण से घिरा हुआ है। यह स्थान रेल, सड़क तथा हेलीकाप्टर से जुड़ा हुआ है। हमने कटरा तक की यात्रा सड़क मार्ग से पूरी की और मैंने देखा कि जम्मू शहर से बाहर निकलते ही माता वैष्णो देवी का रास्ता पेड़-पौधों, और अन्य प्राकृतिक सुन्दरता से भरा हुआ है। यह पूरा रास्ता अद्भुत पहाड़ियों से घिरा हुआ है और हमे आने वाले अद्भुत दृश्यों की एक झलक दिखाता है। यह रास्ता ऊंचे तथा मजबूत कोणधारी वृक्षों से घिरा हुआ है तथा तुरंत ही हृदय में समा जाता है और मन को शान्ति देता है।

अगले दिन मैं सुबह पांच बजे उठा। मैंने खुद को लम्बी चढ़ाई के लिए तैयार किया और दर्शन के लिए निकल पड़ा। होटल से मुख्य यात्रा मार्ग तक पहुंचने के लिए होटल ने कार की सुविधा उपलब्ध कराई थी। मुख्य मार्ग पर पहुँचने के बाद हमने भवन तक का सफ़र आरम्भ किया। कोणधारी वृक्षों से भरी हुई ये पहाड़ियाँ मुझे अनूठा महसूस करा रही थीं जो मुझे न रुकने के लिए प्रेरित कर रही थी।

कुछ देर चढ़ने के बाद मुझे पहाड़ियों के बीच से उगता हुआ सूर्य दिखाई देने लगा। यह अत्यंत सुन्दर दृश्य था। आरम्भ में चढ़ाई से थोड़ी थकान के कारण हल्का विश्राम किया और एक बार फिर से अपना सफ़र आरम्भ किया। भवन तक का रास्ता दुकानों और लोगों से भरा हुआ रहता है। फिर दुबारा मुझे थकान नहीं महसूस हुई क्योंकि जब आप कई लोगों के साथ चलते हैं तो रुकने की इच्छा नहीं होती है।

करीब चार घंटे की चढ़ाई के बाद आखिरकार मैं भवन तक पहुंचा। यह 14 किलोमीटर कब निकल गए मालूम ही नहीं पड़ा। भवन के निकट पहुँचते ही यात्रियों की चहल-पहल देख कर लगा जैसे कोई उत्सव मनाया जा रहा हो। यह उत्सव से आखिर कम भी नहीं था। देवी का मंदिर एक गुफा में स्थित था। दर्शन के लिए लम्बी कतार में मुझे खड़े होकर प्रतीक्षा करनी पड़ी। दर्शन करके मुझे बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। दर्शन करने के बाद हमने भोजन किया एवं पहाड़ से उतरना शुरू किया। उगते सूर्य का दृश्य जो मैंने सुबह देखा था, वैसा ही दृश्य मैंने एक बार फिर देखा लेकिन, इस बार सूर्य को ढलते हुए जो यह संकेत दे रहा था की अब मेरी यह यात्रा समाप्त होने वाली है। हम कटरा में दो दिन और रुके जहाँ से हमने कुछ और दर्शनीय स्थल देखे। वापसी की यात्रा भी वैसे ही शुरू हुई। जम्मू तक कैब फिर विमान लेकिन पता नहीं क्यों मुझे अच्छा नहीं लग रहा था।

कौड़ी

कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।
आसमान छूने निकले थे,
तारे गिनते बिखर गए।
कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।

थोड़ी सी सच्चाई कह दी,
अस्मत पर ही आन पड़ी।
सागर बनने का सपना था,
सिमटे जल से बिखर गए।
कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।

गाती रही भिक्षुणी बन कर,
मर्यादा जीवन के गीत।
अबला आदर्शों के चलते,
बस कौड़ी में तुले गए।
कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।

जीवन की इस महासदी में,
कितनी ही त्रासदियाँ झेली।
सूर्य हथेली पर ले करके,
अंधेरों में डूब गए।
कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।

किसको दोषी निर्दोषी
की संज्ञा से अभिभूत करें।
जितनी दूर चले हैं अब तक,
दीवारों से छले गए।
कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।

अबला आदर्शों के चलते,
बस कौड़ी में तुले गए।
बस, बस कौड़ी में तुले गए।
कोहिनूर बनने निकले थे,
कोयला बनते चले गए।



शुमन केशरी
सहायक पर्यवेक्षक

प्रयागराज का सांस्कृतिक महत्व

ब्रजेन्द्र बाजपेयी
लेखापरीक्षक



श्रावण माह अर्थात सावन का महीना हिन्दू मान्यता अनुसार पूजा पाठ का विशेष माह है। यह मास उत्तरी भारत में ग्रीष्मकाल से राहत पहुंचाने वाला होता है क्योंकि सभी रिमझिम बारिश का आनंद उठाते हैं। आइये हम लोग तीर्थों के राजा कहे जाने वाले प्रयागराज में चलते हैं। यह जिला उत्तर प्रदेश में स्थित है एवं संगम नगरी के नाम से विश्व विख्यात है। यह गंगा, यमुना तथा गुप्त सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है। संगम स्थल को त्रिवेणी कहा जाता है एवं यह हिन्दुओं के लिए विशेषकर पवित्र स्थल है। प्रयाग (वर्तमान में प्रयागराज) में आर्यों की प्रारंभिक बस्तियां स्थापित हुई थीं। प्रयागराज, अपने गौरवशाली अतीत एवं वर्तमान के साथ भारत के ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरों में से एक है। यह हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन एवं ईसाई समुदायों की मिश्रित संस्कृति का शहर है। हिन्दू मान्यता अनुसार, यहां सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि कार्य पूर्ण होने के बाद प्रथम यज्ञ किया था। इसी प्रथम यज्ञ के प्र और याग अर्थात यज्ञ से मिलकर प्रयाग बना और उस स्थान का नाम प्रयाग पड़ा जहाँ भगवान श्री ब्रह्मा जी ने सृष्टि का सबसे पहला यज्ञ सम्पन्न किया था। इस पावन नगरी के अधिष्ठाता भगवान श्री विष्णु स्वयं हैं और वे यहाँ माधव रूप में विराजमान हैं एवं कहा जाता है 'प्रयागस्य प्रवेशावै पापं नश्यति: तत्क्षणात्।' -प्रयाग में प्रवेश मात्र से ही समस्त पाप कर्म का नाश हो जाता है। यज्ञ संस्कृति (अरण्य संस्कृति) वाल्मीकि रामायण में प्रयाग क्षेत्र का वर्णन अत्यंत सादर के साथ किया गया है।

यहाँ त्रिवेणी बांध स्थित लेटे हनुमान मंदिर का देश ही नहीं विदेशों में भी महत्व है। प्रयागराज आने वाले श्रद्धालु और पर्यटक यहां आकर श्री हनुमान के चरणों में शीश जरूर नवाते हैं। 12 वर्ष में होने वाले कुंभ मेला, छह वर्ष में होने वाले अर्ध कुंभ और प्रत्येक वर्ष माघमेला में आने वाले स्नानार्थियों की भीड़ इस मंदिर में सुबह से शाम तक पूजन-अर्चन के लिए जुटती है। वैसे भी वर्ष भर यहां भक्त आते रहते हैं। बड़े हनुमान मंदिर के अतिरिक्त यहाँ मनकामेश्वर मंदिर है जो कि यमुना के तट पर सरस्वती घाट के पास स्थित है एवं प्रयागराज के प्रसिद्ध शिव मंदिरों में से एक है। हिन्दू मान्यता के अनुसार सावन माह भगवान शिव का माह है जिसमें इस मंदिर में भारी भीड़ उमड़ती है और सावन मास में ही माँ गंगा श्री हनुमान जी को अपने जल से स्नान करवाती हैं। ऐसी मान्यता है कि प्रयागराज के साथ पुरे भारत के लिए भी यह एक शुभ संकेत होता है।

प्रयागराज का अपना उज्ज्वल इतिहास भी है। ऋषि भारद्वाज यहाँ 5000 ईसा पूर्व में रहते थे एवं 10,000 से अधिक शिष्यों को पढ़ाते थे। यहाँ पातालपुरी मंदिर का तथा अमर वृक्ष (अक्षय वट) का कई प्राचीन शास्त्रों, लेखकों और इतिहासकारों के वर्णन में उल्लेखित किया गया है। पेड़ एक गहरी जगह में खड़ा है, तथा जिसे त्रिवेणी का नेतृत्व करने के लिए कहा जाता है। आगंतुकों को अक्षय वट की यात्रा की अनुमति 2019 में लगे अर्ध कुम्भ के दौरान प्राप्त हुई है इससे पहले इसे देख पाना यात्रियों के लिए संभव नहीं था। यह भी सेना के निगरानी में बंद किय हुए किले के हिस्से में था। प्रयाग

के संगम तट पर पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनवाये गए किले में अवस्थित 106 मी. ऊँचा अशोक स्तम्भ 232 ई.पू. का है, जिस पर तीन शासकों के लेख खुदे हुए हैं। इस स्तम्भ को 200 ई. में समुद्रगुप्त द्वारा कौशाम्बी से प्रयाग लाया गया और तब उसके दरबारी कवि हरिषेण रचित प्रयाग-प्रशस्ति लेख इस पर खुदवाया गया था। बाद में 1605 ई. में इस स्तम्भ पर मुगल सम्राट जहाँगीर के राजतिलक का उल्लेख भी खुदवाया गया।

यह शहर ब्रिटिश राज के खिलाफ भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का केंद्र था जिसका आनंद भवन केंद्र बिंदु था। इलाहाबाद (वर्तमान में प्रयागराज) में महात्मा गांधी ने भारत को मुक्त करने के लिए अहिंसक विरोध का कार्यक्रम प्रस्तावित किया था। प्रयागराज में ही महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद अंग्रेजों से संघर्ष करते हुए शहीद हुए थे। जिस पार्क में यह घटना हुई थी उसे चंद्रशेखर आजाद पार्क कहते हैं। यहाँ शहीद चंद्रशेखर आजाद की सुन्दर एवं भव्य प्रतिमा स्थापित है।

प्रयागराज ने स्वतंत्रता के पश्चात भारत को सबसे अधिक संख्या में प्रधान मंत्री पद प्रदान किया है-जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, वी.पी.सिंह। पूर्व प्रधान मंत्री चंद्रशेखर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे। इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश के महालेखापरीक्षक, रक्षा लेखा के प्रमुख नियंत्रक (पेंशन) पीसीडीए, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, पुलिस मुख्यालय, मोती लाल नेहरू प्रौद्योगिकी संस्थान, मेडिकल और कृषि कॉलेज, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी), आईटीआई नैनी और इफ्को फुलपुर, त्रिवेणी ग्लास यहां के कुछ प्रमुख कार्यालय एवं संस्थान हैं।

सभ्यता के प्रारम्भ से ही प्रयागराज विद्या, ज्ञान और लेखन का गढ़ रहा है। यह भारत का सबसे जीवंत राजनीतिक तथा आध्यात्मिक रूप से जागरूक शहर एवं मूल रूप से एक प्रशासनिक और शैक्षिक शहर है। प्रयागराज का पूर्व नाम इलाहाबाद भी था जिस नाम से यहाँ पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय भारत का एक प्रमुख विश्वविद्यालय है। यह एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। यह आधुनिक भारत के सबसे पहले विश्वविद्यालयों में से एक है। इसे 'पूर्व के आक्सफोर्ड' नाम से भी जाना जाता है। इसकी स्थापना सन् 1887 ई. को एल्फ्रेड लायर की प्रेरणा से हुयी थी। इस विश्वविद्यालय का नक्शा प्रसिद्ध अंग्रेज वास्तुविद इमरसन ने बनाया था।

अपने देश भारत का सबसे बड़ा मेला कुम्भ मेला यहीं प्रयागराज में लगता है। इसके अतिरिक्त कुम्भ मेला हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में भी लगता है। प्रयागराज के इस कुम्भ में संगम में स्नान हेतु देश विदेश से लाखों श्रद्धालु प्रति वर्ष यहाँ आते हैं एवं प्रति छः वर्ष में अर्ध कुम्भ एवं प्रति 12 वर्ष में महाकुम्भ का मेला या फिर कहें कि श्रद्धा का महापर्व आयोजित होता है। तब यहाँ करोड़ों श्रद्धालु संगम में श्रद्धा की डुबकी लगाते हैं। कुम्भ मेले के आयोजन के कई कारण माने जाते हैं। प्रथम कारण है कि प्रत्येक ग्यारह से बारह वर्ष के बीच सूर्य पर परिवर्तन होते हैं। सूर्य पर हो रहे विस्फोट बढ़ जाते हैं और इसका असर धरती पर अत्यधिक होता है। संभवतः प्राचीन ऋषि इस बात को जानते थे तभी कुम्भ मेले में स्नान का आयोजन शुरू करवाया गया। दूसरा मान्यता यह है कि समुद्र मंथन में निकले अमृत के लिए स्वर्ग में 12 वर्ष तक संघर्ष चलता रहा, जिससे धरती पर अमृत की बूंदें चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन व नासिक में पड़ी। जिससे ऐसा माना जाता है कि बारह वर्षों में हुए कुम्भ के दौरान यहाँ की नदियों का जल अमृत सामान हो जाता है। इसीलिए इसमें स्नान और आचमन का महत्व बढ़ जाता है।

प्रयागराज प्रकृति से जुड़े होने के साथ ही खान पान खासतौर पर फलों में अमरुद, आम इत्यादि के लिए अत्यंत प्रसिद्ध हैं। सर्दियों के मौसम में इलाहाबादी अमरुद की डिमांड बढ़ जाती है। इलाहाबाद का सफेदा अमरुद, लाल गूदे वाला चित्तीदार अमरुद, करेला, बेदाना, सोबिया अमरुद, सुरखा, श्वेता, पंत प्रभात, एल 39, संगम व ललित इसकी प्रमुख प्रजातियां हैं। अमरुद के साथ ही ग्रीष्म ऋतु में कई किस्म के आम जैसे लंगड़ा आम, चौसा आम, दशहेरी आम इत्यादि यहाँ आम जनता के लिए उपलब्ध रहते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ की मुंडेरा मंडी, गंगा पार मंडी सभी प्रकार की सब्जियों के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है।

साजो सज्जा के सामान चौक निकट लोकनाथ चौराहा, ड्राई फ्रूट के लिए बंशीधर मार्केट, साईकिल के लिए जॉनसन गंज मार्केट, मोबाइल ऐसेसिरिज के लिए लक्ष्मण मार्केट एवं इंदिरा भवन यहाँ के लोकप्रिय स्थान हैं।

प्रयागराज अपनी संस्कृति, धार्मिकता, राजनीतिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं पौराणिक मान्यताओं के कारण विश्व प्रसिद्ध है। अब यह शहर देश के किसी भी स्थान से अलग नहीं है। इसे यहाँ की रेलवे सेवा (इलाहाबाद जंक्शन), प्रयाग स्टेशन, रामबाग रेलवे स्टेशन इत्यादि, एवं सिविल लाइंस बस स्टॉप, जीरो रोड बस स्टॉप साथ ही गौरव पूर्ण बमरौली हवाई अड्डा जैसे आवागमन के संसाधन देश के सभी किनारों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ते हैं। प्रयागराज को तीर्थों का राजा कहा जाता है, इसलिए यहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों पर्यटक एवं श्रद्धालु आते हैं और यहाँ की पौराणिक मान्यता, धार्मिकता, ऐतिहासिकता, सर्व धर्म समभाव की सद्भावना एवं गंगा-यमुनी संस्कृति को देखकर एवं महसूस कर मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

राष्ट्रहित

निर्मल-निश्छल जल धारा सी,
सोच को अपनी करना होगा,
जाति-पाति, धर्म-संप्रदाय से,
हमको अब ऊपर उठना होगा,
हैं राम कृष्ण के अनुयायी हम,
सिद्ध विश्व पटल पर करना होगा,
करुणा साहस का मिश्रण कर,
नव चेतन मन भरना होगा,

यह भूमि है बलिदानों से संचित
ऋण बलिदानों का देना होगा,
कर्तव्यनिष्ठ बन राष्ट्रहित में,
प्राणों को सम्मुख रखना होगा,
उत्थान तभी होगा सब का,
निज हित से परे,
राष्ट्रहित रखना होगा।।



शाहिल पथिक
लेखापरीक्षक

उत्तर प्रदेश की वनस्पति एवं आम की प्रमुख प्रजातियाँ

महेंद्र कुमार गुप्ता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



उत्तर प्रदेश राज्य प्राकृतिक संपदा से भरपूर है। राज्य में वनस्पतियों और जीवों की एक विस्तृत विविधता है। क्षेत्र की वनस्पतियों में लगभग सभी प्रकार के पौधे शामिल हैं तथा यह कहा जा सकता है कि राज्य का लगभग 12.8 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र वनों से आच्छादित है। राज्य में सामान्य वनों के प्रकार उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन हैं जो तराई के नम क्षेत्रों में पाए जाते हैं। उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन मैदानी भागों में पाए जाते हैं और मध्य पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में अधिक सामान्य हैं। उष्णकटिबंधीय काँटेदार वन राज्य के दक्षिण-पश्चिमी भागों में पाया जाते हैं। उत्तर प्रदेश राज्य में पाए जाने वाले कुछ सामान्य पौधे रोडोडेंड्रोन, बीटुला, सिल्वर फ़िर, स्प्रूस, देवर, चिर, ओक, साल, विशालकाय हल्दू, ढाक, सागौन, महुआ, सलाई, सिसो, चिरौंजी और तेंदू हैं। राउलोल्फ़िया सर्पगंधा, वियाला सर्पेंस, पोडोफाइलम, हेक्सैन्ड्रम और एफ़ेकेरा गेरार्डियाना जैसी कई औषधीय जड़ी-बूटियाँ भी यहाँ उगाई जाती हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के काष्ठीय पौधे, झाड़ियाँ और पर्वतारोही पौधे भी पाए जाते हैं।

भारत में, पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़ कर आम लगभग सभी स्थानों पर पैदा होता है। हमारे यहाँ आम की सैकड़ों किस्में हैं। भारत में आम की फ़सल अति प्राचीनकाल से उगाई जाती रही है। आम को अनंत समय से भारत में उगाया जाता रहा है। विश्व के अनेक देशों में आम की अलग-अलग जाति होती है। फिर भी हिंदुस्तान का प्रसिद्ध फल आम ही है। आँकड़ों के मुताबिक़ इस समय भारत में प्रतिवर्ष एक करोड़ टन आम पैदा होता है जो दुनिया के कुल उत्पादन का 52 फ़ीसदी है। आम अत्यंत उपयोगी, दीर्घजीवी, सघन तथा विशाल वृक्ष है, जो भारत में दक्षिण में कन्याकुमारी से उत्तर में हिमालय की तराई तक (3000 फुट की ऊँचाई तक) तथा पश्चिम में पंजाब से पूर्व में असम तक, अधिकता में पाया जाता है। अनुकूल जलवायु मिलने पर इसका वृक्ष 50-60 फुट की ऊँचाई तक पहुँच जाता है। वनस्पति वैज्ञानिक वर्गीकरण के अनुसार आम ऐनाकार्डियेसीश कुल का वृक्ष है।

भारत में उत्तर प्रदेश, आम का प्रमुख उत्पादक राज्य है। इसके अतिरिक्त यह छोटे स्तर पर लगभग सभी मैदानी क्षेत्रों में उगाया जाता है। आम उत्तर प्रदेश की मुख्य बागवानी फसल है। प्रदेश में लगभग 40-45 लाख मिट्रिक टन आम उत्पादित होता है, जो देश के कुल उत्पादन का लगभग 83 प्रतिशत है। उत्पादन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के बाद आंध्र प्रदेश, बिहार एवं कर्नाटक आम उत्पादन करने वाले अग्रणी राज्य हैं। उत्तर प्रदेश में सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, वाराणसी, लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सुल्तानपुर जनपद आम फल पट्टी क्षेत्र घोषित हैं, जहाँ पर दशहरी, लंगड़ा, लखनऊ सफ़ेदा, चौंसा, बाम्बे ग्रीन रतौल, फजरी, रामकेला, गौरजीत, सिन्दूरी आदि किस्मों का उत्पादन किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में एक ऐसा अनोखा आम का पेड़ है जहाँ दशहरी, लंगड़ा, रामकेला, आम्रपाली जैसे करीब 121 किस्म के आम एक ही पेड़ में उगते हैं।

उत्तर प्रदेश का बाराबंकी जिला भी अपने आमों के मिठास के लिए बेहद प्रसिद्ध है। यहां के दशहरी, आम्रपाली, यकृति, चौसा, लंगड़ा आदि किस्मों का उत्पादन विश्वप्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश में प्रमुख व्यावसायिक प्रजातियों के आम उत्पादित होते हैं। प्रदेश की दशहरी प्रजाति की उत्पत्ति उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के समीप दशहरी गांव से हुई है। फलों की गुणवत्ता एवं भण्डारण तथा विपणन के लिए प्रदेश सरकार ने मलिहाबाद में विशेष व्यवस्था की है। प्रदेश की लंगड़ा प्रजाति की उत्पत्ति उत्तर प्रदेश के बनारस जनपद से हुई है। लंगड़ा रेशेदार आम होता है तथा यह अपनी मिठास के लिए जाना जाता है। आम खाने वाले इसे इसलिए भी पसंद करते हैं क्योंकि इस आम की गुठली काफी छोटी है और गूदा ज़्यादा होता है। उत्तर भारत की यह प्रमुख व्यावसायिक प्रजाति का फल है। चौसा आम बाज़ार में आधी जुलाई बीत जाने के बाद आता है, जब बाकी आमों की आवक कम हो जाती है। इस आम की खासियत है इसका रेशारहित गूदा और मिठास। ऐसा कहते हैं कि 1539 में बिहार के चौसा में शेरशाह सूरी ने हुमायूं से युद्ध जीतने के बाद इसे चौसा नाम दिया था। वैसे इसकी उत्पत्ति उत्तर प्रदेश के हरदोई ज़िले में हुई थी।

माँ का दिल

पूर्णिमा टण्डन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



एक सतरह साल के लड़के ने अपनी मम्मी से कहा कि मम्मी मुझे मेरे 18वें जन्मदिन पर क्या गिफ्ट दोगी, तो उस लड़के की मम्मी ने उससे कहा कि जब तेरा 18वां जन्मदिन आएगा, तो अलमीरा के ऊपर देख लेना, उसमें तेरा गिफ्ट रहेगा। अभी बता दूंगी तो गिफ्ट का मजा नहीं आएगा। कुछ दिन बाद वो लड़का बीमार हो गया। उसके मम्मी-पापा उसको अस्पताल लेकर गए। जाँच के बाद डॉक्टर ने लड़के के माता-पिता से कहा कि इसके दिल में छेद है। ये अब दो महीने से ज्यादा नहीं चल पायेगा। दो महीने बाद लड़का ठीक होकर घर आया। तो उसे पता चला कि उसकी माँ मर गई। उसी दिन उसका 18वां जन्मदिन था। ये पता चलते ही उसने अलमीरा खोली और उसने देखा कि अलमीरा में एक गिफ्ट का पैकेट पड़ा था। उसने जल्दी से वो गिफ्ट का पैकेट खोला। उस पैकेट में एक चिट्ठी थी। उस चिट्ठी में लिखा था कि मेरे जिगर के टुकड़े, अगर तू ये चिट्ठी पढ़ रहा है तो तू बिल्कुल ठीक होगा। तुझे याद है, जब तू बीमार हुआ था तब हम तुझे अस्पताल लेकर गए थे। डॉक्टर ने कहा था कि तेरे दिल में छेद है। उस दिन मैं बहुत रोई थी और यह फैसला किया कि अपना दिल तुझे दे दूँ। याद है न तुझे। एक दिन तूने कहा था मम्मी मुझे 18वें जन्मदिन पर क्या गिफ्ट दोगी। तो बेटा मैंने तुझे अपना दिल दे दिया है। इसको हमेशा सम्भालकर रखना।

(हैप्पी बर्थ डे बेटा)

“भगवान हव जगह नहीं हो सकते, इसलिए उन्होंने माँ बनाई है।”

संघर्ष

अजय भट्ट

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



फसल लहलहा रही थी। किसान ने फसल काटने का निर्णय लिया। फसल काटने के बाद सारा अनाज बोरो में भरकर खलिहान में रख दिया गया। अनाज के दानों यानी बीजों की आपस में मित्रता हो गई। हो भी क्यों ना, पहले सब अलग-अलग पौधों में लगे हुए थे और अब सब एक साथ हैं। समूह में रहने का आनंद ही अलग होता है। सभी बीजों के दिन आराम से गुजर रहे थे। एक दिन किसान ने कुछ बोरो को बाकी बोरो से अलग कर दिया। सभी में इस बात को लेकर चर्चा होने लगी। कुछ ने कहा कि कल रात ही किसान कह रहा था कि इन्हें अगली बुवाई के लिए अलग किया है, अलग किए गए बोरो के बीजों में चिंता की लहर उठ गई। बाकी बचे बोरो से एक बीज ने बुवाई के लिए चुने गए बीजों पर तंज कसा और मजाक उड़ाने के अंदाज में कहने लगा कि अब तुम लोगों के कष्ट के दिन शुरू हो गए और हम लोग तो खलिहान में आराम करेंगे। इस बात पर दूसरे पक्ष के एक बीज ने कहा-देखो हमारा बुवाई के लिए चुना जाना हमारे प्रारब्ध का हिस्सा है और तुम्हारा आराम तुम्हारे प्रारब्ध का हिस्सा है। इसमें कोई कुछ भी नहीं कर सकता।

अगले दिन किसान ने बुवाई की तैयारी करना शुरू कर दिया और बीज जमीन में बो दिए गए। सभी बीजों की जमीन के अंदर सांस फूलने लगी और फिर संघर्ष शुरू हुआ, जीवन के लिए। थोड़े समय बाद उन्हें पानी दिया गया फिर धरती मां ने अपने आंचल में इन्हें जीवन के लिए लड़ने हेतु क्षमता देने का प्रयास किया तो सूर्यदेव ने भी आगे बढ़कर सौर ऊर्जा प्रदान की और फिर वायु देवता ने सांसे देने का प्रबंध किया। बीजों को ऐसा लग रहा था जैसे कि जीवन की इस जद्दोजहद में पूरी प्रकृति उन्हें बचाने में लग गई है तो उनका भी हौसला बढ़ा और उन्होंने भी पूरी ताकत लगा दी। शीघ्र ही उन बीजों से अंकुर प्रस्फुटित होने लगे और बीजों ने धरती के ऊपर आकर नए संसार का रमणीय दृश्य देखा। हर तरफ खुला-खुला सा वातावरण और नीला आकाश जैसे उनके स्वागत के लिए हाथ जोड़े खड़ा है। इस नवीन संसार को देख सभी बीज आह्लादित हो रहे थे और धीरे-धीरे अपने छोटे से आकार की सीमा को तोड़ विराट धरती में अपने अस्तित्व को खोने में अपार आनंद का अनुभव कर रहे थे। बोए गए बीज आनंदित हो रहे थे और प्रकृति उन्हें गति प्रदान कर रही थी।

तभी एक दिन किसान अपने बचे हुए बोरो को खलिहान में से निकलवा कर उसी खेत के पास रखवा दिया। दोनों समूह के बीजों का फिर से आमना-सामना हुआ पौधे बने बीज ने उन बीजों से पूछा कि तुम लोगों को किसान ने क्यों निकाला है तो उन लोगों ने बताया कि कल किसान का एक मिल मालिक से सौदा तय हो गया और हमें बेच दिया गया है। अब हम मिल में ले जाकर के पीसे जाएंगे और ऐसा कह कर वे दुखी हो गए। इस पर दूसरे पक्ष के बीज ने सांत्वना देते हुए कहा कि कोई बात नहीं दोस्त, अस्तित्व तो दोनों ही स्थितियों में समाप्त होना है, किंतु एक स्थिति में हम विराट से यानी प्रकृति से जुड़कर नए जीवन का आनंद लेते हैं और अनेक संभावनाओं को जन्म देते हैं। दूसरी स्थिति में हम दूसरे के द्वारा इस्तेमाल में लाए जाते हैं। इसलिए, बस तुमसे यहीं प्रार्थना करता हूं कि जब कभी कोई संघर्ष में उतरे तो उसका मजाक मत उड़ाना वरन् उसके हौसले को बढ़ाना और मौका मिले तो स्वयं भी संघर्ष का स्वाद चखना। संघर्ष का फल हमेशा आनंददायक होता है। इन्हीं बातों के बीच मिल मालिक का ट्रैक्टर आ गया और बोरो को लादा जाने लगा। बीजों के दोनों समूहों ने एक दूसरे का अश्रुपूरित आंखों से अभिवादन किया और अपनी-अपनी राह चल दिए।

बुजुर्गों के प्रति

अशोक कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



जीवन की तेज गति में अक्सर संवेदनाएं पीछे छूट जाती हैं। आज जिस प्रकार से यांत्रिकता बढ़ी है, मानव के कोमल संवेदना का स्रोत सूख रहा है। ऐसे में हमारे बुजुर्ग एक अजीब प्रकार के अकेलेपन और उपेक्षा की स्थिति से गुजर रहे हैं। एक छोटी-सी कहानी के माध्यम से बुजुर्गों के महत्व को समझा जा सकता है। एक बुजुर्ग महिला से एक युवती ने एक सवाल पूछा कि आपको तो जिंदगी का लंबा अनुभव है। क्या आप हमको कुछ शिक्षा या नसीहत दे सकती हैं? बुजुर्ग महिला कुछ अपनी जिंदगी की उधेड़बुन में थी और तमतमाकर अजीब सा उत्तर दिया- 'तूने कभी बर्तन धोए हैं?' उस युवती ने हैरान होकर जवाब दिया- 'जी बिल्कुल धोए हैं और रोज धोती हूँ।' फिर बुजुर्ग महिला ने सवाल किया कि क्या सीखा? उस युवती ने कहा- इसमें सीखने वाली बात क्या है? बुजुर्ग महिला ने जवाब दिया- 'बर्तन को बाहर से कम अंदर से ज्यादा धोना पड़ता है बेटी।' उस युवती को तुरंत समझ में आ गया कि उसे क्या शिक्षा मिली है। उस बुजुर्ग महिला के कहने का तात्पर्य था कि हम सब शरीर को धोने में लगे हुए हैं, लेकिन मन को नहीं धो रहे हैं। जीवन की दो अवस्था ऐसी होती है, जिसमें हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं- बाल्यावस्था और वृद्धावस्था। जब हम बालक होते हैं, तो हम कई कार्यों के लिए अपने माता-पिता के ऊपर निर्भर होते हैं। उसी प्रकार से वृद्धावस्था में हम अपने बच्चों पर निर्भर होने लगते हैं। वृद्धावस्था उम्र का वह पड़ाव है, जब व्यक्ति को अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक समस्याएँ घेर लेती हैं। इस क्रम में मैं एक संस्मरण का उल्लेख करना चाहता हूँ। मुझे कई वर्ष बाद 2020 में दीपावली अपने गाँव में मनाने का मौका मिला था। घर पहुंचने पर घर के बुजुर्गों के चेहरे की खुशी देखकर मन पुलकित हो गया। उनके आँखों की चमक देखकर नागार्जुन की कविता के कुछ अंश याद आ गए-

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पांखें कई दिनों के बाद।

पिछले कई वर्षों में समाज में काफी कुछ बदल गया है। समाज व्यक्ति-केंद्रित के बजाय वस्तु-केंद्रित हो गया है। आइंवर के कारण प्राकृतिक खुशी गायब हो गयी है। समाज के संस्कार गायब हो गए हैं। इस बीच दीपावली में पिता जी के दुनिया में न होने और एक परम् आत्मीय चचेरे भाई के असमय दुनिया से विदा होने का एहसास मन को कचोटता रहा। मन में कई प्रकार के भाव आ रहे थे। एक भाव आ रहा था कि समय कितना निर्मम होता है। इसके बावजूद आत्मीय संबंधों में इतनी कड़वाहट देखने को मिलती है। काल के अनन्त प्रवाह में कुछ वर्षों के मानव-जीवन में इतनी वैमनस्यता से क्या फायदा मिलता है? हम ईश्वर को तो नहीं देख पाते हैं, लेकिन माँ-बाप के रूप में ईश्वर हमें दर्शन देते हैं। इसके साथ ही

हमारी परीक्षा भी लेते हैं। उनकी आत्मीय मुस्कान को करोड़ों रुपये में भी नहीं खरीदा जा सकता है। पिताजी और चचेरे भाई के न होने का एहसास मन को अत्यंत दुखी कर रहा था। मन में यह भाव आ रहा था कि अल्प समय के लिए भी अपने बड़ों के प्रति समाज आदर भाव क्यों नहीं विकसित कर पाता है? समाज में मूल्यों की गिरावट चिंता का विषय बनती जा रही है। मुझे ऐसा लगता है कि आज की प्रकृति भी मानव कृत्यों पर हँस रही है।

निकल रही है मर्म वेदना
करुणा विकल कहानी-सी;
वहाँ अकेली प्रकृति हँस रही
हँसती-सी पहचानी-सी।

इस बीच मन में जयशंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियाँ याद आ रही थी कि यह विश्व विषमता और विसंगतियों से भरा है। इसी कारण इस महान विश्व में स्पंदन हो रहा है

विषमता की पीड़ा में व्यस्त
हो रहा स्पंदित विश्व महान;
यही दुख-सुख विकास का सत्य
यही भूमा का मधुमय दान।

समाज में मूल्यों की गिरावट के बीच कुछ अच्छी और रोचक घटनाएँ भी याद आ रही थीं। उन घटनाओं में से मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूँ।

अपने जीवन की पहली नौकरी मैंने सी.डी.ए. पेंशन में की है। वहाँ पर एक वरिष्ठ लेखाकार अपनी माँ (बूढ़ी) की खूब सेवा करते थे। माँ की मृत्यु होने पर भाइयों में सबसे बड़े होने के कारण उन्होंने पहले अपनी हिस्सेदारी का दावा किया। सभी भाई चौंक गए। तब वे उठकर अपनी माँ के कमरे में जाकर माँ के चप्पल को नमन किया और कहा कि बस मुझे यही चाहिए। आज भी वह चप्पल उनके पूजा घर में मौजूद है। ऐसी श्रद्धा बहुत कम देखने को मिलती है। आज उनके तीन बेटों में उस घर को लेकर विवाद है। यह विवाद भी अनोखा है। उस घर को पिताजी की मृत्यु के बाद कोई लेना नहीं चाहता। सभी कह रहे हैं कि उनके पास कोई कमी नहीं है। जब तीनों ने मिलकर अपने जीजा को मकान देना चाहा, तो उन्होंने भी मना कर दिया; क्योंकि उनके पास चार फ्लैट पहले से हैं। आज उस घर में ताला बंद है। प्रयागराज शहर के दक्षिण भाग में स्थित यह मकान आज कौतूहल का विषय बना हुआ है। ऐसी घटनाएँ मानव-मन को प्रेरित करती हैं, समाज में लोकमंगल भावना का प्रसार करती हैं। आज की व्यस्तता के समय में अगर हम बुजुर्गों के लिए समय निकालते हैं, उनकी भावनाओं का सम्मान करते हैं, तो उनके चेहरे की चमक देखकर पूरा समाज पुलकित होगा।

एक ख्याल की तरह होते हैं, जब पल-पल में बिखर जाते हैं
अपने दिल की दुआओं से सँभाला करते हैं हमें, हमारे बुजुर्ग।
जब अंतर्मन से होते हम खाली, फिर कोई हमारी राह नहीं
हमारा जुनून, हमारी खाहिश, ताकत बन जाते हैं, हमारे बुजुर्ग।

बस तुम सुन्दर ही रहना

तुम जब भी आना
मुझसे मिलने के लिए
कभी
सज-धज के तो मत ही आना
कहीं ऐसा न हो कि
तुम दिखो इतनी खूबसूरत कि
तुम्हारी ये खूबसूरती
मुकाबिल हो जाये
तुम्हारे आंतरिक और निश्छल सौंदर्य से
और
नतीजे कुछ बे मज़ा हों

चलना ही जिन्दगी है

न जाने कब
हम हो गए
भईया से चाचा
मनसा कर्मणा वाचा
उम्र एक सफर है
और बाबू, भईया, चाचा, बाबा इसके
रास्ते के पत्थर
कुछ पत्थर तो हवा से भी हल्के
और कुछ
ज़िम्मेदारियों की तरह भारी
न केवल भारी
बल्कि अवांछित अतिथि की तरह
इनके रुकने की मियाद भी है ज्यादा
अब
ये हम पे है
कि
इस वक्फे को
हम
जियें या काटें !



अंबदीप श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हमारा हस्पताल

बस कुछ प्रोग्राम ऐसा बना कि आज शाम का खाना घर पर नहीं। फिर क्या था, ऑनलाइन खाना आर्डर करने और रेस्टोरेंट में जाकर खाने के चुनाव के बीच जो स्वस्थ, आदर्श और सार्थक स्पर्धा हुई, उसमें हारने वाले पक्ष को जरा भी मलाल न रहा। खेल भावना का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत हुआ और ये तय पाया गया कि बाहर चल कर ही खाना बेहतर होगा, आखिर गरमागरम खाने से भी अच्छा कुछ हो सकता है क्या?

रेस्टोरेंट की खोज में नम्बर एक पायदान पर आने वाले भोजनालय की ओर प्रस्थान करने के लिए हमने सड़क के सार्वजनिक परिवहन के किसी साधन की उपलब्धता जांची और फौरन से एक ई-रिक्शा जो सामने दिखा तो बिजली की तेजी से हम उसमें सवार हो गए। अचकचा के जब वाहन चालक ने गंतव्य के बारे में पूछा तो उसी रेस्टोरेंट का नाम हम चारों जनो के मुख से एक साथ ऐसे फूटा जैसे ऑरकेस्ट्रा की धुन पर कोई संगीतमय कोरस बज उठा हो।

‘वो तो ठीक है, लेकिन ये होटल है कहां?’ रिक्शे वाले ने पूछा।

अरे वो जो जानवरों का हस्पताल है, उसी के बगल में तो है, ऐसा करो तुम हमें हस्पताल तक ले चलो। वो हस्पताल तो तुम्हे पता है न? हमने अपने ज्ञान की खिचड़ी परोस दी।

ठीक है साहब,

फिर जो रिक्शा चला तो चलता रहा। शाम की ठंडी-ठंडी हवाएं पूरे चित्त को शांत प्रफुल्लता से भरती रहीं।

तंद्रा हमारी तब टूटी जब रिक्शा चालक ने उच्च स्वर में मुनादी पीटी ‘उतरिये साहब, आप लोगों का हस्पताल आ गया।’



उमाशंकर् दूबे 'अनुज'
लेखापरीक्षक

जिंदगी की ऑडिट

यहां जिंदगी बंट गई है दो हिस्सों में
जो ज्यादा गंभीर मुद्दे हैं-दो 'अ'
और जो रोजमर्रा के हैं-दो 'ब'
फिर इनमें से कुछ 'डी.पी.' मार्क होते हैं
जिन्हें हल करने के लिए चाहिए सबूत।
और कुछ मुद्दे 'क्लब' होके दूढ़ने लगते हैं
एक दूसरे में अपना वजूद...!

चलता रहता है ये सिलसिला आगे भी,
जिंदगी रोज नए 'प्रस्तर' बनाती है।
मैं अपनी 'आख्या' तो भेज देता हूं,
पर यूं ही पढ़ के चुप बैठ जाती है।
लगता है उस पर भी 'शासन' का दबाव है।
कहती है फिर से भेजें 'साक्ष्यों का अभाव' है!

ऐ जिन्दगी, अच्छा चल रहा तेरा 'ऑडिट',
मेरे 'दस्तावेज' तू इस कदर खंगाल रही है।
जैसे मेरी 'यूनिट' से कोई शिकवा हो तुम्हें,
मेरे निजी मसले भी तू 'आई.सी' में डाल रही है।
बेअसर रहे अब तक के 'मीटिंग',
यही ख्वाब अब वक्त-बेवक्त आते हैं।
बंद लिफाफे में लिख कर भेजा है तुमने..
'सभी प्रस्तर निरस्त किए जाते हैं'!

संतोष ही सबसे बड़ा सुख है

उमाशंकर् दूबे 'अनुज'
लेखापरीक्षक



मनुष्य अपने जीवन में कभी शांत चित्त नहीं बैठता। उसकी एक खाहिश पूरी होती है और दूसरी जन्म ले लेती है। उसकी कामनाएं कभी थकती नहीं। खाहिशें ठीक उसी तरह होती हैं जैसे पृथ्वी और आकाश के बीच की दूरी। मीलों दूर खड़ा एक व्यक्ति क्षितिज को धरती से मिलता हुआ देखता है, लेकिन जैसे-जैसे वह मिलन स्थल की ओर बढ़ता है, क्षितिज मीलों दूर होता जाता है। वह अपने संपूर्ण जीवनकाल में न जाने कितनी ही मृगतृष्णाओं का शिकार बनता है। उसे लगता है, मैं उस क्षितिज के पास अगले 1 घंटे में पहुंच जाऊंगा। एक घंटा चलने के पश्चात् पाता है कि क्षितिज एक घंटा और दूर हो गया।

ठीक इसी प्रकार, हमारे पास जब दस हजार रुपये होते हैं, हमारी इच्छा होती है बस पचास हजार रुपये हो जाए तो हमारी जिंदगी खुशहाली से कटने लगेगी। जब पचास हजार होते हैं तो हम पांच लाख के लिए प्रार्थना करते हैं। यहीं सिलसिला निरंतर चलता रहता है और उस क्षितिज की तरह ये खाई भी समानांतर बनी रहती है। यह खाई तब तक बनी रहती है जबतक कि हमारे अंदर संतोष का बीज पैदा नहीं होता। ऐसा नहीं है कि धनी लोगों के मन में ऐसी कोई इच्छा नहीं होती है। क्या धनी-क्या गरीब, क्या राजा-क्या रंक। कोई फर्क नहीं पड़ता। वह आकाश राजा को भी धरती से उतना ही दूर दिखता है जितना कि एक भिखारी को। वह तृप्ति एक राजा के लिए भी उतनी ही आवश्यक है जितनी एक भिखारी के लिए। जैसे मरुस्थल में एक राजा जाए या भिखारी, सबको मृगतृष्णा उतनी ही नजदीक दिखती है।

सुना है किसी व्यापारी का बहुत बड़ा व्यापार था। लाभ और हानि निरंतर होते रहते थे। किसी दिन एक संन्यासी उसके दरवाजे पर पहुंचा। संन्यासी ने देखा कि व्यापारी अत्यंत उदास मन से बैठा हुआ है। उसने व्यापारी से पूछा 'सुना है इस बार तो आपको पचास हजार रुपए का शुद्ध मुनाफा हुआ है, फिर भी आप इतना उदास क्यों दिख रहे?' प्रश्न जायज भी था। संन्यासी लोगों का सूचना तंत्र पर्याप्त सुदृढ़ होता है। संन्यासी के प्रश्न का उत्तर देते हुये व्यापारी गंभीर मन से बोला 'महात्मन ! ये सच है कि मुझे पचास हजार रुपये का शुद्ध मुनाफा हुआ है किंतु उदासी का कारण यह है कि मैंने इस वर्ष एक लाख के शुद्ध मुनाफे की उम्मीद लगाई थी। 'हम सभी के अंदर भी ऐसा ही एक व्यापारी है। हम सब भी अपने जीवन में कुछ ऐसे ही लाभ की उम्मीद लगा कर बैठे हैं। जो है, उससे संतुष्ट नहीं हैं बल्कि जो नहीं है उसकी कामना में प्रतिदिन मोम की भांति पिघल रहे हैं।

हमें प्रकृति से लगाव क्यों होता है? क्योंकि वहां शांति है, संतुष्टि है। पर्वत, पेड़ और झरने कभी ऐसी प्रतिस्पर्धा का हिस्सा नहीं होते हैं। उनका अपना एक अलग जीवन होता है, जो संतुष्टि के निकट और भागदौड़ से दूर होता है। इसी कारण हमें उनके करीब जाने की उत्कट इच्छा होती है। यदि हम भी पेड़-पौधों की भांति संतुष्ट और शांत हो जाएं तो शायद हम जिंदगी में उनकी अपेक्षा और ज्यादा आनंद की अनुभूति कर पायें। क्योंकि उनका सुख तो अचेतन है, किंतु मनुष्य चेतना से परिपूर्ण है।

ग्रामीण समस्याएं एवं समाधान

ब्रजेन्द्र बाजपेयी
लेखापरीक्षक



ग्रामीण समस्याएं : भारतीय गाँवों में बेरोज़गारी, अशिक्षा, अंधकार, पानी, बिजली, आवास, अंधविश्वास, सड़क, सिंचाई आदि-आदि कई समस्याएँ किसी से छुपी नहीं हैं। उद्योग धंधों की कमी के कारण, गाँव के लोग रोज़गार के लिए मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं। कृषि रोज़गार का मुख्य स्रोत होने के कारण किसान मौसमी बेरोज़गारी से भी जूझ रहे हैं। भारतीय गाँवों की समस्याओं में भी विविधता देखने को मिलती है। बिहार और उत्तर प्रदेश की ग्रामीण समस्याएं पंजाब-हरियाणा के गाँवों की समस्या से अलग हैं। वहीं पूर्वोत्तर राज्य के गाँवों की समस्याएं शेष भारत से भिन्न हैं। समस्या चाहे अलग-अलग हों परन्तु इनके कारण हमारी ग्रामीण जनता का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक विकास अवरुद्ध हो रहा है। अतः इनका तत्काल समाधान आवश्यक है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही संविधान में उल्लिखित ग्रामीण कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएँ एवं समय-समय पर ग्रामीण विकास के सपने को साकार करने के लिए अनेक कार्यक्रम लागू किए जाते रहे हैं।

समाधान : राज्य एवं केंद्र सरकार के द्वारा समय-समय पर कई बदलाव एवं समाधान किये जा रहे हैं जिनमें से प्रधान मंत्री मुद्रा योजना की शुरुआत माननीय प्रधान मंत्री के द्वारा 8 अप्रैल 2015 को की गई। इसका लक्ष्य निर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्रों से जुड़े अति लघु उद्योगों को विशेष तौर पर उन गैर कृषि उद्यमों को जिनकी जरूरत दस लाख से नीचे हो, को ऋण प्रदान करना है।

दूसरी, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के अर्न्तगत, किसानों को बीमा कम्पनियों द्वारा निश्चित समाधान, खरीफ की फसल के लिये 2% प्रीमियम और रबी की फसल के लिए 1.5% प्रीमियम का भुगतान एवं ग्राम सचिवालय सरकार द्वारा ग्रामीण इलाकों में आई.टी. युक्त 'ग्राम सचिवालय' की स्थापना की एक नई स्कीम शुरू की गई है। स्कीम के अनुसार कई विभागों के ग्राम स्तरीय अधिकारी/कर्मचारी इस सचिवालय में बैठेंगे ताकि लोगों के सभी सरकारी कार्य एक ही कैम्पस में हो सके। ग्राम सचिवालय में सरपंच के लिए कमरा, पंचों के लिए कमरा, ग्राम सचिव हेतु कमरा, ग्राम पंचायत की मीटिंग व ग्राम सभा मीटिंग के लिए एक हाल, महिलाओं एवं पुरुषों के लिए अलग-अलग शौचालयों का निर्माण करवाया जाएगा साथ ही ई-पंचायत विकास और पंचायत विभाग पंचायती राज संस्थाओं के लिए ई-पंचायत शुरू की है, जो राष्ट्रीय ई-शासन योजना के अंतर्गत मिशन मोड प्रोजेक्ट में से एक है। ई-पंचायत परियोजना का उद्देश्य पंचायती राज संस्थाओं का समर्थन करना है, ताकि वे अपनी अन्य विस्तृत जिम्मेदारियों के अलावा, नागरिकों, सरकारी विभागों और व्यावसायिक संस्थाओं को सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग से सेवाएं प्रदान कर सकें। ई-पंचायत आधुनिकता और दक्षता के प्रतीक के रूप में पंचायती राज संस्थाओं में क्रांतिकारी बदलाव और बड़े पैमाने पर सूचना और संचार प्रौद्योगिक संस्कृति को प्रेरित करने की क्षमता रखता है। ऐसी बहुत सी योजनाएँ ग्रामीण समस्याओं के समाधान के लिए चल रही हैं।

हालांकि आजादी के बाद ग्रामीण-गरीबी दूर करने के लिए कृषि के विकास पर जोर दिया गया, जिससे कुछ खास क्षेत्रों-पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि के गाँवों में अभूतपूर्व परिवर्तन आया, परन्तु अनेक राज्य इससे अछूते रह गए। अतः हम सभी शिक्षित वर्ग का दायित्व है कि सरकार के साथ मिलकर इन योजनाओं को आवश्यक व्यक्ति तक पहुँचाया जाये, जिससे अंतिम व्यक्ति तक इन योजनाओं का लाभ पहुँच सके। इसे बहुत हद तक संभव बनाने के लिए इन योजनाओं का क्रियान्वयन शीघ्र एवं त्वरित करना चाहिए।

महंगाई-सत्यता

जोरों की दस्तक दरवाजे पर
कहीं वो तो नहीं है आई।
देखा जब चौखट पर जाकर
कुछ सुगबुगाहट उसकी है आई।
मैं गया दौड़ा पहुँचा जब हाट पर
देखा तो सच में वही थी आई।
मचा जनता में हाहाकार चहुँ ओर पर
महंगाई तू सताने गरीब को आई।
भोजन बना दो बूँद तेल व बिना टमाटर
लस्सी महँगी छाछ महँगा दूध बिना मलाई।
महँगा हुआ डीजल पेट्रोल भी पहुँचा सबसे ऊपर
तब हर घर नें सड़कों पर साइकिल दौड़ाई।
रेल महँगी बस भी महँगी खुद की टैक्सी छोड़कर
रुका जीवन वहीं जाकर जब वो चौखट पर आई
मचा जनता का हाहाकार चहुँ ओर पर
महंगाई सताने तू गरीब को आई।

देश क्या विदेश भी झकझोरा तूने ही डराकर
अमरीका का बाजार महँगा चालीस बरस की महँगाई।
रक्षा, ऊर्जा, कोयला महँगा शरम करो रूपया गिराकर
हाय महँगाई तू पकड़ न आई कौन तुझे लगाम लगाई।
रिजर्व बैंक ने मोर्चा खोला ब्याज दरे बढ़ाकर
देश क्या विदेश सभी ने ये तरकीब अपनाई।
तब शेयर बाजार का भालू चिल्लाया जोरकर
बोरा बिस्तर समेट सब एफपीआई तब वापस जाई।
सरकार का खुला मोर्चा चारों ओर जोर पर
महँगाई अब तू भाग न पाई ये सरकार तुझे गिराई।
पैर फैलाया इसने तब जाकर लंका कब्जा कर
चारों तरफ वहाँ महँगाई इसने तो सरकार गिराई।
मचा जनता का हाहाकार चहुँ ओर पर
महंगाई तू सताने गरीब को आई।

काकोरी काण्ड

शदानन्द कुमार चटर्जी
सेवानिवृत्त कार्मिक



जब दो वीर क्रान्तिकारी प्रजातन्त्र संघ की ओर से प्रकाशित इशतहार को लेकर बंगाल पहुंचे। दोनों स्वतन्त्रता सेनानी शचीन्द्रनाथ सान्याल बांकुरा में गिरफ्तार कर लिये गये। वह इशतहार अपने किसी साथी को पोस्ट करने जा रहे थे। योगेशचन्द्र चटर्जी कानपुर में पार्टी की मीटिंग करके जैसे ही हावड़ा स्टेशन पर ट्रेन से उतरे कि एच.आर.ए. के संविधान की ढेर सारी प्रतियों के साथ योगेश चन्द्र चटर्जी को पकड़ लिया गया और उन्हें हजारी बाग जेल में बंद कर दिया गया। दोनों मुख्य कार्यकर्ता के गिरफ्तार हो जाने से राम प्रसाद बिस्मिल पर उत्तर प्रदेश के साथ ही बंगाल के क्रान्तिकारी सदस्यों का उत्तरदायित्व भी आ गया। पार्टी के कार्य हेतु रुपये पैसों की सख्त जरूरत पहले भी थी किन्तु अब समय के मुताबिक-और भी अधिक रूपयों की आवश्यकता पड़ गयी। कहीं से कोई जुगाड़ नहीं हो पा रहा था। 8 अगस्त को राम प्रसाद बिस्मिल के घर पर हुई एक मीटिंग में निर्णय लेकर योजना बनी। अगले दिन 9 अगस्त सन् 1924 को शाहजहांपुर रेलवे स्टेशन से बिस्मिल के नेतृत्व में दस लोग, जिनमें शाहजहांपुर से बिस्मिल के अतिरिक्त अशफाक उल्ला खाँ, मुरारी शर्मा, बनवारी लाल, राजेन्द्र लाहिड़ी, सचीन्द्रनाथ बख्शी, केशव चक्रवर्ती, चन्द्रशेखर आजाद, मन्मथनाथ गुप्त, मुकुंदी लाल इत्यादि क्रान्तिकारी सहारनपुर लखनऊ पैसंजर रेलगाड़ी से सवार हुये।

इन क्रान्तिकारियों के पास पिस्तौल के अतिरिक्त जर्मनी के बने चार माउज़र भी थे। इन माउज़रों की मारक क्षमता भी अधिक थी। लखनऊ से पहले काकोरी रेलवे स्टेशन पर रुक कर जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ी, क्रान्तिकारियों ने चेन खींचकर उसे रोक लिया और गाड़ी के डिब्बे से सरकारी खजाने का बक्शा नीचे गिरा दिया। बक्शे को पहले खोलने की कोशिश की गयी लेकिन जब वह नहीं खुला तो अशफाक उल्ला खाँ ने अपना माउज़र मन्मथनाथ गुप्त को देकर हथौड़ा से बक्शे को तोड़ने में जुटे और अपने फौलादी हाथों से बक्शे को आखिरकार तोड़ ही दिया। अशफाक के तिजोरी तोड़ते ही सभी ने उनकी फौलादी ताकत का नज़ारा देखा। यदि तिजोरी कुछ देर और न टूटती तो लखनऊ से पुलिस आर्मी आ जाती तो मुकाबले में कई जानें जा सकती थी। काकोरी काण्ड भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों द्वारा ब्रिटिश राज के विरुद्ध भयंकर युद्ध छेड़ने का खतरनाक इरादा था। हथियार खरीदने के लिए ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लेने की एक ऐतिहासिक घटना थी।

बाद में खुफिया प्रमुख खान बहादुर तसदुक हुसैन ने पूरी छानबीन और तहकीकात करके जैसे ही इस बात की पुष्टि की कि काकोरी काण्ड ट्रेन डकैती क्रान्तिकारियों का एक सुनियोजित षड़यन्त्र था, पुलिस ने काकोरी काण्ड के सम्बन्ध में जानकारी देने व षड़यन्त्र में शामिल किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करवाने के लिए इनाम की घोषणा के साथ इशतहार सभी मुख्य स्थानों पर लगा दिया।

पुलिस छानबीन करती रही। फिर बिस्मिल के साक्षीदार बनारसी लाल से मिलकर पुलिस ने इस डकैती का सारा भेद प्राप्त कर लिया। पुलिस को यह भी पता चल गया कि 09 अगस्त 1924 को शाहजहांपुर से राम प्रसाद बिस्मिल की पार्टी के कौन-कौन लोग शहर से बाहर गये थे। जब खुफिया तौर से इस बात की पूरी पुष्टि हो गयी तो 26 सितम्बर 1924 की रात

में बिस्मिल पर पूरे हिन्दुस्तान से खजाना लूटने तथा मुसाफिरों की हत्या करने का मुकदमा चलाया गया जिसमें राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह को मृत्युदण्ड (फांसी की सजा) दी गयी एवं अन्य 16 क्रान्तिकारियों को कम से कम चार वर्ष की सजा से लेकर अधिकतम काला पानी (आजीवन कारावास) तक का दण्ड दिया गया। चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये।

काकोरी काण्ड के वीर क्रान्तिकारियों के नाम इस प्रकार हैं :

सर्वप्रथम राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफाक उल्ला खाँ मुख्य रूप से थे।

(1) योगेशचन्द्र चटर्जी (2) प्रेम कृष्णा खन्ना (3) मुकुन्दी लाल (4) विष्णु शरण (5) सुरेशचन्द्र भट्टाचार्या (6) रामकृष्णा खत्री (7) मन्मथनाथ गुप्त (8) राजकुमार सिन्हा (9) ठाकुर रोशन सिंह (10) राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी (11) गोविन्द धरकार (12) राम दुलारे त्रिवेदी (13) रामनाथ पाण्डेय (14) सचीन्द्रनाथ सान्याल (15) भूपेन्द्रनाथ सान्याल (16) प्रणवेश कुमार चटर्जी इत्यादि।

इस प्रकार काकोरी काण्ड के अमर स्वतन्त्रता सेनानियों ने हंसते-हंसते फांसी के फन्दों के बीच अपने प्राण त्याग दिये। उनका यह वास्तविक बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जायेगा। इन वीर क्रान्तिकारियों को सारा हिन्दुस्तान हमेशा याद करता रहेगा।

“शकृफ़दोशी की तमन्ना अब हमादे दिल में है
देखना है, जोद कितना बाजु-ए-कातिल में है”

माँ का भाग्य

शुष्मिता चटर्जी

पुत्री श्री सदानन्द कुमार चटर्जी



माँ का भाग्य सदैव संघर्षपूर्ण ही होता है चाहे वो आपकी और हमारी माँ हो चाहे वो हम सब की भारत माँ हो। भारत माँ के आँचल में सदैव खून की नदियाँ बही चाहे वो मुगलो का राज हो, अंग्रेजों का राज हो या कुछ लोगों का क्रूर और अत्याचारी राज हो। आज हमारे मस्तिष्क में ये धारणा डाली जा रही है, कि हर चीज़ का हल लड़ाई ही है और उसी से भारत का भला है परन्तु ऐसा नहीं है। किस माँ को यह देखकर खुशी मिलेगी कि उसके बच्चे आपस में लड़कर मर जाएं बल्कि माँ तो यह चाहेगी कि उसके बच्चों में एकता हो और वह साथ मिलकर हर संघर्ष का सामना करे। परन्तु आज के इस दौर में तो मानो एकता जैसे शब्द का अस्तित्व ही नहीं है। लोगों के मन में नकारात्मकता ने विजय प्राप्त कर ली है। नफरत का बीज इस कदर बोया गया है कि अब वो जहरीले फल दे रहा है। आजकल व्यक्ति अपने सुख से सुखी नहीं है बल्कि पड़ोसी के दुख से सुखी है। यदि हमने अपने आप को आज नहीं सुधारा तो इतनी देर हो जाएगी कि आगे हम चाह कर भी कुछ नहीं कर पायेंगे।

क्या 'गांधी जी' भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में एक अतिशयोक्तिपूर्ण विषय हैं ?

यशांश कृष्णा पुत्र स्वदेश शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



अगर हम भारतीय इतिहास के संदर्भ में इस विषय पर निकटता से प्रकाश डालें तो स्वतंत्रता इतिहास में 'गांधी जी' वास्तव में 'अति महिमामंडित' नहीं हैं। हालांकि गांधी जी के खिलाफ 'मुस्लिम समर्थक', 'राजनीतिक सनकी', 'विभाजन का कारण' आदि जैसे कई आरोप हैं, जो कुछ हद तक किसी ऐसी चीज पर आधारित हैं जिसे हम स्पष्ट रूप से 'गोडसे की विचारधारा' कहते हैं। मेरे परिप्रेक्ष्य में, मैं इसका विरोध करता हूँ क्योंकि गांधी जी ने स्वतंत्रता प्राप्ति में एक बड़ी भूमिका निभाई थी। मेरी राय में, स्वतंत्रता प्राप्ति मुख्य रूप से दो प्रमुख घटनाओं पर आधारित थी:

(क) राष्ट्रवाद की भावना का निर्माण

(ख) स्वतंत्रता संग्राम

गांधी जी ने राष्ट्रवाद की भावना के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाई। राष्ट्रवाद का अर्थ है देश और उसके नागरिकों के बीच एकता और सामूहिक पहचान की भावना। भारत में इस भावना का पूर्ण रूप से अभाव था क्योंकि अन्य देशों की तरह भारत भी कई प्रांतों में विभाजित था। प्रांतों में 'भारत' के संबंध में कोई देशभक्ति नहीं थी, बल्कि वे केवल अपने प्रांत तक ही सीमित थे। यह वास्तव में 1857 के विद्रोह की विफलता में देखा गया क्योंकि हमारे विभिन्न प्रांतों के प्रशासक एकजुट नहीं थे और राष्ट्रीय भावनाओं से जुड़े नहीं थे। इस कारण अंग्रेजों के लिए उन्हें हराना आसान हो गया।

गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन (जब पहली बार हिंदू और मुसलमान एकजुट हुए थे), असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि द्वारा भारतीयों के बीच एकता और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य भले ही स्वतंत्रता प्राप्ति था लेकिन इसने देशवासियों में राष्ट्रीय एकता के भावना को भी प्रबल किया तथा उन्हें ये महसूस कराया कि वे कई मायनों में एक समान हैं।

मेरी राय में, गांधी जी की तुलना सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह आदि से करते हुए उनके खिलाफ छात्रों को पढ़ाया जाने वाला तथाकथित 'इतिहास' स्वयं में निराधार है, क्योंकि ये लोग स्वतंत्रता संग्राम की ओर अधिक झुकाव रखते थे जबकि गांधी जी का मुख्य उद्देश्य भारतीयों को एकजुट करना था। मैं इस बात से भी सहमत हूँ कि गांधी जी को सच्चा 'स्वतंत्रता सेनानी' भी कहा जाना चाहिए।

सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह आदि के बारे में धारणा है कि उनके प्रयास गांधी जी की तुलना में अधिक प्रभावी रहे क्योंकि उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया। लेकिन सत्य यह भी है कि उन सभी प्रयास का तब तक कोई अर्थ नहीं था जब तक कि भारतीय उनके प्रयासों को स्वयं के लिए महसूस नहीं करने लगे। ऐसा होना व्यावहारिक रूप से असंभव था यदि गांधी जी ने राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास नहीं किया होता तथा पुनः 1857 की तरह इतिहास को दोहराया जाता। जरा सोचिए कि एक बच्चा कैसे सफल होगा यदि उसे अपने परिवार से कोई समर्थन नहीं मिल रहा हो। उसके द्वारा किए गए सभी प्रयास निष्फल ही होंगे यदि उसे माता-पिता का सहयोग ही न मिले।

इसलिए जब भारतीय एकजुट हो गए तो अंग्रेज वास्तव में ढीले पड़ गए और हमें सुभाष चंद्र बोस के उचित प्रयासों से जर्मनी, जापान आदि से अंतर्राष्ट्रीय समर्थन मिला, जो भारत के लिए एक जीत की स्थिति बन गई। इसलिए जब हम तर्कसंगत रूप से सोचना शुरू करते हैं तो गांधी जी पर तरह-तरह के आरोप लगाना अपने आप में अनुचित है। चूंकि इनमें से अधिकांश आरोप काल्पनिक एवं आधारहीन स्रोत पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए: - यह जानते हुए कि मुख्य रूप से मुसलमानों को हिंदुओं के खिलाफ भड़काने के लिए जिन्ना जिम्मेदार थे, गांधी जी को विभाजन का कारण बताया जाता है।

इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर हूँ कि यद्यपि गांधी जी को 'स्वतंत्रता सेनानी' कहना न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता, किंतु उन्हें एक सच्चा राष्ट्रवादी कहना पूरी तरह से सत्य होगा। ठीक उसी तरह जैसे यूरोपीय इतिहास में ग्यूसेप मैज़िनी की भूमिका है।

(गांधी जी के बारे में ये मेरे निजी विचार हैं तथा पूरी तरह से मेरी समझ और दृष्टिकोण पर आधारित हैं।)

प्रतीक्षा

सूनी कुटिया में दीप जलाकर
पथ में पलक बिछाये शांत और निःशब्द निशा में
बैठी अलख जगाए
प्रातः की ऊषा ने रोका तुमको
या संध्या ने रोक लिया आने से
अम्बर की चपला ने रोका तुमको
या रजनी ने थाम लिया आने से

पल पल प्राणों का दीप जला कर
पथ में पलक बिछाये
शायद इस निर्जन रजनी में
तुम्हें याद आ जाए
कलियों के बूँघट में उलझे क्या तुम
या किसी लतिका ने राह रोकी पथ पर
भ्रमरों की गुन गुन में खोए क्या तुम
या प्रवैया ने भ्रमित कर दिया पल में

मन वीणा के तार संजोए
स्वर, लहरी, तुम्हें बुलाएं
आओ तुम अब इस बार
शायद यही कोई कह जाए
शांत और निःशब्द निशा में
बैठी अलख जगाए



हीपिका पाण्डे
सहायक पर्यवेक्षक

भू-सुर

विनय कपूर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



आज मानव को ज्ञान से मतलब नहीं रह गया है। मात्र धन से ही जीवन की समस्त आवश्यकताओं और उद्देश्यों की पूर्ति करने की उसकी संकीर्ण सोच और मानसिकता बन चुकी है। आखिर यह जीवन क्या है? यह किसलिए मिला है? यह जीवन हमें किसने और क्यों दिया है? इसे जानने के लिए ज्ञान का अभिप्राय क्या है? क्या मात्र धनोपार्जन करना ही जीवन का अभिप्राय है अथवा धनोपार्जन के साथ-साथ ज्ञानोपार्जन की भी महती आवश्यकता है? हमारे ऋषियों-मुनियों ने वेदों, उपनिषदों, ग्रंथों आदि की रचना किस उद्देश्य से की है? इतने ज्ञान की पुस्तकों का सृजन करने का आखिर उनका कोई तो उद्देश्य रहा होगा? दुख की बात है कि इन सब बातों से आज मनुष्य का कोई ताल्लुक नहीं रह गया है।

भारत कभी ज्ञान के क्षेत्र में विश्वगुरु था। यहां सभी देशों से ज्ञान अर्जन के लिए ज्ञान पिपासु आते थे। यहां की देव-संस्कृति विश्व में सिरमौर थी। यहां के निवासी को भू-सुर कहा जाता था। भू का अर्थ धरती और सुर अर्थात् देवता। गुण, स्वभाव, आचरण, चिंतन, कर्म, रहन-सहन उच्चकोटि के थे। सभी नियमपूर्वक देव उपासना करते थे, लेकिन आज अधिकांश लोग पूजा श्रीराम की करते हैं, परन्तु उनका आचरण रावण की तरह देखा जाता है। श्री कृष्ण की पूजा करते हैं, पर उनका आचरण कंस की तरह होता है। मां दुर्गा की पूजा करते हैं, पर उनका आचरण महिषासुर, शुंभ-निशुंभ की तरह देखा जाता है। अर्थात् भगवान की पूजा करते हैं और आचरण दानव जैसा करते हैं।

कागज

जैसे ही बच्चा थोड़ा समझदार होता है, वह कागज के संपर्क में आ जाता है। अखबार, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि के साथ खेलने लगता है। कागज हर बच्चे के बचपन का वह खिलौना है जिसे खिलौना कभी माना ही नहीं जाता। कागज बच्चे से लेकर बड़ों को जीवन की अमूल्य सीख देता है। जब बच्चे बारिश में कागज की कश्ती बहाते हैं तो उनकी सोच को विस्तार मिलता है। जब वे कागज को हवाई जहाज का रूप देते हैं तो उनके सपनों में पंख लग जाते हैं। और जब कागज फूलों का रूप लेते हैं तो वे उनके तन-मन को प्रफुल्लित कर देते हैं। अब कागज की अधिकतर वस्तुएं डिजिटल होती जा रही हैं जैसे ई-बुक, ई-अखबार, ई-पत्रिकाएं आदि। बेशक इन सबसे ज्ञान तो बराबर मात्रा में प्राप्त होता है लेकिन जो आनंद पुस्तकों के पन्ने पलटने में, कॉपी पर चित्र बनाने में है, वह कहीं नहीं। कागज ही हर बच्चे की पहली पाठशाला होता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जो बच्चे कागज के अधिक संपर्क में रहते हैं, उसके माध्यम से तरह-तरह के कार्य करते हैं, ऐसे बच्चों का मानसिक विकास तेजी से होता है। ऐसे बच्चों का आगे चलकर महान लेखक, चित्रकार और कलाकार बनने की संभावना ज्यादा रहती है।

धू-धू कर देखो रेल जली

अश्वितेश कुमार धुविया
एम.टी.एस.



जब चाहा तब जला दिए,
जब चाहा तब चला दिए,
मैं रेलगाड़ी पूछती आपसे,
बोलो मेरा कब भला किए?

याद करो लॉकडाउन के पल,
जब घिस रहे थे तुम्हारे चप्पल,
नहीं समझी जब किसी ने मज़बूरी,
नाप रहे थे तब पैदल मीलों की दूरी,
तब रोते थे हर रोज़ मुझे कर के याद,
और मिलने पर आज मुझे ये सिला दिए,
मैं रेलगाड़ी पूछती आपसे,
बोलो मेरा कब भला किए?

पटरियों पर चुपचाप खड़ी रहती हूँ,
धूप बरसात सब कुछ सहती हूँ,
दिन रात दौड़ते ही रहती हूँ,
फिर भी न रहम दिखाते हो तुम,
जब चाहा तब थूक दिए,
जब चाहा तब फूंक दिए,
मैं रेलगाड़ी पूछती आपसे,
बोलो मेरा कब भला किए?

लंबी-लंबी तुम्हारी यात्रा की दूरी,
दौड़ते-हांफते मैं हमेशा करती पूरी,
कभी ले जाती ईलाज कराने,
कभी ले जाती तुम्हें सैर कराने,
पर निकले तुम तो आस्तीन के सांप,
आज पीठ पीछे छुरी चला दिए,
मैं रेलगाड़ी पूछती आपसे,
बोलो मेरा कब भला किए?

इसलिए न कि मैं हूँ संपत्ति सरकारी,
नहीं हूँ तुम्हारे घर की जिम्मेवारी,
तो उतार लो मुझ पर गुस्सा अपना,
लेना थोड़े न है मुझ पर हिस्सा अपना,
न ही कभी मेरा हाल-समाचार लिए,
न ही आ कर कभी शिकवा गिला किए,
मैं रेलगाड़ी पूछती आपसे,
बोलो मेरा कब भला किए?

और सुनो,
जला दो, मार दो, दिन-दहाड़े,
ले लो जालिमों तुम प्राण हमारे,
अस्थि-पंजर एक एक कर तोड़ दो,
या कोई जिंदा बम ही मेरे अंदर फोड़ दो,
मुझे तुम लोगों से कोई शिकायत नहीं करना,
हां लेकिन एक जरूरी बात है कहना,
अपने बच्चों की पाठ्य पुस्तिका में अब न कहना,
'छुक-छुक देखो रेल चली, बल्कि कहना,
'धू-धू कर देखो रेल जली '

घनघोर घटा

चन्द्रशेखर यादव
डी.ई.ओ.



मत गरज-तरज, मत उमड़-घुमड़,
चुपचाप बरस जा ओ मेघा।
कागज कश्ती यारी-दोस्ती,
तेरी जुर्रत तू डूबा देगा।
न धुल पाएगा तू वादों को,
उन यादों को उन ख्वाबों को।
बनता जो बहुत है दिलवाला,
संसार भ्रमण है कर डाला।
लौटा दे मेरे बचपन को,
उन चाहत को उन यौवन को।

क्या तेरी घुड़क न आह है ये,
बिछड़न की कराह है ये?
जेठ की ताप से दूर हुआ,
धरती से मिलने की चाह है ये?
धरती भी तब से प्यासी है,
जब गया तभी से उदासी है।
मेरे जैसा फिर तू भी है,
श्यामल निश्छल मनमौजी है।
जो छूट गई जो रूठ गई,
धरती फिर मिलनी मुश्किल है।

चाहत की कोई थाह नहीं,
है संतोष तो कोई चाह नहीं।
जो मिला उसी में सब्र तू कर,
जो छूटा उसका जिक्र न कर।
घनघोर घटा चहुं ओर बरस,
तपती धरती को शीतल कर।
दो चाहत को तू तृप्त करे,
मिलो दोनों जैसे रिक्त न थे।
मिल दोनों संग उद्योग करो,
धरती हरियाली से भर दो।

क्या धरती से उकताया था,
आजादी को अकुलाया था।
नभ में दर-दर था तू फिरता,
मन तेरा कभी न स्थिर था।
आकाश में घूमे तू बेमन,
बिछड़न से था वह सूनापन।
जो धनुष उगी सतरंगी है,
मिथ्या है वो मृग-तृष्णा है।
तेरी चाहत तेरा वजूद,
प्यार तेरा बस धरती है।

बिछड़ा पर तू खुश-किस्मत है,
फिर पा लेगा जो चाहत है।
दुनिया में बिछड़े बहुत यहां,
पर पुनर्मिलन ना फितरत है।
सब ताप नहीं सह पाते हैं,
तुझ जैसे जुदा हो जाते हैं।
वापस आना नामुमकिन उनका,
बस यादों में रह जाते हैं।
जब तू आसमान में आता है,
वे यादों में आ जाते हैं।
तुझ जैसा मिलना न उनका,
पर कुछ खुशियां पा जाते हैं।

न गरज-तरज न उमड़-घुमड़,
चुपचाप बरस जा.....

“कुछ लोगों को बाढ़िश महशूस होती है
दृसदे बस भीग जाते हैं।”
बॉब मार्ले



विजय श्रीवास्तव
(चिन्तावे बिस्मिल)
लेखापरीक्षक

कुम्भ पर्व के दौरान मौनी अमावस्या (02 फरवरी, 1954 दिन मंगलवार) के स्नान के दिन को मची भगदड़ में सैकड़ों लोगों की मौत हुई थी। इस दुर्घटना पर कवि बिस्मिल की ये पंक्तियां बहुत मार्मिक हैं।

कुम्भ दुर्घटना

ऐ इलाहाबाद ए शहरे लबे गंगोजमन
आज दामन में तेरे कैसी है जोश जन
सर में सौदा, शौक आखो में, लिए दिल में लगन
गोशे गोशे से वतन के जम्मस है अहले वतन
कुम्भ के स्नान की ऐसी फिजा गरमा गयी।
चार जानिब से उलट कर सारी दुनिया आ गयी।
भीड़ ऐसी जैसे था हंगामा ये महसर बरपा
जोश ऐसा जैसे एक तूफान था बढ़ता हुआ
खींच तान ऐसी कि जैसे जंग का मैदान था
जिन्दगी ऐसी कि जैसे मौत का था सामना
जैसे जैसे पास संगम की जमीं आती गयी
वैसे वैसे नाव अरमानों की टकराती गयी
जिस जगह पर जो खड़ा था वह वहीं का हो गया
डगमगाए पांव जिसके वह जमीं का हो गया
वह अमावस जिस पर हिन्दू कौम थी जी से निसार
वह अमावस जिसका मुद्दत तक हुआ था इंतजार
वह अमावस जिसकी खातिर था जमाना बेकरार
वह अमावस सौ बहारों का था जो राहे बहार
उस अमावस का महातम वजहे मातम हो गया।

हाय क्या जश्ने मुसरत बाय गम हो गया।।
था किसी को रंज दामन धर्म पत्नी का छूटा
थी सुहागिन पीटती सर मांग का सिंदूर गया
दम बखुद माताएं थीं खुद खून बच्चे का किया
और औलादों को गम था सय्य पिदरी उठा
यों तो कसरत से हर एक फर दो बशर ही साफ था।
हसरत ऐसों पर कि जिनका घर का घर ही साफ था।।
रोइए किस-किस को किस-किस के गम में शिरकत कीजिये
कोसिये किस किस को किस-किस की शिकायत कीजिये
हो मुसीबत एक तो शरहे मुसीबत कीजिये
किस की इज्जत कीजिये किस की मजम्मत कीजिये
अपना तीरथ अपने साधू-संत अपना ठाट बाट।
अपना राजा अपनी परजा और अपना राज पाट।।
मरने वाले हो भी तो गम हो तुम्हे किस बात का
वादिये गंगो जमन बैकुंठ का है रास्ता
खाक में संगम की मिलकर तुमको वह रुतबा मिला
आदमी तो आदमी कुर्बान जिस पर देवता
आने वाले जब भी इस राह पर फिर आएंगे
चार आंसू इस समाधी पर बहाते जायेंगे

श्मशान घाट में शादी

उमेश कुमार पटेल
एम.टी.एस.



पच्चीस वर्ष का एक नवजवान लड़का जिसने अभी जिन्दगी को देखा भी न था, जिन्दगी से तंग आकर आत्महत्या करने चला। माँ-बाप, भाई-बहन, यार-दोस्त छोड़कर, रेलवे स्टेशन पर जा पहुंचा। प्लेटफार्म के सीढ़ान चलते-चलते चबूतरे से उतरकर करीब एक किलोमीटर और चला। अब उसने अपने आपको सुरक्षित समझा और वहीं रुक गया, गाड़ी आने वाली थी। थोड़ी देर से मन में एक तूफान सा उठा हुआ था। काश! गाड़ी समय से पहले आ पहुंचे अभी इसी वक्त, उसने सोचा। हर पल पहले से भी भारी लग रहा था।

अरे! ये कौन आ रही है? अचानक इतनी रात? एक अकेली सयानी लड़की, ऐसी जगह? कहीं वो जासूस तो नहीं? कहीं उसे मेरे इरादों का पता तो नहीं चल गया? लड़के ने सोचा तब तक लड़की कुछ और पास आ गयी। मात्र एक गज के फासले पर खड़ी हो गई। वे एक दूसरे को देखने लगे। रुक-रुक कर कभी अचरज होकर, कभी कौतूहलवश, कभी आशंका से, कभी एकाकीपन से एक दूसरे को देखते और पुनः मुंह फेर लेते जैसे कि एक दूसरे से कोई मतलब ही नहीं। पूर्णिमा की रात एकान्त में एक सयानी लड़की, वाह! कितनी प्यारी लग रही है। लड़के ने सोचा क्या यह चाँद का चमत्कार है, लड़की बहुत सुन्दर तो नहीं थी मगर लड़के को जन्नत की हूर लग रही थी। वाह कितनी सुन्दर! जैसे स्वर्ग लोक से सीधी उतर आयी हो, जैसे राजकन्या महल त्याग कर चली आयी हो, जैसे कोई भारतीय नारी हो जिसे अभी भी पश्चिमी हवा ने स्पर्श न किया हो। बिल्कुल वैसा, जैसा उसने नहीं बल्की वो किसी और के लिए, किसी और के गम से यहाँ आया फिर इस लड़की के बारे में क्यों सोचें। तमाम चिंतायें उसे एक साथ सता रही थीं। कभी-कभार सोच से बेचैन होता तो कभी सोच में डूब जाता। अचानक उसके मन में ख्याल आया कि कहीं उस लड़की की हालत भी उस जैसी तो नहीं है। उसने साहस जुटाकर उससे पूछ ही लिया। आप यहाँ पर इतनी रात अकेली क्या करने आयी हैं। चुप थी वो, कुछ देर चुप रहकर फिर बोली-

‘यह सवाल तो मैं भी आपसे कर सकती हूँ’ लड़का संकट में पड़ गया। उसने सोचा, क्या पता कोई जासूस न हो, खैर जासूस भी अगर हो तो क्या, देखा जायगा, लड़के ने कहा ‘आत्म हत्या करने’

‘क्यों?’ चौक कर पूछी

‘तंग आ गया मैं अपनी जिन्दगी से’।

‘क्यों?’ उत्सुकता से पूछी

‘एक लड़की जिसे मैं बेहद चाहता था, जिसके साथ जिन्दगी भर रहने का सपना देख रहा था, दगा दे गयी मुझे’

‘क्यों?’ गम्भीरता से पूछी।

‘क्या पता क्यों दगा दिया। चली गई एक अमीर बिजनेसमैन के बेटे के साथ। उसने शादी कर ली बिना बताए’,

‘क्या?’ बिना बताए? लड़की हंस पड़ी और फिर बोली ‘तो क्या यदि वो बताकर जाती तो आप दुःखी न होते?’

‘हाँ उसको कम से कम बताकर जाना चाहिए था। उसने मुझे दगा दिया। क्या मैं इन्सान नहीं हूँ? क्या मेरा दिल, दिल नहीं है? क्या मेरे दिल को ठेस नहीं पहुंची? क्या मैं इतना तुच्छ हूँ? धिक्कार है मुझको अपने आप पर। मैं यह दुख बर्दाश्त नहीं कर पा रहा। मेरा कलेजा फटा जा रहा है। सोच-सोच कर मैं पागल हो रहा हूँ। मुझे इक पल भी जीने की इच्छा नहीं हो रही है। लड़का काफी जोश में आ गया अपनी बातें कहते कहते। फिर खमोशी छा गई थोड़ी देर के लिए, फिर लड़के ने कहा ‘आप बताइए आप क्यों आयी हैं?’ दोनों खमोश खड़े एक दूसरे को देखते रहे, फिर लड़की ने कहा

‘कैसे कहूँ?’ चुप हो गई वो लड़के ने कहा ‘मरने के पहले मैंने अपना समझकर अपनी मन की बातें कह दी। अब तुम भी अपनी बाते कहो।’

तुम शब्द सुनकर लड़की एक दम चौंक उठी, जैसे जोरों से बादल गरजा हो, एक नवजवान जो कई मिनट पहले अपरिचित था अब कितना अपना लगने लगा, वो बोल पड़ी, ‘मैं पढ़ी लिखी हूँ। मेरे पिताजी साधारण नौकरी करते थे, रिटायर हो चुके हैं, वो काफी बीमार हैं, सारे रुपये उनकी बीमारी पर खर्च हो गये। मेरी शादी में दहेज देने के लिए उनके पास रुपये नहीं हैं। उन्हें दिन-रात मेरी शादी की चिन्ता रहती है। मुझे देखकर वे अक्सर रो पड़ते हैं। मेरे मर जाने के बाद कम से कम वे शांति से मर तो पायेंगे। उन्हें कैंसर है। यह कहकर लड़की फूट-फूट कर रोने लगी। बातों ही बातों में फासला न जाने कब घटकर मात्र एक हाथ का रह गया था, पता ही न चला। लड़के ने अपने हाथों से उसके आँसू पोंछ दिये और उसे सीने से लगा लिया। दो मिनट बाद आलिंगन समाप्त हुआ। इतने में इंजन की आवाज सुनाई पड़ी। गाड़ी की लाइट चमकने लगी। दोनों की मौत बहुत समीप थी। गाड़ी चली आ रही थी। तीव्र गति से आवाज आ रही थी - हट हट, सावधान ह... ट...

लड़के ने पूछा ‘दरअसल क्या तुम आत्महत्या करोगी?’ ‘तुम?’ लड़की ने पूछा। लड़के ने उत्तर दिया ‘तुम जो मिल गई’ लड़के ने पुनः उसे सीने से लगा लिया। कई मिनट तक दोनों हिले नहीं, गाड़ी निकल गई, दोनों खड़े थे।

गाड़ी में सवार लोगों ने उस नवदम्पति का मधुर मिलन देखा।

गाड़ी निकल जाने के कुछ देर बाद दोनों एक दूसरे की हथेली पकड़कर धीरे-धीरे प्लेटफार्म पर पहुँचे। चबूतरे पर पैर रखते ही देखा कि दो खाकी वर्दी वाले खड़े हैं। एक ने आगे बढ़कर लड़के से कहा- ‘तुम सुसाइड नोट छोड़कर आये थे, तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है।’ लड़की बोली- ‘हम दोनों की शादी हुई है, अभी-अभी।’ बात को बीच में काटकर पुलिसमैन ने कहा- ‘तब तो आपको भी पुलिस स्टेशन चलना पड़ेगा।’

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth and Public Interest

“हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है
जिसने मात्र विदेशी होने के कारण
किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।”

- राजेंद्र प्रसाद



कमला शंकर मिश्रा
सहायक पर्यवेक्षक

सबसे अच्छा पुत्र

पिता और गुरु के ऊपर यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी आती है कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उनके दोष देखकर उन्हें डांटते रहे, बचपन की थोड़ी सी कठोरता उनके भविष्य में शहद का मिठास घोल देगी। अधिक प्यार, अधिक डांट दोनों ही बच्चों के लिए अच्छे नहीं होते।

जैसे बड़े-बड़े जंगलों में केवल एक ही वृक्ष ऐसा होता है जिसकी खुशबू से सारा जंगल महक उठता है, इसी तरह से नेक और बुद्धिमान औलाद केवल एक ही हो तो ऐसी औलाद सैकड़ों बुद्धिहीन बेटों से भी अच्छी होती है। यदि सन्तान पागल एवं चरित्रहीन निकल जाये तो उससे पूरा खानदान बदनाम हो जाता है। इसलिए नेक और बुद्धिमान औलाद एक ही अच्छी है, कम से कम औलाद के दुःख का बोझ तो उस पर नहीं होता।

एक ही विद्वान व अच्छा कर्म करने वाले पुत्र से सारे खानदान का नाम रौशन हो जाता है। ऐसी नेक औलाद वैसे ही होती है जैसे-चाँद के प्रकाश से सारा संसार जगमगा उठता है।

“माँ बाप को दुःख देने वाले बहुत से पुत्रों से क्या लाभ।” पुत्र यदि एक ही हो, योग्य हो और माँ-बाप की सेवा करे, उनके बुढ़ापे का सहारा बने, तो वही सबसे अच्छा होता है।

देवी वन्दना

जै जग तारिणी, सितार बजाने वाली।
तेरे दरबार में, भरती है झोलियां खाली।।

तुम्हीं हो आदि शक्ति, अम्बे कहलाने वाली।
तुम्हीं हो दुर्गा चण्डी, तुम्ही हो माता काली।।
तुम्हीं जगत में अमर ज्योति जलाने वाली।
तुम्हीं भक्तों की मैया, लाज बचाने वाली।
तेरे दरबार में, भरती है झोलियां खाली।।

33 कोटि देव माँ तेरे गुण गाते हैं।
हरि हर विरंच शीश आपको झुकाते हैं।।
हजारों भक्त माँ, दर्शन के लिए आते हैं।
फूल, नारियल, चुनरी, भेंट, माँ चढ़ाते हैं।।
रण में दुश्मन के छक्के छुड़ाने वाली।
तेरे दरबार में, भरती है झोलियां खाली।।

महिषासुर मर्दनी माँ, महिषासुर का नाश किया।
कैकेयी मत फेर, राम को बनवास दिया।।
बन्दर भालू जा करके राक्षस को हताश किया।
भक्त के कण्ठों पर माँ हमेशा वास किया।।
धन्य हो माँ तू, लेखनी को लिखाने वाली।
तेरे दरबार में, भरती है झोलियां खाली।।

विज्ञापन की दुनिया

मनोज कुमार शोतकर
सहायक पर्यवेक्षक



आज के अर्थप्रधान दुनिया में विज्ञापन का योगदान अहम हो गया है। उत्पादों को जन-जन तक पहुंचाने और उनकी महत्ता बताने में विज्ञापन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये विज्ञापन जहां एक ओर टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले ज्यादातर कार्यक्रमों के आर्थिक स्रोत होते हैं, वहीं दूसरी ओर ज्यादातर अभिनेताओं अथवा प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के लिए अच्छी आमदनी के स्रोत भी होते हैं। पान मसाला से लेकर दवाओं, कपड़ों, वाहनों और अन्य उत्पादों का विज्ञापन करने के लिए इन्हें बड़ी रकम अदा की जाती है। विज्ञापन के वक्त इनका संबंधित कंपनी से करार होता है, जिसमें शर्तों की लंबी सूची होती है। इनमें उत्पाद की उपयोगिता, उसके कंटेंट, वैधानिक स्थिति और उपयोगकर्ता के लिए आवश्यक निर्देश भी लिखित होते हैं। किंतु इन सब प्रावधानों के बावजूद भी देश में विज्ञापनों को लेकर कई प्रकार की आपत्तियां की जाती रही हैं।

चूंकि विज्ञापन में दिख रहा व्यक्ति ख्यातिप्राप्त होता है, इसलिए उसका प्रभाव उपयोगकर्ता पर पड़ना स्वाभाविक है। हर वस्तु के प्रति ग्राहक का विश्वास विज्ञापनकर्ता के साथ सीधा जुड़ा होता है। विश्वास के इस महीन धागे को बुनने के लिए ही व्यापारी वर्ग मोटी कीमतें देकर विज्ञापन कराते हैं। लेकिन इस मोटी कीमत की आड़ में उन्हें उत्पादों की मौलिकता से कई बार समझौता करना पड़ता है। विज्ञापन में दर्शाए गए लाभ अथवा विशेषताएं असलियत में ना के बराबर होती हैं। ग्राहक उत्पाद खरीदने के बाद ठगा हुआ महसूस करता है। उसे लगता है कि वो विज्ञापनकर्ता के विश्वास पर उत्पाद खरीदा था, किंतु विज्ञापन के अनुरूप विशेषता नहीं पाई गई। ऐसे मामलों में पिछले कुछ सालों में तेजी से वृद्धि दर्ज हुई है। उपभोक्ता फोरम में चक्कर काटते लाखों ग्राहकों की समस्या एक जैसी होती है। सवाल ये है कि क्या विज्ञापनकर्ता को इस जिम्मेवारी से मुक्त रखा जाना चाहिए या उत्पाद के प्रभाव को विज्ञापन से मिलान किया जाना चाहिए। एक मांग यह भी है कि विज्ञापनकर्ता को पहले उत्पादों का उपयोग स्वयं करके आश्वस्त हो जाना चाहिए कि उत्पाद का प्रभाव विज्ञापन के अनुरूप ही है।

आजकल प्रसिद्ध अभिनेताओं द्वारा पान-मसाला का विज्ञापन किया जाना चर्चा का विषय बना हुआ है। ये अभिनेता प्रसिद्धि के इस मुकाम पर पहुंचने के बाद भी 'गुड एडवर्टाइजमेंट' तथा 'बैड एडवर्टाइजमेंट' में अंतर नहीं कर पा रहे हैं। पिछले दिनों सोशल मीडिया पर किए गए विरोध के बाद एक बड़े अभिनेता ने कंपनी से अपने विज्ञापन का करार वापस ले लिया, जिसे एक अच्छा कदम माना जा रहा है। लेकिन अभी भी ऐसे कई अभिनेता लगातार गुटखा कंपनियों से मोटी रकम पर करार कर रहे हैं। शरीर पर कई हानिकारक प्रभावों वाले इन उत्पादों का बढ़ा-चढ़ाकर विज्ञापन करना कहीं से उचित प्रतीत नहीं होता। इसके बदले इनके बुरे प्रभावों से जनता को आगाह किया जाना चाहिए। ऐसे उत्पादों पर वैधानिक संस्थाओं की चुप्पी भी कई सवाल खड़ा करती है। विज्ञापन की दुनिया में एक बड़े बदलाव की सख्त जरूरत महसूस हो रही है, जिसमें विज्ञापन का उद्देश्य बिक्री बढ़ाना ना होकर, उत्पादों की सही जानकारी मुहैया कराना और उपभोक्ताओं को



राजेश सिंह पंकज
पर्यवेक्षक

देखा था उस दिन

उस दिन देखा था मैंने
तुम्हारे उस नये रूप को
जहां तुम टकरा रही थी
मानव द्वारा बनाये गये
विधि विधानों से
साथ ही खड़ा था
तुम्हारे हर उस फैसले में
मन में उठे बवंडरों को
आँखों में उम्मीद के आँसू लिए
गर्जना की वाणी में
ललकारते हुए
अपमानित उन औरतों के
हक के लिए
उनकी ताल से ताल देते हुए
अत्याचार के खिलाफ
बोल रही थी तुम
भीड़ से बिल्कुल अलग
सबके अधिकारों को लेकर
सबके आंसुओं को पोछते

उनके हक की लड़ाई लड़ते
देखा था उस दिन मैंने तुमको
न कोई थी मन में घबराहट
ना था कोई शिकन
न थी कोई उलझन
न था कोई डर
न थी जमाने की कोई फिक्क
न थी शुचिता मिट जाने की परवाह
बनके शेरनी टूट पड़ी थी
करने उनका संघार
तोड़ रही थी गुलामी की जंजीरें
तर्क के चाबूक से
कर रही थी वार
काट रही थी
उनके फैलाए जाल
घोर अंधकार में
जला रही थी उम्मीद का दीपक
उस दिन देखा था मैंने
तुम्हारे उस नये रूप को।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 3

कार्यालय की गतिविधियां

स्वास्थ्य शिविर

कार्यालय के प्रथम तल स्थित सरस्वती सभागार में एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमें नारायण स्वरूप अस्पताल के चिकित्सक डॉ. राजीव सिंह ने अपने सहयोगी चिकित्सकों डॉ. बृजेश सिंह एवं डॉ. सुमित राय के साथ उपस्थित होकर प्रोजेक्टर के माध्यम से विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और उनके निदान के बारे में बताया। इस अवसर पर आमंत्रित चिकित्सकों को कार्यालय की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।



सरस्वती सभागार का उद्घाटन

कार्यालय के प्रथम तल स्थित सेमिनार हाल का जीर्णोद्धार एवं सौंदर्यीकरण कर इसे 'सरस्वती सभागार' के रूप में नव-नामांकित किया गया। सभागार में संरचनात्मक बदलाव करते हुए इसकी दीवारों को प्रयागराज से जुड़े ख्यातिप्राप्त रचनाकारों की प्रतिमाओं एवं संक्षिप्त विवरणों से सुसज्जित किया गया। प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा सभागार के मुख्य द्वार पर लगे फीते को काटकर सभागार का उद्घाटन संपन्न किया गया।



तरंग का विमोचन

विभागीय गृह पत्रिका 'तरंग' के 139-140वें संयुक्तांक का विमोचन प्रधान महालेखाकार महोदय, वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया एवं उप महालेखाकार महोदय गण द्वारा संयुक्त रूप से संपन्न किया गया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय ने राजभाषा पत्रिका की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए इसे रोचक एवं लोकप्रिय बनाने हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किए।



सेवानिवृत्ति कार्यक्रम

निष्ठापूर्वक अपनी सेवा अवधि पूर्ण करने के उपरांत सेवानिवृत्त हो रहे विभिन्न अधिकारी व कर्मचारीगण को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्मिकों ने कार्यालय से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया एवं सम्मान हेतु प्रधान महालेखाकार महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) के प्रथम तल स्थित सरस्वती सभागार में दिनांक 08.03.2022 को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा की गई। विशिष्ट अतिथि के रूप में शहर की प्रख्यात चिकित्साविद एवं गैस्ट्रोनोंमी विभाग की संस्थापक चेयरपर्सन डॉ मनीषा द्विवेदी जी उपस्थित रहीं, जिनका स्वागत एवं सम्मान प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा पुष्पगुच्छ तथा उपहार



प्रदान कर किया गया। अपने अध्यक्षीय अभिभाषण के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यालय में महिलाओं की भूमिका एवं समाज की प्रगति में उनके योगदानों पर प्रकाश डाला। प्रधान महालेखाकार महोदय ने बताया कि यदि महिलाओं द्वारा संपादित होने वाले घरेलू कामकाज का मौद्रिक मूल्य आकलित किया जाए तो जीडीपी में करीब 5 फीसदी तक वृद्धि संभव है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि डॉ मनीषा जी ने महिलाओं को शक्ति का प्रतीक बताया। उन्होंने माता को प्रथम शिक्षक बताते हुए कहा कि जीवन प्रबंधन में मां की भूमिका काफी अहम हो जाती है। सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भूमिका का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हम भारत की स्त्रियां काफी भाग्यशाली हैं कि हमारे पास सर्वोच्च राजनैतिक स्थान प्राप्त करने का अवसर है, विश्व के कई विकसित देशों में भी महिलाओं को ये अवसर प्राप्त नहीं हो पाते।

कार्यक्रम में कार्यालय की महिला कर्मिकों ने अपनी प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी सुश्री विनीता श्रीवास्तव जी ने कहा कि जब एक पुरुष शिक्षित होता है तो केवल एक पुरुष शिक्षित होता है, जबकि एक महिला को शिक्षित कर एक संपूर्ण पीढ़ी को शिक्षित किया जा सकता है। उन्होंने सतत विकास लक्ष्यों में नारीशक्ति की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। सुश्री आभा पांडेय एवं छाया श्रीवास्तव जी ने विषयगत कविता पाठ कर समाज में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को इंगित किया।



कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ उपमहालेखाकार महोदय ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सामान्य प्रशासन एवं कल्याण अनुभाग की प्रशंसा की। उन्होंने कार्यालय में महिला कर्मिकों की बढ़ती संख्या एवं कार्यालय के कामकाज में उनके योगदानों पर भी प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन श्री उमाशंकर दूबे 'अनुज' द्वारा किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह

कार्यालय में प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा 73 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। झंडोत्तोलन के पश्चात स्थानीय प्रशासन द्वारा तिरंगे को सलामी भी दी गई। राष्ट्र ध्वज फहराने के उपरांत प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा सरस्वती सभागार स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर विश्व के सबसे बृहद गणतंत्र की स्थापना में उनके योगदान को याद किया गया। तत्पश्चात् दीप प्रज्वलन कर सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत हुई।



सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान सुदर्शन जी एवं उनकी संगीत मंडली ने विभिन्न देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर शमा बांध दिया। श्री सुदर्शन जी द्वारा देशभक्ति धुन पर विशेष तबला वादन आकर्षण का केंद्र रहा। इसके पश्चात प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय में उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा दर्शाने वाले विभिन्न कार्मिकों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उनके कार्यों की प्रशंसा की गई।

अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदय ने सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा राष्ट्र एवं समाज की प्रगति हेतु अपने जिम्मेवारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की बात कही। प्रधान महालेखाकार महोदय ने बताया कि एक विस्तृत



राष्ट्र को सफलतापूर्वक शासित करने हेतु संविधान की भूमिका अहम हो जाती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने गणतंत्र की मूल भावना को केंद्र में रखते हुए 'जनता का शासन' स्थापित किया है। उन्होंने वर्तमान समय में संविधान और विधिक नियमों के प्रति और अधिक निष्ठा एवं अनुपालन सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशासन महोदय द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। महोदय ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सामान्य प्रशासन अनुभाग एवं कल्याण अनुभाग का आभार व्यक्त करते हुए उपस्थित अधिकारी व कर्मचारी गण को धन्यवाद दिया।



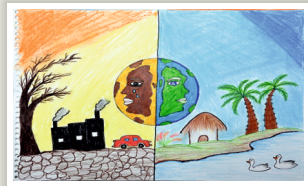
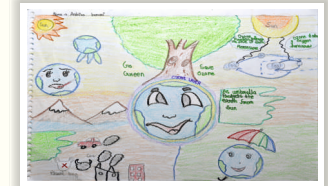
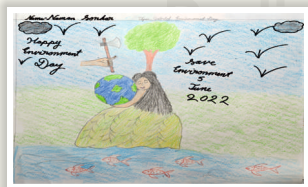
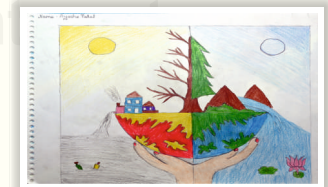
पर्यावरण दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यालय के द्वितीय तल स्थित प्रशिक्षण कक्ष में एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों के बच्चों ने प्रतिभाग किया। 'पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन' विषय पर आयोजित इस प्रतियोगिता में कक्षा 3 से 8 तक के बच्चों ने अपनी अभिव्यक्ति को चित्रित किया। इस अवसर पर वरिष्ठ उप महालेखकार/प्रशासन महोदया ने सभी प्रतिभागियों को उत्साहवर्धन हेतु पेंटिंग किट प्रदान किया। महोदया ने प्रतिभागियों को संबोधित



करते हुए कहा कि पर्यावरण को संरक्षित और संवर्धित करने की जिम्मेदारी हम सभी की है तथा इसमें अपने-अपने स्तर से प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने छोटी उम्र में ही पर्यावरण के प्रति सजग और संवेदनशील होने पर बच्चों की प्रशंसा की, साथ ही समय-समय पर इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाने का आश्वासन भी दिया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।

नन्हे कलाकारों के हाथों से



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस



दिनांक 21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय के प्रथम तल स्थित सरस्वती सभागार में एक योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। सुबह 7 बजे से आयोजित इस योगाभ्यास सत्र में कार्यालय के कई अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। आर्ट ऑफ लिविंग संस्थान से आमंत्रित योग प्रशिक्षक श्री मयंक तिवारी जी ने कार्यालय के काम-काज में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला तथा अनेक योगासनों के माध्यम से कार्मिकों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने का उपाय बताया। इस सत्र में वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/कल्याण महोदय की सक्रिय भागीदारी रही तथा उन्होंने योग को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र के अंत में सभी कार्मिकों ने सफल सत्र के संचालन हेतु आमंत्रित प्रशिक्षक के प्रति आभार व्यक्त किया।



स्वतंत्रता दिवस समारोह



प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा 76 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात स्थानीय प्रशासन द्वारा तिरंगे को सलामी भी दी गई। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। ध्वजारोहण के पश्चात प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण द्वारा सरस्वती सभागार स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया गया। तत्पश्चात दीप प्रज्वलन कर 'भारत @ 75 :



आजादी का अमृत महोत्सव' की थीम पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात कार्यालय में उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा दर्शाने वाले विभिन्न कर्मिकों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उनके कार्यों की प्रशंसा की गई। इस अवसर पर विभिन्न संवर्गों के 100 से ज्यादा अधिकारी व कर्मचारी गण उत्कृष्ट कार्य व कर्तव्यनिष्ठा हेतु प्रमाण पत्र प्राप्त किए।



आजादी के अमृत महोत्सव को केंद्र में रखते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान राष्ट्र के विकास हेतु अनिवार्य तत्वों पर प्रकाश डालते हुए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की भूमिका को रेखांकित किया। प्रधान महालेखाकार महोदय ने बताया कि भारतीय संविधान द्वारा नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को 'सार्वजनिक धन के संरक्षक' की जिम्मेदारी दी गई है एवं यह हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि हम इस विशिष्ट जिम्मेदारी का सम्यक निर्वहन करें।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन महोदय द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। महोदय ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सामान्य प्रशासन अनुभाग एवं कल्याण अनुभाग का आभार व्यक्त करते हुए उपस्थित अधिकारी व कर्मचारी गण को धन्यवाद दिया।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के लखनऊ कार्यालय भ्रमण की कुछ प्रमुख झलकियां



कुम्भ मेला शिविर



कुम्भ मेला-2022 के दौरान मेला क्षेत्र में विभिन्न कल्याणकारी गतिविधियों के संचालन के लिए अस्थायी रूप से एक शिविर कार्यालय स्थापित किया गया। कार्यालय के कर्मचारियों से एकत्र किए गए पुराने कपड़े जरूरतमंद लोगों के बीच वितरित किए गए। कार्यालय द्वारा मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी और माघी पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर जरूरतमंद लोगों को भोजन कराने के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। उपरोक्त के अलावा, कुम्भ मेला-2022 में आने वाले तीर्थयात्रियों के बीच दैनिक आधार पर बिस्कुट के कई पैकेट वितरित किए गए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज की 71वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज की 71 वीं बैठक मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय में दिनांक 12 अप्रैल 2022 को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य आयकर आयुक्त, प्रयागराज के द्वारा की गई। कार्यालय की तरफ से प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय ने उक्त बैठक में भाग लिया। विगत छमाही प्रतिवेदन की समीक्षा के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदय ने निज कार्यालय की पत्रावली में 97.50 प्रतिशत एवं टिप्पणी में 94.50 प्रतिशत की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। साथ ही समिति को यह भरोसा भी दिलाया कि कार्यालय, राजभाषा की प्रगति तथा शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु दृढसंकल्पित है एवं तदनुसार प्रत्येक स्तर पर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को संबोधित करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय ने नराकास से संबंधित अपने पूर्व के अनुभवों को साझा किया। संसदीय समिति के निरीक्षण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि किसी भी कार्यालय में हिंदी के आंकड़ों को सत्यता के साथ रखा जाना चाहिए ताकि निरीक्षण के दौरान विरोधाभास की स्थिति न बने। उन्होंने हिंदी को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक बनाने हेतु 'तरंग' पत्रिका के अगले संस्करण में विभिन्न गतिविधियों को शामिल किए जाने की बात कही। हिंदी के व्यापक प्रसार को देखते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय ने हिंदी को जनमानस की भाषा बताया। राजभाषा मुख्यालय से आमंत्रित प्रतिनिधि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने प्रधान महालेखाकार महोदय के 'क' क्षेत्र से न होते हुए भी हिंदी के प्रति भाषाई प्रेम व दृढ़ इच्छाशक्ति पर हर्ष प्रकट किया।



भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर चुकी है। उन्होंने राजभाषा के प्रसार हेतु कठिन शब्दों के प्रयोग से बचने की आवश्यकता पर भी बल दिया। प्रयागराज को साहित्यकारों की कर्मभूमि बताते हुए अध्यक्ष महोदय ने महाप्राण निराला, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद आदि प्रख्यात साहित्यकारों की अमर कृतियों पर भी प्रकाश डाला। माननीय गृह मंत्री द्वारा हाल ही में दिए गए एक वक्तव्य को रखते हुए अध्यक्ष महोदय ने बताया कि शासन का लक्ष्य है कि आने वाले 10 वर्षों में प्रत्येक कार्यालय में शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किए जाएं, जिसे पूर्ण करने में नराकास की अहम भूमिका रहेगी। कार्यक्रम के अंत में बैठक के सफल आयोजन हेतु श्री मकरध्वज तिवारी जी द्वारा उपस्थित सदस्यगण एवं प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया गया।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री एच. के. तिवारी जी के विशेष आग्रह पर हिंदी के संवर्धन हेतु अध्यक्ष महोदय को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान मुख्य आयकर आयुक्त महोदय ने बताया कि हिंदी अब केवल संपर्क भाषा नहीं रही बल्कि आज एक वैश्विक

उत्तर क्षेत्र फुटबाल प्रतियोगिता

कार्यालय द्वारा 1-3 अप्रैल 2022 के बीच विभागीय उत्तर क्षेत्र फुटबाल प्रतियोगिता का सफल आयोजन स्थानीय राजकीय मुद्रणालय मैदान (गवर्नमेंट प्रेस ग्राउंड) में किया गया। इस प्रतियोगिता में उत्तर क्षेत्र से संबंधित राज्यों दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू एवं कश्मीर तथा मेजबान उत्तर प्रदेश की विभागीय टीमों शामिल रहीं। प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु कार्यालय स्तर से लगभग 50 अधिकारी/कर्मचारी गण को नामित करते हुए कुल 8 समितियों का गठन किया गया, जिसमें आयोजन समिति, क्रय समिति, यातायात प्रबंधन समिति, मैदान प्रबंधन समिति, स्वागत एवं उद्घाटन समिति, प्रेस एवं मीडिया समिति आदि की प्रमुख भूमिका रही।



प्रतियोगिता के पहले दिन उद्घाटन सत्र का आयोजन हुआ, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि मंडलायुक्त प्रयागराज एवं उपायुक्त, प्रयागराज विकास प्राधिकरण शामिल हुए। उद्घाटन सत्र के अवसर पर आयोजक कार्यालय की ओर से प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1), प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-1), महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-11), दोनों कार्यालयों के वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं उपमहालेखाकार गण मंच पर उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यालय द्वारा आमंत्रित

अतिथियों ने कार्यालयी कामकाज के तनाव को दूर करने में खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। मंडलायुक्त महोदय ने कहा कि इस तरह की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन न केवल खिलाड़ियों में बल्कि कार्यालय के समस्त कर्मिकों में नए उत्साह का सृजन करता है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण के उपायुक्त श्री अरविंद कुमार चौहान जी ने कार्यालय द्वारा इस प्रकार के प्रतियोगिता के आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया तथा बताया कि खेल हमें हर विषम परिस्थिति से संघर्ष करते हुए जीतना सिखाता है।



प्रधान महालेखाकार महोदय ने प्रतियोगिता में शामिल हो रहे सभी विभागीय खिलाड़ियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताएं निरंतर आयोजित होती रहनी चाहिए ताकि लेखापरीक्षा कार्यों से इतर कर्मिकों में नई ऊर्जा का संचार हो सके। उन्होंने सभी खिलाड़ियों से मैदान के बीच खेल भावना बनाए रखने तथा जीत-हार की चिंता से रहित अपना बेहतरीन प्रदर्शन करने की उम्मीद जताई। प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यालय में खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा

प्रत्येक खिलाड़ी को 'स्पोर्ट किट' प्रदान किए जाने की भी घोषणा की ताकि वे आगामी प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करते हुए कार्यालय का नाम रौशन कर सकें।

प्रतियोगिता के प्रथम दिन क्रमशः दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं उत्तराखंड तथा जम्मू-कश्मीर एवं मेजबान उत्तर प्रदेश के टीमों के बीच लीग मुकाबले खेले गए जिसमें दिल्ली, पंजाब तथा जम्मू एवं कश्मीर की टीमों ने विजय हासिल की। मेजबान उत्तर प्रदेश की टीम को एक बेहद रोमांचक मुकाबले में जम्मू एवं कश्मीर की टीम से 1-0 के अंक से हार का सामना करना पड़ा। मैच के दौरान हुए एकमात्र आत्मघाती गोल ने मेजबान टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने के सपने पर पानी फेर दिया।



प्रतियोगिता के दूसरे दिन सेमीफाइनल के मुकाबले खेले गए। बतौर मुख्य अतिथि माननीय उच्च न्यायालय, प्रयागराज के न्यायाधीश जस्टिस नीरज तिवारी जी ने खिलाड़ियों को संबोधित किया। मानव जीवन में खेल के बहुआयामी प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि खेल हमें एकजुट रहना सिखाता है तथा यह संदेश देता है कि यदि हम एक टीम की तरह किसी कार्य को संपादित करें तो कार्य अत्यंत आसान व रोचक हो जाता है। सेमीफाइनल के पहले सत्र में दिल्ली का मुकाबला गत चैंपियन हरियाणा से हुआ जिसमें दिल्ली की टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 3-1 से मुकाबला जीतकर फाइनल में प्रवेश किया। इसी दिन हुए दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में जम्मू एवं कश्मीर की टीम ने मुकाबले को एकतरफा बनाते हुए पंजाब की टीम को 4-1 से पराजित कर प्रतियोगिता में विजेता बनने की दावेदारी पेश की।

प्रतियोगिता के अंतिम दिन शाम 3:00 बजे से फाइनल मुकाबले खेले गए, जिसमें जम्मू एवं कश्मीर की टीम दोनों सत्रों में दिल्ली की टीम पर हावी नजर आई। आधा खेल खत्म होने तक जम्मू-कश्मीर की ओर से शाकिर ने दो गोल दागते हुए फाइनल मुकाबले में अपनी टीम को बढ़त दिला दी थी। दूसरे सत्र में दिल्ली की ओर से उबेद ने एक मात्र गोल कर वापसी की कोशिश जरूर की लेकिन शाकिर ने दो अन्य गोल दागकर जम्मू एवं कश्मीर की विभागीय टीम को जीत के करीब ला खड़ा किया। मुकाबले के अंत में बेहतरीन खेल दिखाते हुए जम्मू एवं कश्मीर की विभागीय टीम 4-1 से जीत दर्ज कर उत्तर क्षेत्र फुटबॉल प्रतियोगिता



की इस वर्ष की विजेता बनी जीत के बाद विजयी टीम के खिलाड़ियों ने नतमस्तक होकर अभिवादन स्वीकार किया तथा पुरस्कार वितरण समारोह में शामिल हुए। विजेता टीम के कप्तान श्री शाहनवाज बसीर को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-प्रथम) महोदय ने टीम की सफलता पर बधाई दी तथा बेहतर खेल भावना के प्रदर्शन के लिए खिलाड़ियों की प्रशंसा की। उपविजेता टीम के

कप्तान श्री कुल भूषण को पदक व प्रमाण पत्र देते हुए महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-द्वितीय) महोदय ने उन्हें अगले वर्ष और ज्यादा मेहनत के साथ प्रतियोगिता में सम्मिलित होने की शुभकामनाएं दी। जम्मू एवं कश्मीर टीम के खिलाड़ी अमनजोत सिंह को 'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी', उसी टीम के शाकिर अली को 'सर्वाधिक गोल करने वाले खिलाड़ी' तथा हरियाणा के रविंद्र कुमार को 'सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर' का खिताब दिया गया।



प्रतियोगिता के दौरान प्रयागराज के ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ खिलाड़ियों को कार्यालय की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इनमें श्री प्रेम चंद्रा (लेखापरीक्षा-1), श्री प्रेम भूटानी (लेखापरीक्षा-1), श्री हार्डी डेविड (सीमा शुल्क एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग), श्री सोमनाथ चंद्रा (लेखापरीक्षा-1), मो. जलालुद्दीन (डाक एवं टेलीग्राफ विभाग), श्री ओमप्रकाश पंजाबी (सीमा शुल्क एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग) तथा श्री किशोर रामचंद्र (रेलवे) शामिल थे। इन सभी वरिष्ठ खिलाड़ियों ने अपने कार्यकाल के दौरान

विभिन्न राष्ट्रीय एवं प्रांतीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर कई पदक अपने नाम किए हैं, जिनमें प्रतिष्ठित रोवर्स कप, डूरंड कप, राष्ट्रीय चैंपियनशिप आदि प्रतियोगिताएं प्रमुख हैं। पूर्व खिलाड़ियों ने इस सम्मान के लिए आयोजन समिति को धन्यवाद दिया तथा कार्यालय में खेल भावना को निरंतर प्रोत्साहित करने हेतु प्रधान महालेखाकार महोदय के प्रति विशेष आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के समापन समारोह में वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन महोदय ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु आयोजन समिति के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रतियोगिता के लिए कई समर्पित अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया गया, जो प्रशंसनीय है। उन्होंने प्रतियोगिता हेतु आयोजक के रूप चयन किए जाने पर मुख्यालय का भी



आभार व्यक्त किया

तथा आशा किया कि हम आगे भी इस प्रकार के विभागीय प्रतियोगिताओं का आयोजन सफलतापूर्वक करते रहेंगे। इस अवसर पर उन्होंने कार्यालय के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, प्रतियोगिता में सम्मिलित सभी खिलाड़ियों एवं सहयोगी स्टाफ, प्रतियोगिता को प्रसारित कर रहे मीडिया बंधुओं, जिला प्रशासन तथा चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराने हेतु चिकित्सा विभाग के प्रति भी आभार व्यक्त किया।



कार्यालयी सुविधाओं में नवीन आयाम सरस्वती सभागार का सौंदर्यीकरण



कार्यालय के संगोष्ठी हॉल का नवीनीकरण किया गया तथा इसकी उपयोगिता के दृष्टिगत इसका नाम बदलकर 'सरस्वती सभागार' किया गया। सभागार की दीवारों को प्रयागराज एवं उत्तर प्रदेश से जुड़े हिंदी साहित्य के ख्यातिप्राप्त लेखकों के साहित्यिक कार्यों का संक्षिप्त विवरण दर्शाते हुये उनके स्मृति चित्रों से सजाया गया है।

कार्यालय के गलियारों का सौंदर्यीकरण



उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यालय के गलियारों एवं आंतरिक दीवारों को प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के पोस्टरों से सजाया गया। दीवारों पर लगे पोस्टर प्रदेश के विविध सांस्कृतिक पहलुओं को उद्घाटित कर रहे हैं।

साइकिल हेतु ग्रीन स्टैंड



कार्यालय द्वारा एक उत्कृष्ट एवं स्वस्थ पहल 'पैडल टू वर्क चैलेंज' को अपनाया गया तथा स्वस्थ जीवन शैली और जागरूकता हेतु कर्मचारियों के बीच साइकिल चलाने को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यालय परिसर में एक समर्पित साइकिल स्टैंड (ग्रीन स्टैंड) स्थापित किया गया।

आकर्षक फ्लावर पॉट स्टैंड

पुराने व टूटे हुये लकड़ी के फर्नीचर को हरित उद्देश्य से उपयोगी सामानों, जैसे फ्लावर पॉट स्टैंड में पुनर्नवीनीकरण किया गया। ये गमले कार्यालय के कार्मिकों एवं आगंतुकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने रहे।



व्यायामशाला का नवीनीकरण



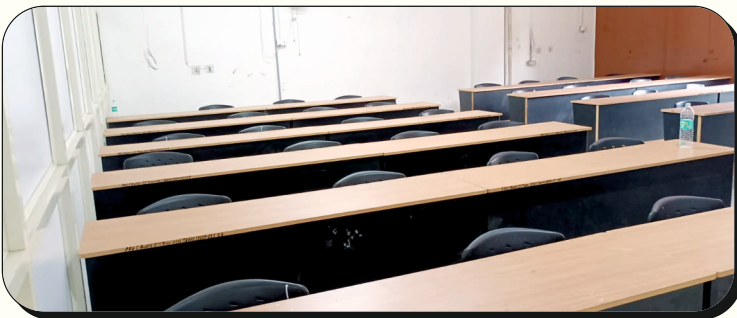
कार्यालय के कार्मिकों में नई ऊर्जा भरने तथा उनके जीवन में नियमित शारीरिक गतिविधि को शामिल करने के उद्देश्य से कार्यालय परिसर में एक नयी व्यायामशाला स्थापित की गई तथा इसमें कई नए उपकरणों का समावेश किया गया।

महिला कार्मिकों हेतु कॉमन रूम



कार्यालय के 7वें तल पर कुछ आवश्यक सुविधाओं के साथ 'लेडीज कॉमन रूम' के रूप में महिला कर्मचारियों के लिए एक समर्पित कक्ष स्थापित किया गया।

नवीन प्रशिक्षण कक्ष



कार्यालय के द्वितीय तल पर कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु समर्पित एक 'प्रशिक्षण कक्ष' स्थापित किया गया। इस प्रशिक्षण कक्ष का उपयोग कार्मिकों को आंतरिक प्रशिक्षण (इन हाउस ट्रेनिंग) प्रदान करने के उद्देश्य से किया जा सकता है।

नवीन शिशु गृह (क्रेच) का आरंभ



महिला कार्मिकों के कार्यालयी एवं पारिवारिक दायित्वों के सुखद एवं सफल निर्वहन हेतु कार्यालय के प्रथम तल पर एक शिशु गृह स्थापित किया गया। इस शिशु गृह को रंगीन पर्दों तथा आकर्षक वाल पेपर्स से सजाते हुये इसमें बच्चों के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं जैसे टेलीविज़न, वाटर प्योरिफायर, खिलौने, बंकर बेड आदि की व्यवस्था की गयी है।

नवीन पुस्तकालय



प्रधान महालेखाकार महोदय के विशेष निर्देशन में कार्यालय के कार्मिकों में पठन के प्रति रुचि स्थापित करने के उद्देश्य से कार्यालय के प्रवेश हाल में एक खुला पुस्तकालय स्थापित किया गया। इस पुस्तकालय का उपयोग कार्मिकों द्वारा मध्याह्न भोजन अवकाश के दौरान एवं कार्यालय अवधि के पूर्व अथवा पश्चात किया जा सकता है।

सेवानिवृत्ति

सितम्बर, 2021 से जुलाई, 2022 के बीच सेवानिवृत्ति होने वाले अधिकारी / कर्मचारीगण

कार्यालय आपकी सत्यनिष्ठ सेवा एवं मार्गदर्शन की सदाहना कटते हुए
सेवानिवृत्ति के पश्चात आपके स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन की
मंगल कामना करता है।

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/सुश्री	पदनाम	सेवानिवृत्ति होने का माह
1.	जी.के. श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	सितम्बर, 2021
2.	समीर कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	सितम्बर, 2021
3.	विजय शंकर चौरसिया	स.ले.प.अ.	सितम्बर, 2021
4.	शमीम	बेयरर	अक्टूबर, 2021
5.	रवीन्द्र नाथ	व.ले.प.अ.	अक्टूबर, 2021
6.	जग प्रसाद मिश्रा	स.ले.प.अ.	दिसम्बर, 2021
7.	अबुजेर बेग	स.ले.प.अ.	दिसम्बर, 2021
8.	मनोज कुमार श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	दिसम्बर, 2021
9.	आशा देवी	एम.टी.एस.	दिसम्बर, 2021
10.	राम मंगल नंदनवार	व.ले.प.अ.	दिसम्बर, 2021
11.	अल्ताफ अली	व.ले.प.अ.	दिसम्बर, 2021
12.	सतीश कुमार राम	एम.टी.एस.	दिसम्बर, 2021
13.	गोपाल	स.ले.प.अ.	जनवरी, 2022
14.	किरण श्रीवास्तव	लिपिक	मार्च, 2022
15.	कल्पना सचान	स.ले.प.अ.	अप्रैल, 2022
16.	कुमारी मंजु मिश्रा	सहा.पर्य.	मई, 2022
17.	केशव राम	स.ले.प.अ.	मई, 2022
18.	राजेन्द्र पाल सिंह	स.ले.प.अ.	जून, 2022
19.	विवेक शील	व. लेखापरीक्षक	जून, 2022
20.	धीरेन्द्र राय	स.ले.प.अ.	जुलाई, 2022
21.	एस.बी. पाण्डेय	स.ले.प.अ.	जुलाई, 2022
22.	अल्पना मुखर्जी	व. लेखापरीक्षक	जुलाई, 2022
23.	रमेश चन्द्र	एम.टी.एस.	जुलाई, 2022

स्मृतिशेष

कार्यालय अपने प्रियजनों के अक्षामयिक निधन से शोकाकुल है।
हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को
अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

क्रम सं.	नाम (स्वर्गीय)	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	मृत्यु तिथि
1.	राजेन्द्र कुमार	वरि. ले. प. अधिकारी	UPALA/3231205	06.04.2021
2.	उमा प्रसाद भट्टाचार्या	व्यक्तिगत सहायक	UPALA/3231371	09.04.2021
3.	मनीष मालवीय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	UPALA/3231344	10.04.2021
4.	आलोक	सहायक पर्यवेक्षक	UPALA/3231161	14.04.2021
5.	मंजुला श्रीवास्तव	वरिष्ठ निजी सचिव	UPALA/3231368	21.04.2021
6.	शेषाद्री शंकर पाण्डेय	सहा. ले. प. अधिकारी	UPALA/3231334	23.04.2021
7.	गणेश शंकर श्रीवास्तव	सहा. ले. प. अधिकारी	UPALA/3231843	12.05.2021
8.	राम जौहरी	वरि. ले. प. अधिकारी	UPALV/3230478	04.07.2021
9.	गणेश	सहायक हलवाई	UPALA/3231639	15.07.2021
10.	दीपक कुमार चौरसिया	एम.टी.एस.	UPALA/3232062	05.08.2021
11.	गोविन्द	एम.टी.एस.	UPALA/3231634	20.08.2021
12.	प्रतिभा देवी	सहा. ले. प. अधिकारी	5012251	30.12.2021
13.	संजीव कुमार जायसवाल	लिपिक	UPALA/3231882	10.07.2022
14.	राहुल उपाध्याय	स.ले.प.अ.	UPALA/3231901	18.08.2022

“सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से
विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है।”

- अमरनाथ झा

पाठकों के पत्र

दूरभाष Telephone-2223251
2225766, 2224812



फैक्स/Fax 0612-2225977
तार ACCOUNTS
Tele Gram

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हि.अ./ले. व ह./02/प.प्र./2021-22/171
दिनांक 14/02/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-1),
सत्यनिष्ठा भवन, 15ए,
महर्षि दयानंद मार्ग, इलाहाबाद-1

विषय :-वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139वें-140वें संयुक्तांक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक-592 दिनांक 13/01/2022 के द्वारा वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139-140वें संयुक्तांक की एक प्रति सन्मन्वद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, अंतर्गत सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

14.02.2022

हिंदी अधिकारी
(हिन्दी कक्षा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश
लेखा भवन, झांसी रोड, खालिचर-474002



क्रमांक: प्रशासन/हिंदी/अभिमता/का.सं.-47/D-747

दिनांक: 15-07-2012

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

विषय :-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139वें-140वें संयुक्तांक की पावती एवं अभिमता।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139वें-140वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका साहित्यिक, सामाजिक एवं समसामयिक विषयों पर आधारित रचनाओं से सुसज्जित है। इसमें समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। जीवन दर्शन को स्पर्श करती श्री अम्बरीश श्रीवास्तव की कविता 'एक कम खुशनुमा कविता', अतीत की स्मृति को ताजा करते श्री उमाशंकर दुबे द्वारा रचित 'संस्मरण' परीक्षा और बचपन तथा भविष्य की समस्याओं को चित्रित करती श्री सिद्धार्थ शंकर की रचना 'ईधन का संकट' बहुत अच्छे लगे।

पत्रिका के इस अंक के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी की दशा एवं दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति होगी।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

14/2/2022
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन

हिन्दी केवल भाषा नहीं है, यह भावों की अभिव्यक्ति भी है।



कार्यालय प्र. महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB & U.T.
CHANDIGARH-160017

फोन : 0172-2702174, फैक्स 0172-2703110

क्रमांक:-हिन्दी कक्षा/समीक्षा/2021-22/428

दिनांक:-21.02.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम),
इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश-211017

विषय-विभागीय पत्रिका 'तरंग' के 139-140वें संयुक्तांक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'तरंग' का वर्तमान अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्री उमाशंकर दुबे 'अनुज' का लेख 'परीक्षा और बचपन' अत्यंत हास्यात्मक प्रकृति को संज्ञा देते हुए मन-मस्तिष्क को तरोताजा स्थिति में स्थापित करने वाला है। इसके साथ ही इन्हीं का अन्य लेख 'गाँव से शहर की ओर', भी प्रशंसा का पात्र है। श्री ब्रजेश कुमार सिंह की 'अब तो आ जाओ...' कविता श्रृंगार रस से ओतप्रोत एक सराहनीय कृति है। इसके अतिरिक्त श्री विनय कुमार गुप्ता की 'चलो कुछ नया हो जाए', श्रीमती सुमिता चटर्जी की 'मेरी माँ' कविताओं में चयनित शब्दों की प्रशंसा होना से अनिवार्य भाव से बहने को विवश है।

श्री डॉ. श्लेष गौतम की कविता 'भोर है ये बेटीयाँ' नारी शक्ति का सार्थक भाषा सौंदर्यता के साथ समर्पण करती है। श्री अशोक कुमार सिंह की 'बेटा गया संभ्रम पर' परदेश प्रेम में पतित होती सामाजिक जिम्मेदारियों का प्रतिबिंब है। श्री विनोद कुमार सिंह की 'अब तो आ जाओ...' कविता श्रृंगार रस से ओतप्रोत एक सराहनीय कृति है। इसके अतिरिक्त श्री विनय कुमार गुप्ता की 'चलो कुछ नया हो जाए', श्रीमती सुमिता चटर्जी की 'मेरी माँ' कविताओं में चयनित शब्दों की प्रशंसा होना से अनिवार्य भाव से बहने को विवश है।

पत्रिका को समर्पित श्री उमाशंकर दुबे 'अनुज' का अतुलनीय योगदान पत्रिका को चार चौद लंगाने का कार्य करता है।

पत्रिका को सुरक्षित एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

21.02.2022

हिंदी अधिकारी



संख्या हि.अ./ले.प./प्रतिभाव/37/21-22/233
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
'सत्यनिष्ठा भवन' 15-ए, महर्षि दयानंद मार्ग, इलाहाबाद-211001

दिनांक/Date : 02-02-2022

विषय-अर्द्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139वें-140वें संयुक्तांक का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्द्ध वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139 वें-140वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई, एतद्वय बधाई। 'तरंग' के इस संयुक्तांक में साहित्य की विविध विधाओं-कविता, कहानी, यात्रा संस्मरण, आलेख आदि-में सृजित स्तरीय रचनाओं को संकलित किया गया है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ वाराणसी में नवनिर्मित काशी विश्वनाथ कॉरिडोर पर केंद्रित है, जो भारतीय स्थापत्य कला की उत्कृष्टता का परिचायक है।

ईधन संकट की चुनौतियों से निपटने हेतु नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की उपयोगिता और संरक्षण पर केंद्रित श्री सिद्धार्थ शंकर रचित 'ईधन का संकट', मनोविकार के कारण उत्पन्न होने वाली कुंठा और अवसाद पर केंद्रित श्री ब्रजेश कुमार सिंह रचित 'क्या करें? एक विकार', महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता और इस हेतु अपेक्षित उपायों पर केंद्रित सुश्री ईशा कुशवाहा रचित 'महिला सशक्तिकरण' प्रयागराज नगर के ऐतिहासिक महल और वर्तमान में इसके समुच्च विकराल हो रही प्रदूषण की समस्या पर केंद्रित श्री गणेश शंकर निषाद रचित प्रयाग राज का समय और हवा तथा प्राकृतिक सुंदरता के लिए विख्यात सिक्रिम प्लांट में अवस्थित मनोहारी गुरुद्वारमर झील पर केंद्रित श्री अनन्त कुमार त्रिपाठी रचित 'मेरी गुरुद्वारमर झील की यात्रा' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने में 'तरंग' ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। इसका भविष्य और उज्ज्वल हो, इसी कामना के साथ समस्त सम्पादकीय मण्डल और पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं !

भवदीय

14/2/2022
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी

दूरभाष/Phone : 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283
फैक्स/Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/E-mail-agaubihar@cag.gov.in

ई.बी.ए.सी.एल./EPABX-2223757, 2228320
पो. बॉक्स/P.B.No.-47

पाठकों के पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
म.प्र. 53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462011

क्रमांक/हिंदी कक्ष/जावक-34 दिनांक-02/02/2022

प्रति,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
'सत्यनिष्ठा' भवन 15 -ए, महर्षि दयानन्द मार्ग,
इलाहाबाद-1 उत्तर प्रदेश

विषय: पत्रिका 'तरंग' के 139-140 संयुक्तांक की प्रेषित की पावती बाबत।

महोदय,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'तरंग' के 139-140वें संयुक्तांक की प्रतिलिपि भेजी जा रही है। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर वेदिका, बेटा गया समुंदर पार, कोरोना और हम, महिला सशक्तिकरण, कोरोना-महामारी, टी.एल.श्रीवास्तव का साहित्य-चिंतन सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
ODISHA, BHUBANESWAR

सं.-हि.प्रको./पावती (141/2021-221/415 दिनांक-24.03.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (ले.प्र.-1),
महर्षि दयानंद मार्ग,
इलाहाबाद-1

विषय : हिन्दी पत्रिका 'तरंग' के 139-140वें संयुक्तांक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'तरंग' के 139-140वें संयुक्तांक की प्रतिलिपि भेजी जा रही है। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का मुख्य एवं अंतिम आवरण पृष्ठ अति आकर्षक है। पत्रिका की रचनाओं का संकलन अत्यंत ही उत्कृष्ट कोटि का है। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना सराहनीय है। पत्रिका की रचनाएं पठनीय एवं संतुष्टिदायक हैं। विशेषकर 'हिंदी', 'विद्यमना', 'आज का विषय' एवं 'उमर हम आदमी होते' जैसी रचनाएं रचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और मनमोहक बनाते हैं।

पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफोन : 044-24324530 फैक्स : 044-24320562
Website : www.agae.in,nic.in

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562
Website : www.agae.in,nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिज्यू/13956/17 दिनांक 06/07/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
सत्यनिष्ठ भवन 15ए, महर्षि दयानंद मार्ग
उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

To,
Senior Audit Officer/Hindi
Office of the P.A. Accountant General (Audit)-I,
Satyanishtha Bhawan
15A, Maharsi Dayanand Marg
Uttar Pradesh, Allahabad

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका 'तरंग' का 139-140 वें संयुक्तांक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'तरंग' का 139-140वां संयुक्तांक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्तर्ण प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित श्री अजय वर्मा का 'अखिर ऐसी जड़ता क्यों?', डॉ. श्लेष गौतम की कविता 'हिंदी', श्री उमाशंकर दूबे 'परीक्षा और वचन', सुश्री सुनीता देवी का 'कोरोना और हम' और श्री विनय कुमार गुप्ता का 'आज का विषय' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सुजनत्वक संव प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)
का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E)
KARNATAKA
Indian Audit & Accounts Department

सं.प्र.म.ले.(ले.ज.ह./हि.क./पा.प्र./2021-22/179 दिनांक : 09.02.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम),
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज-211001

विषय-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका ' तरंग ' के 139वें-140वें संयुक्तांक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तरंग' के 139वें-140वें संयुक्तांक की एक प्रतिलिपि भेजी जा रही है। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। मित्र, 'कोरोना महामारी', 'गर्व से शहर की ओर', 'एक कम खुशनुमा कविता', आदि रचनाएं रचिकर एवं सराहनीय हैं। नही बल्कि संतुष्टिदायक भी हैं। अन्य सभी रचनाएं भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

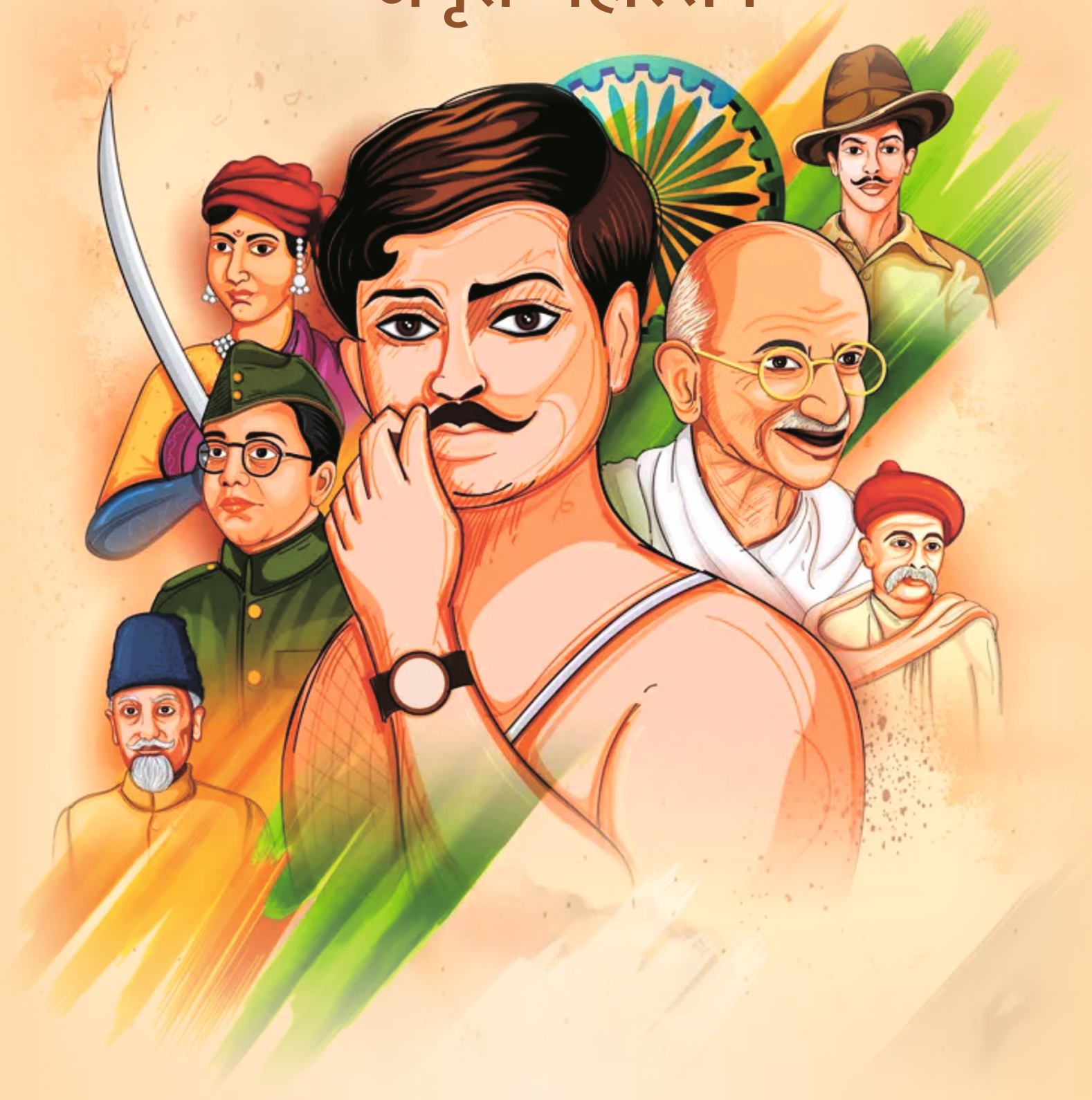
सधन्यवाद !

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/मा.सं.वि.

डाक थैली संख्या : 5329/5369, पार्क हाउस रोड, बैंगलूर-560 001, कर्नाटक : 080-22379335 फैक्स : 080-22264691
P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BANGALORE-560 001, Tel : 080-22379335 Fax : 080-22264691



आज़ादी का अमृत महोत्सव



प्रकाशक :
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

मुद्रक :
श्रद्धा इण्टरप्राइजेज
255-ए चक, जीरो रोड, प्रयागराज
मो.: 9415231308, 9305562491

